बलचनमा

(मैथिली)

मूल लेखक
ना गा र्जु न

मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कलकत्ता

प्रकाशक :
मिथिला सांस्कृतिक परिषद्
पंजीकृत कार्यालय :
१०, बालमुकुन्द मक्कर रोड,
कलकत्ता-७

विद्यापति-स्मृति-समारोह १९६६-६७

दाम : ४) टाका

प्रथम संस्करण : ११००
५, फरवरी, १९६७

घटना समय : १९३७ ई० क शुरू तक

मुद्रक :
कुमार प्रिंटर्स
५बी, तुकाराम बाबू स्ट्रीट,
कलकत्ता-७

१

जखनी हम चौदह बरखक रही तखनिये हमर बाप मरि गेल। परिवार मे माइ, दाइ आ छोटकी बहिन छलि। एकटा छोट-छीन घर छल। घरक अगुआति में नान्हिटा आंगन छलै, बामा कात आठ-दस धुर बारी छल। ओहि बारी मे भरि साल किछु ने किछु उपजा होइते रहै। बारीक पाछू मे गिरहथक इनार छलनि, आ इनारक सोंझा मे खेत। दहिना कात कनिके हटि कऽ हुनके लोकनिक पोखरि सेहो छलनि।

गिरहथक जमीन मे बसल छली। हमरा अपना जिनगीक सबसँ पहिलुक बात एखनियो धरि कनी-कनी मोने हवे। मालिकक दुरा पर हमरा बाबू कें एकटा खम्हेली लगाकऽ बान्हि देले रहै। एँड़ी सँ सिखा धरि कोंच करची सँ फोड़ि देले रहै। कतौ-कतौ देहक खाल नोचा गेलै, मारिक चोट सँ। आँखि सँ नोर टप-टप बहिकऽ गाल आ छाती होइत नीचा बहल जाइत छलै। सौंसे देह कारी मलीह भऽ गेलै हमरा बाबूक! थोरबे दूर पर छोटका मालिक चौकी पर जमराज नाहित बैसल रहथिन आ दहिना हाथ सँ मोंछ फेरैत रहथि। हुनकर लाल-लाल पसल-पसल आँखि देखिकऽ केकरा ने डर हो जेतै। हमर दाइ थर-थर कँपैत मालिकक पएर पकड़ने छलै। आ बकारि होइत छल, मालिक यौ......मालिक......छोड़ि दियौ यौ मालिक......... लगुआक प्रान छूटि जेतै औ मालिक दोहाइ

सरकार कें·········अँहीं माई बाप छी, छोड़ि दियौ। माय के कात ·
कनैत देखि हमहुँ सुकुर-सुकुर कानेऽ लगली। हमरा छोटकी बहिनक त
डरे प्राने सूखि गेलै।

कनीकालक बाद बुझलियै जे हमर बाबू मालिकक गाछ सँ दूटा बिजुन
भोग आम तोड़ि लेने रहै। कौंचो किशुनभोग खाय मे चौरठ माहित ब
नीमन लगै छै। आम तोड़ैत कियो ने देखने रहै, बाबू बखाड़ी के दोग
आम नोड़ैत रहै तखनियै कियो देखि लेलकै आ चुगली लगा देलै। ए
बात पर मझिला मालिक तानले आगि भऽ गेलखिन आ·········।

हमर बाबू मरि गेल। दाइ कें चौठइया जर धयने रहै। किछु मालिक
सँ लऽकऽ आ किछु इमहर-उमहर सँ मांगि-चांगि कहुना किरिया-करम भ
गेलै। हमरा गरदनिक खतरी कहुना टूटल। माइ आ दाइ दुनू गोटे
विचार केलै जे कोनो मालिकक ओही मे हम चरवाही करी। दाइ नइ मानै
ओ कहै एखनियै सँ काम मे जोति देबही तऽ करेज टूटि जेतै। मुदा माय
कहलकै—एखनियै सँ घरक काज-फिकिर नइ करतै तऽ अवारा माहि
करत।

किछुए दिनक बाद हम छोटका मालिकक महिंसक चरवाही करे गेली।
छोटकी मलिकाइन कें हमरा रखबाक कनिको विचार नइ छलनि, ओ घर मे
ठठवज्जर कऽ देलखिन। हमरा देखिते कऽ ओ हाकरोस करऽ लगलखिन
ई तऽ बखाड़ी छूनह कऽ देत। अकादारुन पेट छै एकर छौंड़ाक। डेढ़ सेर
दिन मे खैत आ डेढ़ सेर राति मे। साँसे देह छौंड़ा के पेटे छै। पेट है
की कोठि से नहि जानि। मैए गे·····मैए·········।

हमर दाइ हमरा दिस दुलार सँ ताकि कऽ मलकाइन के कहऽ लगलनि—
से नहि कहिऔ मलिकाइन। हमर बलचनमा बड़ कम खाइये, रोटी, मकई,

…दो, साग, काउन जे देवै खा लेत। खेबा-पीबा मे कनिको बखेड़िया
रहवे।

हम एकटा चिल्ठी पहिरने रही। चिल्ठी दिस तकैत मलिकाइन
कहैलखिन—आ·········देख, कपड़ा-लपड़ा हम ने देबै। ई सुनिकऽ दाइ
मर हँसऽ लागलि।

अइपर दाइ कहलकैन—अहाँ नइ देबइ तऽ के देतइ? अहीं बाउर के
मुँह-जूठ खा कए, अहीं बाउर के फेरन-फारन पेन्हि के हम सब अपन
जनगी गुदस्त करइ छी। जन देवइ आहाँ त पोन कांपऽ खातीर सूत बनतऽ
कतऽ सँ अउतइ?

अइपर मलिकाइनक आँखि-मुँह चमकऽ लगलैन। दाँत दलुफक फूल, ठोर
तलकोइक पाकल फड़—लगो, बड़ सुन्नरि रहथिन मलिकाइन!

एकहक आङुर कें चिबा-चिबा कऽ बजलीह—खायक दिअउन, धड़िया
धोती दिअउन, ऊपर सँ दुअन्नी! बापरे! एते के देतइ? सभ टा काज
सिखाबक पड़त, दुकबइत-दुकबइत मगज चाटनि भ जेत!

दादी फेनू मलिकाइन के पैर धऽ लेलकइन आ बाजलि—थाइ सँ अहीं
बलचनमाक माए-बाप भेलिअइ! अहींक अइँठ खा कऽ एकर दिन घुरतइ
महतमाइन!

तकरा बिहाने सँ हुनका ओइठाँ हम काज करऽ लगली। ओना रहिअइन
तऽ भइँसिक चरवाह, मुदा आनो कते तरहक काज कऽ दिअइन। नेनाकें
टगने रहिअइन, पानि आनि दिअइन भरिकऽ, दोकान सँ नोन, कड़ू तेल,
मशाला सुना दिअइन, जोति देहो दिअइन।

मालिकलोकनिक ई घरैना कोनो जमाना मे बड़ पैघ रहइन। आब जमी-
न्दारी तऽ कम्मे सन छलइन, मुदा बाजब-भूकब उएह। माल जाल चारि पट्ठी

मे बाँटल । हवेली सेँ फराक-फराक । गाछी-बिरछी, बँसबारि, कलम, खढ़ोरि, पोखरि, परती-परात—एतबा धरि साझिए रहइन ।

छोटजन मालिक कहुँ मनेजरी करइत रहइथ । मलिकाइन बड़का घरक बेटी । हुनका लेखे बिना दूध-दहीक खेनाइ आ गोबर थापब मिझनाइ एक्के बात । से, ई गुजराती महींस दू साए मे ओ मङबने रहथि । तेहन तेहन त होइक नहि, आ पाड़ी गेल रहइ मरि । तेँ बिसुकिये गेल रहइ । पुहादरक हाड़ झक झक करइ । चरबाह पड़ा क कटिहार चल गेल छलइन । तखन कोनो दुसाध रहल । ओकरा एकटा गोआरिन सँ हेम-छेम भऽ गेलइ । पकरल गेल त बड्डमारि लगलइ । मझिला मालिक बड़ला देलथीन ।

आब तेसर चरबाह रहिअइन हम ।

अन्हरोखे महींस खोलि दिअइ । पीठ पर पड़ि रहिअइन ।

पहुँची मेँ सोहरिक झोर लपेटि ली । भूत-परेत त सइयें महींस लग आबए नइ ; तहन खेतक फसिल चरि जाइ त अलबत्त । चरबाह केँ एकरे डर, आन कथूक डर नहि । मुदा हम जे चरबाही केलौं से नाम रहइ जेठक । बाध-बोन खाली । चित भऽ कऽ महिंसिक पीठ पर पड़ि रही, ओ अपन मुँह मारने रहए ।

किछुए दिन भेल हेतइ कि ओ हमरा चीन्हऽ लागल । अइ सँ पहिने माए, दादी आर रेबनी, इएह तीन गोटे हमर अपन रहए । आब महिसिओ हमरा लेखे अपन समाङ भऽ गेल । लाल-लाल पैंच-पैंच ओकर आँखि, भफजहा साँस तइखन हमरा बिसरल नइ अइछ ।

भैंसी चरा आबी त बासि भात खाइ, कहियो कहिओ एक कप चाउर भेटए त सएह भिजा क फाँकी । कहियो अन-बड़िअनाएल मड़ुआ, की खुदीक रोटी पकइ तऽ तही मे सँ तोड़ि क आधा चाहे एक कोन हमरो परि लागए ।

तखन बुलुर केँ कोरा लिअइन । दुचकड़ रहथीन, से बड़ खिसिआह । तेना केँ भम्होड़थि जे की कहिअइ ! मलिकाइन केर दू टा नेना मरि गेल रहइन, ई तेसर कोरा मे रहथिन । आब चारिम हेबा लए रहइन । नहिराक एकटा दुलरुआ खबासिनी रहइन से तकरो जेना हम बहिए रही । बाँहि दर्द करऽ लागए तऽ हम बुलुर केँ लऽ जाऽ कऽ ओसारा पर बइसा दीअइन आ बलान दिस चल आबी ।

कारक डरेँ छौंड़ कइरया औड़िआ !—मलिकाइन चिचिआइथि, आ से अही काने हम सूनी । बइगने तऽ काज चलनिहार नहि ! खुरपी आ छिट्टा लऽ कऽ घास करए बहराइ । बइसकवा खरमन्डल । आरि-धुर थऽ थऽ थऽ थऽ जरइत । भरि बाध ओन्हराइ तखन जाऽ कऽ पथिआ-आध पथिया घास । घूरी तऽ आबऽ मे कोनो दिन बड़ बेरी भऽ जाए । तहिआ गिरहथनी ललकि उठथि जे नार जनिपिट्टा केँ ! कतऽ निखत्तर चल गेल रहएँ ? कोन ठाँ बइसि केँ कोन आपक संगे कलछी भजइ छले हएँ ?

कहिओ कहिओ चारि चटकन भइओ दइथ । तइ दिन बेरिआ धरि कनपट्टी लहरए……

खुसी रहथि त सुखाएल-टटाएल पकमान, अमरूत आर पिलुआहा आम, कुकड़ी लागल बड़ी, मासुक तेबाहि कोर भेटए । तइ पर कहइथ की तऽ एहेन बस्तु तोहर एकइस पुरखा नइ देखने हेतउ ! बुझलहू !

नइहर सँ भार-दोर बरोबरि अबइन । खगता कथूक नइ, तइओ मालिक परदेस ओगरने रहथि । बङ्क मे जमा करइथ । आसरम छोट आ खर्च नापल-जोखल । गहना-गुड़िआ बर्तन-बासन, नूआ-बस्तर, रेसम-पटोर सँ चारि टा बाकस भरल छलइन, तइओ नहा-सोनाक बीच आंगन मे ठाढ़ि भऽ कऽ मलि-काइन नित्तह दीनानाथ-दिनकर सँ धन-बीत मङ्थीन्ह ।

महींस हम नीक सँ चराबी। गाछी मे, जगह-जगह गामक चरवाह सभक झुटान होइ। हमहू आइ मण्डली मे बेसी दिन धरि अनसुआर नइ रहलहुँ। एक्के बतारीक तऽ लोक चरवाही करइत रहए। अढ़ाए पहर राति मे जे महींस खोलिअइन से एक्के बेर मुन्हारि साँझ कऽ अबिअइन। अपन-अपन दुख बिसरि जाइ, आ खूब खेलाइ हमरा आउर। कउखन कउड़ी, कउखन तास-घरा, कउखन कबड्डी कखनो बाघगोटी आ गोगलण्डान, कखनो कलम मे गाछ पर चढ़ि कऽ डोल-पाती......छिलिम छिलिम केर खेल हमरा आउर खेलाइ। गोल बान्हि कऽ बइसी, सबूरी कका बड़की टटा खिस्सा कहए, कान पाथि कऽ से सुनइत जाइ। चर-चाँचर सँ डिमउर-कउहर-साइल उपाड़ि अनइत जाइ, से तोड़ि सोड़ि कऽ खाइ। बनखीक आगि मे हरका कऽ अल्हुइ माछ पकाबी त कहियो भोग लगाबी कहिआ-कहिओ। भरि गामक बाबू-भइया लोकनि केर अदगोइ-बदगोइ हमरा आउर करिअइन। नीक-अधलाह सब कथुक चर्चा होइ।

सबूरी रहइथ नाटे, आँखिक कानुक। कान दुनू उनच रहइन, कपार छोट। आँखि बेस तेज हुदा मसक। अपना मालक सेवा ओ खूब मान लगाकँ करइथ। चरवाह सब हुनका अपन पित्ती-पितामह जकाँ मानइन। मड़इ कहिआ कोना भैंसी के मारने होइथीन, से हमरा लोकनि कें कहाँ देखल, हुनका भैंसीक आँखि मे कहिओ केओ कानी नइ देखने हेतइन। भरि छाबा पानि मे ठाढ़ कऽ कऽ दूभिक नूड़ी सँ ओ महिसीक पोड़-पेट मलइथ।

एक दिन हम दुपहरिआ कँ सबूरी ककाक ओतए गेलहुँ। बड़का मालिकक बथान बेस पैघ रहैन। सोलह टा बड़द आ चारि टा भैंस। तकरा लए तीन गो चरवाइ। बूढ़ा ठामहि एकचारी मे रहइ छला। देखलिअइन हुक्का गुड़गुड़बै छथि हमरा [illegible] छोटकी नारिकेरवला हुक्का पिबइ छथ।

नजरिक इसारा सँ लग मे बइठऽ कहलनि आ फेनू पुछलइन जे तोरा महींस के ई दोसर मास थिकउ की ने।

हमरा अजगुत लागल। कहलिअइन—कका, तों कोना ई बात बुझि गेलहक?

बड़ार पतरकी मोंछवला हुनक उपरका ठोर फरल भ गेलइन, बजला—रथी, चरवाहिए मे त हमरा आउर के जिनगी गुदस्त भेल, एतबो नइ बुझबइ?

हुक्का जमेलीक भरे ओकठा देलखीन, चीलम अठमिह कँ फेनू बजला—मलिकरसँ माधि क आएल रहितउ त थाइसन बर्ख रहए। तोहर बाप लालचन तोरे एती टा छल हेतउ......आऽऽहे ऽऽ, बुझलएँ? बड़बेर महींस तोहर पाड़ीतरे बिएतउ......"

तखन मड़इ उठला आ हुँड़िआ भैंस लग जा के थनसिस बइठि गेलइथ। गहिकी नजरिसँ अठउड़ी बीछऽ लगलखीन।

सबूरी कका हमरा बड़ मानइथ। हमरो हुनकर टहल टिकोरा मे बेस मोन लागए। ओना हम रही बड़ गोआर, ओ बानुक। हुदा से नहि कहिओ बूझि पड़ल। खाइ पिअक कोनो चीज-बस्तु बेहेन धँ हवेली सँ भेटइन त तइ मे सँ हमरा लेल किछु रखबे टा करइथ।

मझिला मालिक के छुट्टी कम्मे होइन, तइओ छ मास पर छुट्टी लऽ कऽ दू चारि दिन रहि के बिदा होइथ त इसटीकन बिछौना बिस्तरा उठइत-बइठइत कहुना हमही दऽ अबिअइन। गाम सँ मधुबन्नी अढ़ाए कोस पछिआ। घाइ टूटि जाए एक ठेहें। थाने पसेने नहा जाइ। आ तहन गाड़ी लाटफारम पँ चुलकए लगइ त मालिक दू गो पैसा हमरा दिश बीग दइथ।

पइसाक मुढ़ी, आ पइसाक बीड़ी। फँकैत-फुकैत गाम आबी घूरि कऽ।

हमर माए अइ घर मे बिअहुता भऽ कऽ नइ आएलि रहए, सनन्ध मेल रहइ। बाबू कमाइत रहइ टाका दिस कतउ, पाछू त जिनगी गामहि पर रहल। सुइत त हमरा आबरके बढ़ा सातेक खेत दऽ गेल। थोड़ जमीन पर मझिला मालिक नजरि गड़ओने। कहिआ कतऽ दस बारह गो टाका देने रहथीन सादा कागज पर अउँठा छाप लऽ कऽ। से सूदि दइत दइत बस हमही सब खिआ गेली, कर्जा नहि खिआएल हओ भाइ!

मलिकाइन दुअन्नीक हिसाबेँ भरि सालक दरमाहा डेढ़ गो रुपइआ आगाँ पाछाँ देथिन तइसँ की होअए? जड़काराक राति परलयकेर बनल बजबइत आएए। गर्मी आ चउमासा त कोनो तरहेँ खेपि ली, मुदा जाड़ कटनाइ पहाड़ भ जाए। ओढ़ावए खातिर दू आँटी नार पोआर आ देह झाँपए खातिर गुदरी केथरी......एतबो जँ नइ जुटए त पूसक राति जमराजक सहोदरे बहीन। धूड़-धुआँ लेल चाही गोइठा-करसी। से तऽ चेत्रेक माल-जालक हेतइ नहि। हमरा घर मे माल जालक नाम पर दू गोट बकरी टा छल। हँ, बकरीक मेंड़ारी जाड़काला मे खूब काज अबइ ततबा धरि मोन अछि।

बुढ़िआ पोखरीक मोहपर बड़क गाछतर कोल्हु ठाढ़ होइक। बाँसिक खाम्हखम्हेली, बाँसिक पाढ़ि, बाँसिक बरेंडी......पइहर सँ छारल बातीक चार, मास डेढ़ मास लए कोल्हुआड़। तहिआ कुँइख खूब पेरल जाइक आ खूब गूड़ बनइ। हम दूनू भाइ-बहीन कोल्हुआड़ मे बेसी काल रही। बरद हाँकि दिअइ, कोल्हुक ठोरतर कुसिआरक टोनी दइत रहिअइ, भट्ठी मे पतलो झोंकिअइ, खखोड़ि खखोड़ि क कड़ाहक पेट साफ क दिअइ......घरला मे खूब कुँइख चिबाबी, रस पीबी, गूड़क ढाढ़ी खाइ आ राति कऽ भट्ठिए लग गरमा क सूति रही। कहिओ कहिओ बाबी उठा कऽ लए जाए जागय त केओ बाजइ—

"छोड़ि ने दही, घर मे कोन दोलाशा छउ जे अइ जाड़ मे ओढ़िबहिन, मने तऽ छुतल छउ!" जड़कालामे मास दू मास एहि साल अहिना चलइ।

एक दिन मझिला मालिक माए केँ चाल पाड़लखीन। पाछाँलागल हाँदिओ गेलइ आ हमहू धुनकिअइ। दलानपर बड़का चउकी, तइपर पटिआ ओछाओल। मालिक तऽ छलाहे, गामक बूढ़ा पण्डित सेहो रहइथ। मालिकक हाथ मे पितरिआ ठाड़ बला सरौता छलइन। सुपारीक कतरा पंडित जी दिस बढ़बइत बजलाह—बलचनमा जा बीस त हमरा उपाल देत रहल आ कने एकरा लोकनिक हँथि तऽ देखिओ...

पण्डित जी कतरा फाँकि लेलइथ, दुइलाहा कमानी बाला चशमा नाकपर सँ हटा कऽ ऊपर पर चढ़ओलैथ। कनीकाल धरि हमरा दिस तकइत रहि गेलाह। फेनु कहलखीन—जशोधर बाबू, अइ छओंड़ाक त बुट्टी बुट्टी चमकइ छइ! ईह, तकइए केहेन टुलुर-टुलुर!

मझिला मालिक गुड़ुआ कऽ मूड़ी डोलउलइथ। सुपारी चिबबइत बज-लाह—हँ गुरु, भारी हरमजादा अछि। ओइ दिन भोजपड़उलवाला ठाकुर आएल रहथि। खबास कने दुःखित पड़ि गेलइन तऽ कहा पठोलिअइ जे बाँति दइन आबि कऽ से नहिए ने आएल बदमसवा!

हमरा दिलसँ दादी बाजलि—आँतब पीचब सँ चेतनक बुते ने होइत, बाजचन तऽ लड़ुका देलह थीक। तहूपर भरि दिनुका थाकल-ठेहिआएल, राति कऽ की कोनो होश रहइ छइ गिरहथ?

मालिक डटलखीन—"चोप।"

पण्डित जी नजरि नचबैत बजलाह—"राड़ँ एवं पवित्रं" मुदा मालिक केँ तऽ अपन गोटी कडुना लाल करबाक छलइन। मिठबोला बनि माएकेँ कहए लगलखीन—बलचनमा-माए, तों तऽ जनिते छें जे बेर-कुबेर तोरा लोकनिक

खातिर हम कहिओ अपन पाएर पाछाँ नहि कएल। दू केर काज पड़लउ, तऽ चारि देलिअउ, पाँचक काज पड़लउ तऽ दस। परिवार जेहने अपन तोहरो परिवार हमरा लेखेँ तेहने। तखन की तऽ काज-परोजन भीड़-भाड़ मे कखन तोरा समक अभेला-कुबेला तेहो होइ छउ- से नहि, मुदा महतो-आ बहिआ दूनू दू नइ होइ छइ, होइ छइ एक्के। आन केओ काज नइ अबोलउ, कन-फुका गुदक कोन-कमी?

तहन फेनु हमरा अपना लग बजा लेलैथ, पीठ-पाँखुड़ पर हाथ फेरऽ लगलइथ। माएकेँ कहलखीन—बलचनमा-माए, तोहर दिन आब जल्दिए घुरतउ! बेटा कमा कँ टाल लगा देतउ! दुख थोड़बे दिन रहलउअए।"

माए अलबडकक टाड़ी भेल ठाढ़ रहए। ओकरा ई बुझए मे ने अबइ जे मालिक कोन नाटक कऽ रहलैथ अए। दादी गुम-सुम छलि। हमहू रही ठेहरले। पण्डित तमाकू चुनबैत।

पण्डितजी बजलाह—जे बहिआ महतोक हुकुम मानए ओकर जनम फेर बहिआ भऽ कऽ नहि होइ। आब-तमाक की ठीक तऽ माइट ठीक। अहसँ जतबा उपकार होअए ततबे फल।

तखन मालिक एक बेर हमरा दिस तकलैथ, एक बेर माएक दिस। कनी काल रहि बजलैथ—काल्हि छिकइ बुध, परसू बिरहसपति, सजउली चलिहैं कनी……।

हमरा घरसँ पच्छिम मालिकक भीठ खेत 'तिनकोनमा' रहइन। कठा डुइएक हमरो जमीन ठामहि रहए, ओटकिनमी कोली दूनू मिला देला सँ चौकोर भऽ जाइत रहैक। मालिक केँ ओहि जमीन पर नजरि छलइन।

माए हमर गुम्मे रहलि, दादिओ। हम तहिआ ई सब किछो बुझअइ नहिए। तमाकू थुकरि कऽ पण्डीजी बजलैथ जे ओ जमीन राखि कँए की करबे?

कहिओ चारि सेर मडुआ, कहिओ चारि सेर खुथनी, कहिओ पथिआ-आध पथिया अरहुआ…। हम तऽ ओइ उसरहा कोली मे कहिओ हरिअरी नइ देखलिअउ!

दादी मालिकक पाएर छानि लेलकइन, कलपए लागल—थोड़ाइ सरकार केँ, ललुआक अरजल जथा आब इएह टा रहि गेलइए। एसरी छोड़ि दिअउ मालिक! अहाँ आउर के कथीक खगता अइछ…

मालिक हूँ हूँ हूँ हूँ करैत अपन पाएर हटा लेले रहइथ।

हमर माए कहलकइन —ई जमीन घरक नगीच पड़इ छइ। थिओ पूता चारि दाना छींट दइ छइ त कुछो ने कुछो भइए जाइ छइ। बदला मे कहउँ अनतऽ दू कठा खेत देथिन से जाऽ कऽ उपजउतइ? दस बरखक देहक कुते कोनाले सम्हरतइ, ईहे कहइथ?

मालिक रहला। देबालक खुट्टीमे चोंगा टाङल रहइ, तइसँ नीमक खड़िका बहार कऽ अनलैथ। दांत खोधइत बजला—हम सबटा ठीक-ठाक कऽ देबउ। एते खेती-बाड़ी होइते छइक, तोहर दू कठा रोपल जेतउ तेहो कोनो दिन पुछि कऽ? हर-बड़द, बोनि-बीआ जे लगतउ से अगहन-पूसमे दऽ देल करिहइ।

हमरा गाँक जकाँ मोन नइ अछि जे कोना माएके राजी कऽ लेलखीन मालिक आ कोना लिखा पढ़ी भेलइ। ओ दूनू कठा खेत धरि मालिक केँ भइए गेलइन। बदला मे धानक खेत के कहआ जे अखनाक ओ पुरनका निशान परजन्त नइ आपस भेल।

मलिकाइनिक ओइठाँ काजक कोनो कमी नहि। भरि दिन किछु ने किछु लगले रहइन। हम कनिको बइठी, से खवासिनिआ केँ नइ सोहाइ। ओ हमरा कखन ढाबुत कहए, कखन भकोल। ई खवासनी मलिकाइन केर

लोक ओकरा मलिकाइनिक ताजी कुकुर कहइक। से, ओ मउगिआ जखन अबाच-कुबाच कहए, तखन हमर रोइआ ठाढ़ भए जाइत। कोनहुना गाल तीड़ि कँ पड़ाए तड हम ओकरा खेहारी।

पछाति दुहनाइओ सीखल, सखुरीकका अहू मे हमर गुरु भेलइथ। हम पाड़ीक मोहेँ दूध छोड़ि दिअइ से मलिकाइन के नइ नीक लगइन। नञ्ड्. खबास सँ अपन भैंसी दुहावड लगली तड हमहूँ मंडिआ देलिअइन। माल रहइन हुनकर आ जूति चलेत हमर?

मास तिनिएक भेल हेतइ की पाड़ी गेलइ मरि, से के जइँन बेचारी चुकरए! की कहिअ...हमर कोन साथ? तहन बाबा कपिलेसरक इहे मोन रहइन तखन आन के की करितइ? मुदा एगो बात कहि दइ छिअ...हम आ की सखुरी काका दुहइत रहितिअइ त पड़ड्. बेरबाद होइतइ? किन्नउ नइ! महिसक छलइन, बड़ मलगरि। देखवामे पेप, सुनवाने फूटल थारी। हुनू बीहि पर बसुली बजबइत भगमान गोदड छलखीन। धँहोनी मे चरि चरि टा लहठी, पाएर खाली। सूति-पाति से फकफक करइत। चाकर पाढ़िक सला-ओल साड़ी पेन्हि कँए जहन ओ बहराए तहन बड़ नीक लगइ लोक के। ककर नजरि तहन ओकरा दिस नइ उठइ। अनकर तड की कहिअ मझिला मालिकक नञ्ड्. खबास सेहो बकर-बकर तकइत रहि जाइ ओकरा दिस...

नीक-निकुत चीज-वउस मालिकक ओइ काम जहिआ कहिओ खैने हेबइन, तहिआ अहड़े कीड़ड। आब अंदर खेबाक रोक थाम भड गेलइए। हमरा आउर अपनो चूकड लगलिअइए जे ऐंठ खेनाइ महा खराप काज थीक। मुदा पहिने ई ध्यान नइ रहए हमरा आउर के। अपना गामक धानुक, गड़गोआर आ केओट के बाबू-भइआक ऐंठ खाइत हम देखने छी। आब मुदा हमरा आउर कोनो बाबू भइआक ऐंठ नहि खाइ छिअइन।

पाहुन-परक अबइन तड तुलसीफूलक चाउर बहराइ, रड्डु—मोदनी पिटबाल जाइ, कुजरटोलीसँ मुलकी तरकारी अबइ, दूध-दही सहजहि। थारक चारी कात बीस-बीस टा चालीस-चालीस टा कटोरी। तिरहुतिआ भलमानुस आ बबुआन आउर के ओइ जक खाइ-पिअक बड़ चहटकार। अंइठ मे तते रास मे चीज-वउस रहि जाइक जे दू-दू तीन-तीन साँझ हमर पलिवार हुमचि-हुमचि कए से सब खाए। खाइत काल दादा बुझावए जे बउआ ई थिकइ कटहरक बड़, ओ थिकइ रहूक पेटी, ओइ कात सकरकंडीक भुजिआ, एह! बड़ीक झोर केहेन निम्मन छइ! चटनी मे पुदीनाक पात पड़ल छइ। दालि केहन सोन्हगर...मुदा अपना मलिकाइनके हाथे छोट छइन, जेठकी बहुआरिया जकाँ कहाँ थार सैंतइ छथुन? पाहुन जड ठजाहुर नइ रहथि तखने पेट भरतैन।

काज-परोजनमे जेठकी आर मझली आर छोटकी सब बहुआसिन के ओइ जकसँ हमरा आउर अइँठ-कुठ हँसोथि लाबी गड।

पाहुन सभक ओहो अइँठ गरिबहा के भागे सँ भेटइ। बात ई रहइ जे मालिक जकाँ बहिओके आब कुटि कड कए टा पलिवार भड गेल रहइक। हमरा आउर मालिक-मलिकाइए अपन बखराकड लेलेरही। छोटका मालिक हमरा बखरा मे पड़ैथ। कहिओ कहिओ बाँट-बखराक ई सिमान टुटिओ जाइ। से तहिआ होइ, जहिआ उपलैन-मुड़न-बिआह-दुरागमन आ सराध-बर्खी रहइन।

पुरनका हवेली बड़का मालिकक हिस्सा मे पड़इन। हिनका आउरके एगो निसन्तान पित्ती छलखीन, हुनकर हवेली दण्ड मण्ड पड़ल छलइन, मझिला आर सझिला मालिक तकरे मरम्मति करा लेलैथ। छोट जन अपना लए ई नबे कोठा तइआर करबने छलइथ।

ई हवेली खपड़ाबला पोखरा पाटन रहई। बीच मे पइल आङन। दूटा

बखार से तही मे उत्तर दिस ठाढ़ । मकानक सरजमीन सीमटीसँ पक्का कएल । जकरा केवार लोहाक । चारू कात चाकर ओसारा । दछिन-पूब कोनमे तुलसी-चउरा, हनुमान जीक धाजा गाड़ल । लाल पताकापर फहराइतीक बजरंग महाबीर की सीवल, बड़का नाकड़िवला । पछवारि दिस बहरैयाक रस्ता, बहार हेवाक दरवाजा के बगल क देवा गन्हा एक दोसरे संसार । दरवाजा सँ सटले छोर पर टूटा कोठरी । ओहामे पेरल नरदान । उत्तरबारि कात मालजालक घर । बीच मे काठक नमहर नादि, तकरा दुनू दिस-दू-दूटा खुट्टा । कने हटि कऽ सीमिट केर लाल हौद । ई रहइ मालिक खातीर ।

बड़दक सेवा हरवाहे करइन । हमरा जिम्मा खाली भैंस । गाए एको टा नइ रहइन । जकरा सामरथ छइ से भैंसे रखइए, गाए रखनाइ दलिद्दरक काज ।

हमरा मालिकक पट्टी मे नगदी बेसा जमा रहइन । हुच्चा जानिक बीस हजार रुपइआ गाड़ने रहइथ, बात सच होअ की फूसि, मुदा लोक तऽ से कहबे करइन । उपजा चोइन हजार मोनक । भादव-आसिन मे बखारक मुँह फुजइ, तहन डेओढ़ा-सवइआ पर जकरा जते देवाक रहइन से देथिन । किछु बेचबो करइथ । अढ़इआ-पसेरी कइएक गेल के रखने छलइथ । एक बेर पुनमे फूदन मिसरक मसोमात धान देमऽ एलइन । अपने उचि उचि कऽ अपने रहइ । कहलकइन—तउलल छइ, मलिकाइन, सात मोनसँ बेसिए अनलवँ हइन, तइओ ओखा छिअइ ।

गिरहथनीक हाथ बाकल रहइन । हमरा चाल पाड़लइन । कहलइथ जे छीतन कामइतके बजा लबहिन गऽ, तउलिओ लेतउ आर ढकमे ढारिओ देतइ ।

छीतन कामति केओट रहइथ । मालिक कठा दसेक खेत देने रहथीन ।

बड़िजना छुलखीन कामति । बारहो मास लागल भिड़ल देखिअइन । अबेर-सबेर, राति-बिराति, समए-कुसमए जहन परोजन पड़इन, तइखन मलिकाइन हुनका बजबा लेथिन ।

छीतन कामति एलइथ । उतरबरिआ अलङसँ तराजू अढ़इआ अनलइथ फाँड़ बान्हि कऽ बइसला आर तउलऽ लगला—रामहि राम, राम...राम... रामः रामहि राम, राम राम दू; रामहि राम, राम राम तीन... की बीचहिमे बराम्हनी नजरि नचा कऽ बजलइ—ऊँ हुँ, कामति, ओ अढ़इआ कहाँ थिकइन ई ? कने ऊरथु, बदलुन गऽ ।

ता ओमहरसँ गिरहथनी बिजुलता जकाँ चमकि कऽ हड़-हड़इली—बेस, आब किए ने सूझत ! तखन अनपुर्ना-लछमी कहिकऽ, बनकर पाएर नइ धेने रहिअइ आ कऽ ; बेर पर धान नहि देने रहितइ हम तऽ तकरे से गाम के बरम-बध लगितइ ! फेर नहि मादर अबतइ ?

मसोमात गुम भऽ गेलि । आन उपाइओ तऽ नहिए रहइ ।

धान तउलल भऽ गेलइ, दू पसेरी ऊपर सात मोन भेल रहइ । बेचारी के एक पथिआ धान फेनू लाबऽ पड़लइ ।

ओहिना एक बेर करिमबकसके संगे भिलमिकाइन देखने छिअइ । ओ हरवाह रहइन । बोनि देबामे जे गड़बड़ सड़बड़ करथीन से हो ओहिना मोन अछि । पसेरीक लरम रउदा देखा कऽ बोनिवला धान ढकमे रखबा लेथिन । तहन हिनका ओतऽ एकटा बात नीक अबस्से रहइ जे बेगर्ता पर रुपइआ दू रुपइआ लोक केँ भेटि जाइ, दस-पाँच पनरह-बीस लए ककरो घुरऽ नइ पड़इ । सूदि मुदा बड्ड कड़ा । डेढ़ पाइ कखन, कखन दुइओ पाइ ठेका देथिन ।

बर्खो दू-एक अढ़ार बइसाख बितइत बितइत हमरा जबारमे तहिआ भइए

जाइ, आब समए पर बर्खा नइ होइ छइ। रोहिनी नछत्तर मे धानक बीआ सँ ठाम ठीम बाध बेल लहलहाइ रहिआ। मिरिगसिरा-अदरा मे अगला रोपनी सनपन भऽ जाइ। साओनक दुरदिना धरि बनहर खेतक कनिओ टा कोली कलत खाली नइ रहइ। बराह समारह भऽ जाइ, ओहूमे गडब धऽ कऽ खेतिहर निफिकिर भऽ जाए। गढ़ाइ, गम्हड़ी काटि कऽ ओइ खेत मे खाउड़ राखि लेअए तइन दलान पर बइसिकऽ पचीसी खेलाए।

हमरा सनक परानीमे नहिं नहि छइ। अखनधरि इन्द्रे भगमानक भरोस पर लोक निमहल जाइए। कमला मइआ हँसबइ छथीन त पहिने कनबिती छथीन बेस।

रोपनी आर कठनी काल मलिकाइन नइहरसँ जल महावइथ। साकुति रावऽ लए खिसिआइत रहथीन। ठामहि कनी दूर पर मुसहड़ टोली रहइ। गाल माथ, छोट छोट आँखि, दिवारो सन नाक आ देहक रङ छावर जकाँ मुदा इमनदारी आर मेहनति मे मुसहरक मोकाबिला आन कोनो जाति के नइ कऽ हैतइ नन्हाओ आते अन्हऽ नहिए पचइ। ओकरा आउर पचीस तीस समाक झुण्ड हएत। बूढ़-बुढ़हक लेखा त नहिए हेतइ। लग-पास मे दस-पाँच टा जमइ बेसी आरा छइ। अखाड़-साओन मे जन-बोनिहार नइ जुमइ लोक कें।

खेतीक ताल रहइन त मलिकाइन माइखर्च भऽ जाइथ। दाइल-भात, तइ पर सँ अचारक फाँहा......आइर फूलल जाइ, बरइकी बइकी गो टोकना चढ़इ, तीन-तीस चालीस-चालीस आदमीक सीधा लगइ। गाड़ीपर सितलपाटी धऽ कऽ तइपर लऽ केराक पत्ता बिछा देल जाइ। ओइपर भात आ टोकना मे दाइल। चकेराम तरकारी, डलिआ मे अचार। बीच बाधमे बाटइपर गाड़ी ठाढ़ होइ। जऽन आउर जातिक मोताबिक फराक फराक पतिआनीमे

दूबिपर बइठए, छीमन केराक पत्ता पर अन परसि देथीहिन। तरकारी आर अचार देथी। जऽन सब भरि पेट दूरि लेअए तखन फेर रोपऽ लागए।

मोन नऽ होए हमरो धान रोपबाक, मुदा काज एम्हर बढ़ि गेल रहइ। मैंसी आब एक गो नहि, दू गो रहइ। भिनसर चराकऽ घूरी त बथान खरड़ी। गोबर काढ़ि कऽ एकठाम जमा केने जइअइ, निछेस दोसर ठाम। गोलखाहा जगहक थाल काछि दिअइ। ऊपर सँ पथिआ भरि बलुआही माटि पसारि दिअइ। अइ तरहे मैंसीक जागह कें हम स्वच्छ राखी। गिर-हथनीक भाइकेर घोड़ा रहइन, तेकरो लिद्दी हमरे उठाबऽ पड़ए। लादिके धो-धा कऽ पवित्तर राखी। दलानक अङनइ खरड़ि दिअइ। खवासनी कोनो ने कोनो काज मे अड़ौनहि रहथ—दलमनि ला, दोकान लो, नूआ खीच दइन, फल्ली के सोर पाड़हिन, मसल्ला पीस, दब ने पइस, धान बहार कर, चिट्ठी खगा अबहीन, पत्ता काटि ला, पीठ खूनि दहुन, बुलुरकें बुला लबहुन ......देखहीन केवन पतली खरड़इ छड़ कलम मे, सुनइ छहीन बसवारी में कोदन ठक-ठक छड़इ छइ......खबासिनिया नथलहि रहए हमरा सइरिस्ताल! ने दस गो, ने बीस गो, रही त बलचनमा हम एक्के गो। मुदा ई बात बुझनिहार ओइठाम केओ रहबे ने करइ।

अइ खवासिन केर कोखि जरल रहक, धिआ-पूता सुनइ छिअइ भेबे ने केलइ। हरकलही गाबए केहेन दोब! आर गबइत-गबइत खिखिआ उठइ, खिखिआइत ओहि पाड़िकऽ कानऽ लागए—

मास दू मास पर अहिना ओकरा भूत लगइ। तहन खन छरपए, खन कूदए, खन ढाल ठोकए, कोंचा खोलि क नाङट भऽ जाए, ओहि बहार कऽकऽ चिचिआइ......हम काली मइआ थिकहुँ, बुढ़िआ पोखरिपर जे गुलरिक गाछ छइ तहीपर रहइ छिअइ......ओझा जागर पढ़ा, ने तऽ लऽसे गामकें

भूजि कऽ खा बेरच......

मलिकाइन कुमारी भोजन कबुला करथिन, रेशमिक अंचरा आर जोड़ा छागर से कबुला करथिन। हमरा कहथि, दामो ठाकुर के बजा अनइन गऽ। दामो ठाकुर तानतिरिक रहइथ। झाड़ फूक, पूजा पाठ, टोना टापर सब जनइ छलइथ। आलक रंग मे रंगल धोती लवनी पेन्हइथ। कपार पर सिनुरक बड़की टा ठोप। ठीक तते पइथ छलइन के फोलि देलापर पाछू दिए डाँड़ धरि चल अबइन। हाथी दाँतक गोटीक माला से लाल रेशमी मे गाँथल दू टा मूठा, आर तेकरा बीच मे बड़की गो बदराछ। छड़ीक मूठ सपनसरक मुँह सन रहइन।

दामो ठाकुर गाम मे बहराइथ तऽ धिआ-पूता आवर के बड़ डर होइ।

ठाकुर आबथि दछिनबरिआ घर मे हुनकर आसन जमइन। मलिकाइन सोफों नइ अबथीहिन। बड़का मालिकक बेटी कमला रँड़ रहइ, आर नहिरे बसइ। देखबा सुनबा मे सुन्नरि, डाढ़ नाक, ऐते आँखि। से एहना समए गिरहथनी ओकरे बजबा लेथीन। ठाकुर ओकरे पुछथीहिन, ओकरे अढ़बथीहिन। मूसक बीहरि केर माटि, तीन बर्खक पुरान कूश, चारि ठोप गंगाजल, पाँच गाछक सुखल पत्ता......एते राछ चीज बहुत भिरड़ा क दामोठाकुर खवासिनके काढ़ऽ बइलथि।

मलिकाइन ओकरा कोंचा मे कसि क गेंठ द देथिन। छीतन आर कल्लर धऽ-पकड़ि कऽ ओकरा ठाकुर लग राखि अबथिन।

सिद्ध जी मनतरा-मनतरा खवसिनिआक देह पर फूक मारथीहिन आ माटि फेकने जाथीहिन। हुनका आँखिक इशारा पबइत देरी हमरा आवर घर खाली कऽ दिअइ, रहि जाइथ ठाकुर अपने आर खवासिन। केवाड़ बन्न कऽ कऽ बहार सँ जिंजिर चढ़ा देल जाइ। भीतर सउन झाड़-फूक खूब

धेर धरि चलइ।

कती काल बाद भीतर सँ केबाड़ ढकढकाबथीन तऽ एम्हर सँ जिन्जर खोलि देल जाइन। घामे-पसेने भीजल सिद्ध जी बहराथि आ बजथीहिन जे बड़ जबरदस्त भूत छलइ देह खवासिन केर, कोनो धरैने देह छोड़लकइए से हमही जनइ छी......आँखि त बहराए नइ देथुन एकरा! कमला, ताकुबि रखि-हक कने!

भूत लगइ त खवसिनिआक रहे पड़हि होइजे पड़हि भदबारिमे कमला-बलान बाउरके होइ छइ। ने लाज-धीज, ने डर-भर, ने मान-मर्यादा, ने चिरी-चम्मन, ने गेआन-परान, ने मैत-मैत, ने ठर-ठेकान, ने थीर-थाम। बाढ़िक पानि सऽ ने आरि-धूर सूझए? भूत की जिन बांझि मउगी के देखतइ, ओकरा आउर के भान नइ सोहाइ छइ से त बुझले बेतइ। बर्ख ने दू एक बेर मलिकाइनिक आङन मे हमरा ओकनि ई तमासा देखबेटा करी।

एक बेर गिरहथनी अहिना ओकरा घरमे बन कऽ देलखीन तऽ भीतर सँ लगलइ केवाड़ ढकढकाबऽ......तहन अनन्त बाबू बजाल गेलइथ। ईहे गिर-हथनीक पितिअउता भाइ छलथीन, बेस हुनगर, बेस मोट डाँट! केहनो बदमा घोड़ाके अनन्त बाबू पानि पानि कऽ देथीन।

दूनू हिस धऽ कऽ केहनो मरखाह साँढ़ के ओ सए लग्गा पाँछा ठेलि अबथीन। से, मलिकाइन केर परताप सँ ओइ बेर भूतोक सङ्गे हुनकर लठा-पटी देखल। बड़ी कालपर बजारऽ देलकइन!

गिरहथनी बेसीकाल हमरा आउर के भूतक ओ कुश्ती नइ देखऽ दइथ। कहथीन जे बच्चु लोकक माथा मे भूतपिचासक बात चारि गुन बढ़ि जाइ छइ। झाड़बला के खवसिनिआक संङे असगरे छोड़ि देथिन ओ, जोत्तोरी!

तिनिए चारि बर्ख महिसवारक काज हम केने हएब की दादी बड़ी जोर

बेराम पड़लि। ओ रोग ओकर जान नइ छोड़लकइ। पेटक बेमारी एक दीन, साँझक दोसर दीन। पुरनकी गाड़ी अंका दादी-देइक ऐल-कैल भेडल छलइहे, तपइर सँ ई बेमारी तऽ ओकरा सब टा मत पीचि लेलकइ। ओना गाम मे ककरो किछु होइ तऽ मधुबन्नीक सरकारी असपताल सँ दवाइ लऽ आबए। बाबू भइआ ओइ ठाम सर्दी-खोखी होइ तहूने डागदरे अबइ। बहाइ गो रुपइया रहइ ओकर फीस, दू टका सवारी भाड़ा। अतबदक दाम ऊपर सँ! बाप रओ! हमरा आउर से पथ-पानि सेहो नइ जुमए बेरपर, कतऽ सँ अबितए डागदर आर कतऽ सँ दवाइ।

गाम मे एकटा बइदजी रहइथ, फतूरी मिसर। वैह आबि कऽ देखलखीन। आठ-दस पुड़िया दवाइ देलखीन। बदलामे एक जखड़ा मछरी हमरा एऽ दाउन करछलइथ। भादव रहइ की ने! रउदामे पित बगदि गेल। दादी के रोटी-सोहारी नइ पचइ, भतगील भात एक बाटी खाइक। मुदा घरमे चाउरे नइ!

मझिला मालिक राति के हमरा सँ जँतबइथ। पोनपर बड़ी देर मुक्का लगबाबइथ फेर दोसर करोट फेरइथ। कतेकालक बाद छुट्टी पाबी। कए बेर कहने रहइथ जे जहन जे चाहिअउ से लऽ जइहएँ। अही भरोस पर सेर भरि चाउर मङलिऐन, एक दिन नऽ लुलुआ लेलइथ। पाछू पाओ-डेढ़क देबो केलइथ।

माए दादीलए एकमुट्ठी चाउरके सिन्हकी राइन्ह दइ।

एँठे महुंका भात अबस्स रहइ, मुदा से सब दिना नइ। चउगासाक थालकीचमे पाइनो-परक नहिए अबइ। भदबारि मे पहुनाइ करए लए नइ ने महराइए लोक! पनिशाल बाध मे भरि छाती पानिक बीच दने ककर मजाल छिकइ जे चलतै?

हमरा पलखतिए ने हुअए, बेरपर दवाइ आनि दितिअइ ततबो नइ।

दादी के हमर बड़ आबेस, हमरो ओकरा खातिर जान जाए। चरबाहिए पहिने धरि हम ओकरे बाँहि के गेड़ुआ बनाक सुतइत रही। केहनो चीज दादी कतव सँ आबए तऽ तइमे सँ किछु हमरो अवस्से पइर लागए।

मुइल तइसँ दू दिन पहिने ओकरा मोन भेलइ माछक साना सङे भात खेबाक। चुप्पीक ओतऽ सँ बनसी आनल डुड़िया पोखरिक दछिनबरिआ मोहाड़ पर गुलरीक ओड़मे जगह ठिकिओलऊं। चाली गौंथि कँ बोरि देलिअइ—पाथल बनसी गोसैंआक नाम लऽ कऽ। नजरि छल तरेंड़ा दिस।

मलिकानक क्यो अइ पोखरि मे ककरो बनसी खेलाइत देखइ तऽ गारि-मारि-फज्झतिक अन्त नहि रहइ तकर।

कनिएँ काल बाद तरेड़ा हिलऽइ तऽ भ्रान-परान ककुम आबि कऽ आँखिक दुनू डिम्हा मे मोल्लैब!

लगौ छीपल त टेङराक दरसन भेल। ओरी गाछक ठारि-पात मे ओकरा गेलइ। सोझरा लेल तकरा। तहन बनसी समेटल। गलफद भो मूड़बाटें डुचिक डाँट पइसा कँ टेङरा कँ लटका लेल। घूमि कऽ आङन अएलऊँ। माए माछ पकबऽ लागलि की ओमहि मे खबसिनिआ छुमि गेल।

हाथ चमका कऽ बाजलि—चलह ने, आइ त बुझबे करबहक जे डुड़िया पोखरिक मछरी केहन सोअदगर होइ छइ!

दादी ओछान पर पड़लि रहए। खबसिनिआके सरसरी सुनिते बेरी ओकर आँखि खुजलइ। अन्हार मानिमे जेना खद्योत नजरि चमकइ छइ तहिना दादीक धसल आँखिमे डिम्हा चमकइ। कऽल जोड़ि कऽ ओ चुप रहऽ कहलकइ खबसिनिया कैं। हम माए के बुझा देलिअइ जे कोनो अन्देसा नहि।

खबासिनी आगाँ आगाँ, हम पाछाँ पाछाँ। बड़का मालिकक पछबरिआ दोमहलाक अङ्ड़ दने अबइत रही।

धनासुरके पाछाँ घुरि कऽ ओ हमरा चुम्मा लऽ लेलक आर पँजिआय झाँपलि की देखितइन दू थापड़। मारि कऽ पड़ा गेलिअइन।

ओहि दिन साँझखन गिरहथनी अनन्द बाबूक हाथे हमरा मारि खिअबलथि। तहिआ सँ पहिने अइ पोनपर कहियो नइ बजरल रहए;

एकरा लेसरे माँझ दादी मुँह बावि देलक!

हमरा आदर मे पहिने लेहरीक रेवाज नहि रहइ। शहर मे अङरेज राज करए, देहात मे जिमिदार। जनम सँ लऽ कऽ सराध धरि डेग-डेग पर बाभनक लूति चलइ, बात-बात मे पतिआ लिखबक पड़इ। धनिक सब छोटका जातिक लोकसँ अधनङ्गक संड बहुलथीन तहिआ।

चहारदि बड़का मालिकक बेटा ओरे पटना रहइ छल। दुनू गोटे बतारी रही : कोलेज बन होइ छुट्टीमे, तँ अबथीहिन तऽ हैंहो थावए। कमीज निकर पेन्हए, पकी बोली बाजए कखन कखन। चलबिआक ई बगद-बाइन हमरा बेस बढ़िआ बूझि पड़ए। सेहन्ता हुअए जे पटना देखितिअइ कनी।

आब उमिरो नवह बरखक भऽ गेल रहए। चरवाहि नहि सोहाए किसिओ भरि।

माए आ रेबनी कहुना अपन निमहए। खुद्दी-गुड़ा, मड़ुआ, कोदो, साग-पात...कहुना अपन खेपने जाए। धान कूटइन, चूड़ा कूटइन, चिकस पीस दइन, घर-आँगन बहाड़ि-नीपि दइन, पेडिआसँ सखोदा-चारी आनि दइन। अइँठ-कूठ उठबइन, बरतन बासन मँजइन, पानि भरइन। कखन कखन जाँति पीसि दइन। अइ सब काज काल रेबनिओ कें संग कऽ लइ।

२

गिरहथनीक भातिज पटनामे पढ़इ छलखीन। होटल मे खाइत हुनकर पेट खराब भऽ गेल रहइन। एगो आदमी के खगता रहइन हुनका। अइ लए कोनो पकड़ोस, कोनो नवाक सोलकन्ह केर जरूरति नहि। आर, ओहेन आदमी बेसी बेसी दिन रहबो तऽ नहिए करितइन।

हमर अवस्थे नान्हि टा रहए, देहक साँचा नइ छोट रहए। सुनल अछि जे बाप-पितामह हमर छऽ हाथक लहासवाला छल। माए पिड़सिआम तऽ रहए मुदा शुद्ध नइ छलि।

मलिकाइनिक भातिज दसमीक तातीलमे आएल रहथीन। पाँच-सात दिना छलखीन। पइघ पइघ आँखि, ठाढ़ नाक, चाकर कपार—बेस खाप-सूरत रहथिन। सोभावक मधुर, गप-सप काल कनेमने फनकाह।

पहर दिन उठइ तऽ हम घास छीलि कऽ घुरी। तइखन ओ हमरा हवेलीक भीतर बजा लइथ। नहेबा सँ पहिने मालिस ओ हमरे सँ करबइथ। देह बेस गुदगर रहइन। रोआँ सेहो मुलकी छलइन। चिकनइ लगा कऽ हम हुनक गत्तर गत्तर दूहि दिअइन। चानि पर कड़ूक तेल नइ, कोनदन लाल तेल लगबइथ। केसरनन्दन की भिंगिराज, भने कोदन नाम रहइ तेलक। हमरा मालिस-तालिश तऽ करए आबए सादे बाइस, तहन चिकनक सानक

छोड़आ के जेना मोदिआइन शुकिअबइ छइ तहिना शुकिअबइत रहिअइन बड़ी कालधरि। कहइथ जे बड़ बढ़िआ लगइअए रओ!

एक दिन मालिश केलाक बाद पुछलइथ जे पटना रहबें हमरा संगे? सहरमे मोन लगतओ?

मालिकबला फटलाहा गनजी रहए देह मे, मारते छेदे रहइ ओइ मे। पेटक सोझाँ एगो छेद मे अङुरीबुलिअउने हम भारी छगुनता मे पड़ि गेली। की कहिअउन की ने कहिअउन, हम की जानऽ गेलिअइ जे एहेन बात ओ पूछि देता।

तइओ कहलिअइन—मलिकाइन के पुछिअउ सरकार हमरा पूछि कऽ की होत?

अइपर ओ कहलइथ जे तोहर माए कें राजी भऽ जाउ तऽ पीसी के अपन हम बुझा देबइन।

बुझलहक हओ भाइ, भेबो सैह केलइ! माए हमर चट दनी तइआर भऽ गेलइन। गिरहथनी के सेहो मोन पड़लइन।

मलिकाइन अपनाभतीजा के फूल बाबू कहथीहिन। सभ हुनका सेहे कहइन। हमहू फूल बाबू—फूल बाबू कहइ लगलिअइन। सुबिस्ता दाँत तनी तनी गो बड़ दीब लगइन। बजथीन तऽ लगइ जे फुलडाली सँ सिंगरहारक फूल खसल जाइ छइ।

फूल बाबू अपना पीसीक ओइठा साल मे दू-एक खेप अबस्से अबइथ। हमरा माइके हुनक सील-सुभाव गमल रहइक। ओ चंगेरा लऽ कऽ कइएक बेर हुनका ओइ ठाँ जाइन अबइन। नहिरा सँ मार-चोर अबइन तऽ गिर-हथनिओ चंगेरा-हंगेरा पठबिते रहथीहिन।

तसरा दिन तिलकन्ठ देखि कें फूल बाबू अपना गाम गेला। एमहर गिरहथनी के चरबाहक फिकिर भेलइन। ओना कहथीन तऽ हइ जे भर, चरबा-होक कोनो घटी? एकटा जेतइ तऽ एगारहटा आउत! मुदा कहबा मे की लगइ छइ? मनुख मनुक्खे थीक। हाथ-गोड़, नाक-कान आँखि-मुँह सब जानवर के रहइ छइ मुदा दिमाग मनुक्खे टा के होइ छइ। भैंसी चराबह की गाए, बकरी चराबह की भेंड़ी, अकिल तऽ चाहबे करी कनीमनी। अहिना भऽ जइतइ ई काज तऽ बड़दे ने बड़दक चरबाह होइतइ। खरबूज-खीराक खेतमे लोक छुट्टा गाड़ि दइ छइ। खपड़ी मे चूनक चेन्ह सँ आँखि-नाक-मुँह बना कए तकरा अउन्ह दइ छइ ओइ खुट्टीपर। दू मुट्ठी सुक्खल घास लऽ कऽ हाथ-गोड़ बना दइ छइ। मुदा ओइ नकली रखबार के कोइ पुछितो छइ? मनु-क्खक बच्चा हेप-चेप भइ थिकइ जे जखनहि मोन भेल तखनहि सँ उठा आनल।

से, मलिकाइन के मोस्किल भऽ गेलइन। चरबाह भेटबे ने करइन। दिन दसेक बड़ा छोलन, तहन जा कऽ एगो बूढ़-बहीर दुसाध चरबाह भऽ कऽ एलइन। हमरा भैंसी छोड़इत बड़ अपसोच भेल। मुदा अपन साध तऽ किछु रहए नहि। तइओ बुड़बाकें सबटा बात बुझा सुझा देलिअइ। दू राति संग रहि कऽ भैंसी सँ चिन्हारए करा देलिअइ।

पखेब आर हूराहूरी एमे दिन होइ छइ। तकरा बिहाने हम फूल बाबूक ओइ जग जाइले बिदा भेलऊँ। गिरहथनी छौतन के संग कऽ देलइथ। माए दू दिन पहिने सँ नोर बहबइ छलि। आंगन सँ बाहर भऽ कऽ गोड़ लगलिअइ तऽ डोहि पाड़ि के कानऽ लागलि। हमरो कोढ़ फाटल तऽ नोर कापऽ लागल, आँखि नोरा गेल। मुंह सं एको आखर बोल नहि फूटल। मूड़ी गोतने अपन पेड़िआ धेलऊँ।

बाप तऽ हमरा लेखे कहिओ भेबे ने कएल। जा धरि जील ता कहिओ कलकत्ता, कहिओ ढाका, कहिओ जलपाइगोड़ी तऽ कहिओ देनाजपुर।

कपार, नाक, मोछ आर कान, ओकर एतबे हमरा मोन अछि। माथा बड़की गो रहइ। दादी पड़जे दादिए छलि। ओकरे कोरा मे ई देह पोसल पालल गेल। माए ठहिआ कहबो करइ जे रेखनी ओकर थिकइ आर हम छिकिअइ बुढ़िआकेर।

मधवनी सँ तमोड़िआ गाड़ीपर गेलिअइ। छीतन के देखल सुनल रहइन। मुन्हारि माँझ लए हमरा आउर फूल बाबू ओइजग पहुँचइत गेलौ!

ई फूल बाबू गिरहथनी के अप्पन भातिज नइ रहथीन, बदमातरे भाइक लड़िका रहथिन। मलिकाइनक बापके तीन गो बिआह। पहिल बिआह दीस कोनो बेटा बेटी नइ, दोसर बिआह दिस फूल बाबूक बाप, तेसर दिस गुनमन्ती देवी अवतार लेले छलखीन। इहे हमरा आउर के गिरहथनी छलथि। जथा-जाल सम्पदा फूले बाबूक बाप कें भाग मे पड़लइन। मलिकाइन कें बापक धन मे सँ दसे बिगहा जमीन पड़ि लगलइन। बाभन-छत्री आउर के ओइजग बेटा अछइत बापक धन मे बेटीक कोनो दखल नइ। जे भेटलइ से हथ उठाइएभेटलइ। बेटी जा कुमारि रहलइ, ता खेलकइ-पिलकइ, सभ सिकारकेलकइ। अइ सँ बादि किछु नइ

तइओ भाइ-बहीन मे कुभाव नइ रहइन। फूलबाबूक माए त ननदिक लेल जान देथहिन, एहन भाउजि नइ देखल।

छीतन धूरि कऽ गाम चल गेला।

तीन चारि दिनुका बाद छठि-परमेसरीक परसाद मुँह मे दऽ कऽ हमरो आउर पटनाक जतरा कएल। गामक नाम रहइ लखनउली। लखनउलीं तमोड़िआ तीन कोस उत्तर, कने पुरबाहुत टपलगाड़ी पर अबइत गेलिअइ। बसु-जात तते बेसी नइ रहइन। एगो सुटकेस, बिस्तरबला होल्डाल, छोटकी टीन मे घी......ई सब तऽ रहबे करइन। एकरा अलावे पथिआ मे चूड़ा, ठकुआ, खजूर-टिकिआ भरल रहइन। केराक पत्ता मे लपेटल अचारक

फाड़ा सेहो ओहि पथिआ मे। एकरा डाली ऊपरसँ दऽ कऽ पथिआ साबेक लउड़ सँ नीक जकाँ बान्हल रहइ। बन्हलो छनलो रहइ तइओ पथिआ महमह करइ।

टिकट-तिकट मालिक अपनइ कटबलखीहिन। कनी काल थमिकऽ भपटिआही दिससँ गाड़ी एलइ। मेला-ठेला नइ रहइ तते। बइठमानो रहबे करेन। लागि-भिड़िकऽ मोटा-चोटा चढ़ा लइत गेलै।

गाड़ी फुजलइ। तमुड़िआ तहन फंझारपुर, तखनी मनीगाछी, तकरा बाद सकुरि। सकुरि मे मेल खेलकइ गाड़ी। दोसर आइत रहइ पंडौल दिस, हारसराए सँ आएल छलइ। दूनू गाड़ीक ऐंजन पानि सेहो सकुरिए मे लिलकइ। फूलबाबू उतरिक ककरा दनसँ ता गप करइ छलइथ।

ऐंजन पुकी देलकइ तऽ मालिक गाड़ी पर चढ़ि गेला।

सकुरी आर दरिभङ्गाक बीच मे एके गो टीसन पड़लइ हारसराए।

दरिभङ्गा जकसन के हड़ाही कहइ छइ लोक। अइठाम बड़ी काल गाड़ी ठरा रहलइ। हम ताबेमे उतरि के लघी कऽ एलौ। मालिक लाटफारम पर टहलइत घूमैत रहलैथ।

पहिले पहिल हड़ाही टीसन हम देखलिअइ। एते लेन, एते रेलगाड़ी, एते ऐंजन पहिने कहाँ से हम देखबै। आधा बाँहिक कारी कुर्ता पहिरने कुली आउर। खाखी रङ्गक कोट पेन्ट पहिरने टी-टी-ई। मोसाफिर सभ सेहो किसिम किसिम के कपड़ा पेन्हने।

हड़ाही जकसन मे दू टा लाटफारम छइ। अइ पारसँ ओइ पार जाइलए बड़की गो पुल टे छइ।

ठाढ़े ठाढ़े लोक कें इमर-एमर सोहारी-तरकारी गिड़ैत देखलिअइ तऽ बड़ अजगुत लागल। भेल जे खोचोरी, बइठि के किए ने खाइए! बोली से

कए तरहक सुनिअइ।

एक गोटे फर्दी छपलाहा कागज वेचैत रहइ। बाबू ओकरा सँ ऊ कागत किनलइथ। पाछाँ बुझलिअइ जे लोक ओकरा एखवार कहइ छइ। ओइ मे दुनिआ-जहान के खबरि छपल रहइ छइ।

एजन फुकी देलकइ आर सुसुआए लगलइ त फूलबाबू गाड़ीपर चढ़ला। लगेमे आबि कं बइसला। अइठां सँ गाड़ी खूब रेस कऽ देलकइ। नीचाँ पहिआ हड़ाक हड़ाक करइ। कील आ थूरी सब ढीलइ त डिब्बा आउर डब्बर डब्बर बाजइ। ऐजन फक्फक् काली फक्फक् काली करइ। भीड़े मे एक गोटाके पुछलिअइ—गाड़ी एना किए बजइ छइ?

ओ कहलक—पहिले पहिल गाड़ी चलबए लागल त अङरेज बहादुर के भारी मोस्किल भेलइ। काली माइ टकसइ ने देथीन। छोटा लाट सपना देखलक जे सए जोड़ा करिआ छागर कालीजीक चाहिएन। तइन ऊ कलकत्ता मे टिलिगराम कए देलकइ। एकबेर सए जोड़ी करिआ छागरके सोनित पिलथीन से काली माइक जीह चारि आङुर छोट भए गेलइन। तहिए सए ऐजन काली माइक जे-जै कार करइत चलइ छइ फक्कऽकाली फक्कऽकाली झक्कऽकाली……सुनइ छहक? साफे त कहइ छइ!

ई बात सुनि कऽ सुन भऽ गेल रही। आब कोइ ई बात कहत त पतिए-बइ, मुदा ओहि दिन तऽ सोरह आना साँच बुझि पड़ल।

गाड़ीमे देह लेना ने ढीलऽ लागल जे की कहिअइ, हुऐ जे गिरहथक कलममे मचकी झूलइ छी! कनी काल बादे आँखि झपा गेल।

धक्का सँ निन्न टूटल तऽ गाड़ी समस्तीपुर आबि गेल रहइ। ई जकसन तऽ दरिभङ्गो सँ पइघ।

अइ ठाँ हमराआउरके गाड़ी बदलेके रहए।

हमर बिचार नइ रहए, मुदा फूलबाबू जिद्द धेलइथ जे एगो कुली कइए ले।

कुली बोझा उठबलक। घी बला टीन हम लेली। पूल परसे होइ पार भेलिअइ।

लाटफारम पर भारी लोक। किसिम-किसिमके चेहरा-मोहरा। किसिम-किसिमके पहिरन-ओढ़न! बोली बानी मिझड़ाएल।

मोटा चोटा बाकस-बिस्तरा नीचाँ धेलक कुलीबा। गाड़ीमे बिलम रहइ। कुली अपन चल गेल। मालिक कहलइथ—चूड़ा दकुआ बाहर कऽकऽ खाऽ ले।

कही ठाम?—हम कहलिअइन।

मालिक कहलइथ—तऽ, की हेतइ? देखइ नइ छहो, कते गोटे तऽ खाइ छइ!

ठकुआ दुइए टा लेलखीन मालिक, एगो सुखबा। खोंटि कऽ अचार। इपारा सँ खूका देलइथ तऽ कल सँ पानि आनि देलिअइन। टोंटी जोर सँ दबउने रहिअइ से छातीपर-कपारपर पानि पड़ल रहए, इथर-हबर पोछि नेने रहिअइ तइओ सुखल तऽ नहिए छले।

गोड़ पातेक कुक्कुर आर तिन-चारि गो कल्लर छओंड़ा फूलबाबूके घेरने ठाढ़। बड़ तामस उठल। हाथ उसाहलीअइ तऽ ऊहे मना केलेथ। कुक्कुर आउर तऽ जे से मुदा कलरबा सब के अनधेर्ज भेल जाइ, बीच बीच मैं ऊ आउर बाजे—"बाप रओ बाप, सबटा खेने जाइ छथीन मालिक……हमरा आउर ले नइ रहे देबइ, सरकार!……" एहबा कहइ आर कनबाक भगल करइ।

एहनाने कहउं खाए-पीअल जाइ!

नइ खाएल गेलैन तऽ मालिक पत्ता छोड़ि कऽ उठि गेलैथ।

कलरवा सब अपनामे फुसुरे माही कटाउज करऽ लागल।

हाथ धो कऽ एलैथ तऽ कहलैथ जे तों गाड़िए पर खइहें।

कतीकाल पर कटिहारवाली टरेन एलइ तऽ कुलिओ दउगइत आएल। रेहा बेस खुलइ, मुदा हमरा आउरके जगह भेंट गेल।

ई गाड़ी अमीनगाममे आएल रहइ, जाइ छलइ इलाहाबाद। पूरब भरसँ मुलकी कमतिया सब अबइत रहए, छपरा-बलिया दिस अपना अपना घर जाइत रहए। दू गोटे एहनो रहए जकर बोली नइ बुझिअइ। पुछलापर फूलबाबू कहलइथ—ई बङाली थीक, बङला भाखामे बजइ छइअए। सते इधर-उधर बजे जे किछु नइ बुझये।

मुड़ा फँकली, ठकुआ खेली। पानि पेने रही लोटासँ, से पीबि लेली। तहन जे बड़ठले मे आँखि मुनलिअइ से हाजीपुरके बाद निन्न टूटल। हाजीपुर आर सोनपुरक बीचो बीच बड़की टा पुल छइ। गण्डकीके अइ पुलपर गाड़ी एलइ तऽ सबी ओर सँ हड़हड़ाए लगलइ जे की कहिअ।

फूलबाबू हमरा कहलइन—देखही, दखिन भर ओम्हर बारहे पारमे इजोत जे देखइ छहिन सएह पटना थिकइ।

आरौ तोरी! हमरा मुंह सँ बहराएल।

बाबू कहलइथ—मुदा गाड़ी तऽ घूरि कऽ जेतइ। एखन चारि घण्टा लगतइ!

एतनी दूर जाइमे चारि घण्टा?

तऽ, देखइत ने रहिन!

तावड़ि मे सोनपुर आबि गेलइ। गाड़ी ठाढ़ भेलइ।

फेनू कुली केलखीन मालिक।

घटही गाड़ी लगले रहइ। कुलीवा ओइपर गाऽ कऽ बइसा देलक। राति पहरभरि छल होतइ। गाड़ी चललइ तऽ ढकर ढकर बजइ।

पहलेजा पहुँचइत पहुँचइत किरिन फुटि गेलइ। सामने ओइ पार महेनरू घाट।

सबसे गाड़ी खलास भऽ गेलइ। जहाजदिस धरोहि लागल। बुझि पड़इ जेना बीहरि सँ बहार भऽ कऽ लोक आगू मुहेँ ससरल जाइए। बकसा-बिस्तरा माथपर बोझने कुली आउर पसिंजरके धकिअबइत चलइ। हमरा तऽ अकबक किछु फुरबे ने करए।

जहाज पर चढ़लहुं। फूलबाबू बिस्तराबला मोटापर बइठलइथ। लोहक बड़की गो नाओ, तइपर काठक कोठा। इहे तऽ भेल जहाज। जहाजक बीचो बीच चाकर-चउकोर खाधि मे भारी मसीन, भारी कल-पुर्जा। लोहक तार आर जालीसँ घेरल रहइ। फूल बाबू कहलइथ—जहाजक ऐन्जन थिकइ।

ओ तऽ जा कऽ बैसि रहला मुदा हम बड़ी कालधरि जहाजक ऐन्जन देखैत रहलहुँ। एह, धन्न कही मनुक्खक मगजके! सोचइत-पोचइत बिचारइत-बिचारइत कलमे कल भिरबइत गेल, पेच पर पेच कसइत गेल··· पथरकोइलाक आँच पानि गरमाइ छइ, ताहीसँ भाफ तइआर होइ छइ। भाफेक जोरें जहाज आर रेल आर कल-करखाना चलइए।

जहाज पर बइसबाक बेंच-कुरसी नहि रहइ। थड़ किलास मे माल जाल जकाँ जकरा जेना मोन होइ से तहिना कठए-पइठए। एखबारबला बुलि-बुलि एखबार बेचए। चिनिया बदाम बला सेहो अपन सओदा बेचए।

ऐन्जनगोंइक मोट-पातर टोंटी आओर खूब धुधुआइ। बहार मे जहाजक दुनू कात बड़का बड़का पंखदार पहिया घुमइत रहइ आर जहाज छरर-छरर

सरर-सरर पानि कटइत गंगा मइयाक छाती पर आगू बढ़ल जाइ।

महेन्द्र घाटक जेटीसँ दू हाथ फराके जहाज ठरा गेलइ। कुली सब धमाधम कऽ मोसाफिरक मेलामे पहुँचल। उतरै खातीर लोक सेहो कावे कावे तइआर। जहाज एकभगाह भऽ गेलइ। हमरा डर भेल जे उलटि ने जाइ!

फूल बाबू फेनू एगो कुली केलइथ।

तीस-चालीस सीढ़ी टपि कऽ ऊपर महेन्द्रघाटक टीसन रहइ। तवरा उम्हर टमटम आ रिकसा ठाढ़। तहिआ साइकिल रिकसा नइ, हाथ रिकसा रहइ। आब ओ रिकसा उठि गेल छइ। ओइमे दुइए गो चक्का रहइ आर आदमी दूनू हाथें दूनू डंटाक छोर धऽ कऽ ओकरा घीचइ।

मालिक एगो रिकसावालाकें ठीक केलइथ।

मछुआटोलीक भीतर एगो छोटकिनसी गली रहइ, तहीमे डेरा रहइन। रिकसा बासाधरि आबि गेलइ।

डेरा ई फूलबाबूक असालतन रहैन। कहऊँ रहौथ, मुदा बासा ई बरोबरि रखइथ।

मकान छलइ बनिआकेर। आधा मे अपने रहए ओ। आधा लगओने छल भाड़ा पर। बीच आङनमे इनार तइपर सं छहरदेवाली। आधा इनार ओम्हर पड़इ, आधा इम्हर। दूनू दिसुका डोल बए दिन कुइआमे खड़ि जाइ।

भाड़ा रहइ दस रुपइआ महीना। दू टा कोठली, भनसा, पएखाना। कनी टा अङनइ, दू चपकी जोकर ओसारा। पुरान केबाड़ीवाला दुआरि। ऊपर खपरा। कोठलीक फरस हऽ पक्की, मुदा आङन कच्चिआ।

बर्तन-बासन सभ टा रहबे करइन। महीना भरिके चाउर-दालि-नोन-तेल मसाला आबि गेलइ। दू मोन जारनि। एक डाकी चिपड़ी।

भानस करऽ अबइत रहए हमरा। कनी मनी जे भाङठ छल से फूलबाबू अपनहि सिखा देलइथ। पथरकोइलाक आँच पर रान्हल दालि-भात हुनका बहि सोहाइ छलइन। सोहारिओ नहिए खाथिन। पनपिआइ मे चारिटा बिसकुट आर गिलास भरि गरम दूध। कहिओ कहिओ हलुआ से बनबाबइथ।

दोसरे दिन मालिक हमरा निकर आर हाफ कमीज सिआ देलइथ। केस छँटवा देलइथ नउआ सँ '''ललकी साबुन के टुकड़ी सँ माथ मलि-मलि नहैलिअइ। नइ ने मानलइथ! कहलइथ—ई पटना थिकइ, गाम नइ

भिड़इ। माथा के बगड़ेओक बनओने रहबे तऽ लोक बनडुल्लुक बुझतथ! सहरमे रहबाक छइ तऽ आदमी बनि कऽ रह!

मालिकक नगरि बसाकऽ एना मे ओइ दिन हम अपन मुँह देखल तऽ हमरा रङ्गरोहाना मोन पड़ल—एह ओ हमरा अइ सुन्नर कहाँ सँ आएल?... कनी गामक लोक बालचन केर ई मुरुत देखितइ!...

दू-चारि दिन धरि माए आ बहीन बड़ मोन पड़ए, तकरा बाद उदबेग कम होमऽ लागल।

नव देस, नव मुलुक। नव चेहरा, नव बोली-बानी। नव बेइवार, नव रहइस। लागए जे कोनो दोसरे संसार में आबि गेल छी। सहुरी काकाक मुहें सहरक कतेको गप सुनने रहिअइ मुदा ई अन्दाज कहाँ रहए? सहरक ई साँचा तऽ सपनोमे हमर मोन नइ देखने रहए कहिओ!

सुनने रहिअइ, सहरमे पइर रखितहि आदमीक मोन बदलि जाइ छइ। अपना घर-परिवार बिसरि जाइ छइ ओकरा। मुदा हमरा तऽ बीच बीच मे अपन घर आङन बेश मोन पड़ए। माए मोन पड़ए, मोन पड़ए रेबनी। चित-कबरी बकरी मोन पड़ए। बाड़ी महक छुड जिम्नड़, ओकरा कान्हर लतरल घेरा, एकचारी पर लतरल नेनाक लती, लोङिआ मिरचाइ केर बुढ़बा गाछ कोखन कोखन आङन मे झुलकी देनिहारि चिड़ी...एकएक कऽ सब मोन पड़ए। आर जोर-जोर सँ हम साँस घीचे लागी। खन बुढ़िया पोखरिपर सुरता जाए खन डीहके चउरी पर—अइ चउरी मे हमरा आउर केसउर उपाड़ी सँ ...अपना गामक बाध बोन मोन पड़ए; कलगमे नइ बुढ़बा किसुन-भोग पर मर्कट नाहड़' खर्कि मचाकि कऽ डीलवाली केलाइ से गाछ मोन पड़ए। रोगहा, चुनिआ, मुद्दा, नरेना, कुंजा, घुड़रा, मकराहा सन बढ़ारी इत्यादि आबए...

अइ सब सँ मोन भरिआए तऽ लहरटोली बला सड़कक कातमे कनी काल ठरा होइ। अवइत जाइत लोक कें देखिअइ। बाइसिकिल, मोटर आर टमटम आर टुन टुन बजइत हथ-रिक्सा। ई सब देखिअइ तऽ गामक सुरता नइ रहए।

काज बेसी नहि रहइ छल। बर्तन रातिए कऽ माँजि राखी। चौका सेहो रहुके कएल रहए। भोरे ऊठि कऽ चुल्हीमे आगि धरा दिअइ। दूध दऽ जाइ से अऊँटि दी। तहन अदहन चढ़ा दिअइ। एक कात भातक आर एक कात दालिक। फेर सनी तरकारी लऽ आबी बजार सँ। न बजइत बजइत भानस तइआर। साढ़े न धरि मालिक खा लइथ। दालि-भात-तरकारी चटनी, घी पापड़-अचार। दही दिन कऽ, राति कऽ दूध। दस बजे धरि ओ कउलेज चलि जाइथ। हमहूँ नहाइ-सोनाइ, खाइ-पीबी, चउका बरतन करी। नीक जकाँ दोबारा झाड़ि बहाड़ि दिअइ कोठरी आउरके। बारह बजइत बजइत फुरसति भऽ जाए।

बारह सँ लऽ के तीन बजे धरि बेस टहलान मारी। कहिओ कहिओ गोलघर दिस, कहिओ सिकरेटिरिएट, कहिओ जादूघर, कहिओ टीसन, कहिओ अस्पताल दिस। कउलेज दिस कहिओ नहि जाइ। मालिकक लाज हुए। मना तऽ नइ केने छलइथ, तइओ टहलइत-बुलइत काल ओ कहइँ देखि लइथ सँ लाजे कटुआ जाइ।

जहिआ नइ बहराइ तहिआ मकानक मलिकाइन-जोरे गप्प लड़ाबी। ओकर घरबला भोरे जे दोकान जाइ से निसोहॅड राति कऽ अबइ। ई मउगी हमरा मालिको सँ हँसी ठट्ठा करइन आर हमरो सँ करए। मालिको के पान खिआबइन आर हमरो खुआबए। दू टा बच्चा भऽ कऽ मरि गेल रहइ, बाद मे किछु भेबे ने केलइ। घर-आङनक ओगरदाहि लए बुढ़िया

मउसी कें रखने रहए। ओकरा मोने लइरिकास हम ओकरा संगहिं महतुत रहिलिअइ। मकानवाली के ओ बेमारी नहि छलइ जे बेमारी खवासिनिया के रहइ। नपकाड़ि पइर ई बवस्ले रहए। गप्प केनिहार केओ नहि भेटइ त हमरे सँ संतोख करए।

मालिक दू गो पइसा हमरा रोज दइथ। ई पइसा हम जमा केने जाइ। कथि में खर्च करितउँ ? तर-तरकारी आर दोसर चीज-बउस आनऽ काल एगो-आध-गो पाइ बंचिए जाइ, बीड़ीक खर्चा ओही में चलि जाए।

पान खाइत बड़की एना में कइएक बेर अपन मुँह देखी। सड़कक कतबहि में जतहि पानक दोकान ततहि एना टाङ्। जहाँ एना देखाइ पड़ए की हम ठमकि रही। कोनो ने कोनो लाथें ओहि अपन थोरें देखिली एना में।

चारि बजइ की केनू जुल्हाक आरती करऽ बैसी।

मालिक कहिओ कहिओ हलुआ अपनहुँ बनाबइथ। एक दिन बनविते काल अण्डा फोड़िकें पीअरका रस ओइमे डारि देलथीन से हमरा बड़ कोनादन लागल। मालिक कहलइथ—गाम पर नहि कहिहइन।

से किऐ ?

फूलबाबू कहलइथ जे मुर्गीक अण्डा अपना ओमहर बाभन नइ खाइऐ मुदा फाएदा बड़ करइ छइ। अङरेजी पढ़निहार इसकूलक छहरबेवाली छउँड़ि क कालेजक अङनइ मे पाएर रखितहि अइ सबकथुक चर्चा बर्चा सुनइ लगइ छइ। तकरा बाद केओ-केओ हमरे जकाँ दोगाबागी चहुबऽ लगइऐ ......देखितहि छैं.........।

सुभाव बेजाए नइ बूझि पड़ए। ओना हम हुनकर टहलुआ रहिअइन; मुदा एतबहुआक अनमना रोहो छलिअइन। हिन्दी अङरेजी बजइत मुँह दुखाए लगैन तऽ हमरासँ अपना भाखा मे बाजइथ। कहइथ—अही लेल

तऽ तोरा अनलिअए, टहल-टिकोरा लेल तऽ अहूठाम आदमी भेटिए जइतए। तोरा सङ्गे गप करइत रहइ छी तऽ बूझी पड़इए जे गामहिं छी......।

बाप किरांपन रहथीन। माय साहखर्च। बापक दिस सँ खर्चा खिलाबे सं भेटइन मुदा माए तुकाकऽ खूब देथीन। दुइए चारि दिन हम हुनकर गाम पर छुल देखइन, खेती तऽ थाह-पता नइ लागल, मुदा एतबा बूझऽ मे आबि गेल जे लगानी-भिड़ानीक बड़ जोर छइन। जर-जवार मे दुसाध, मुसहर, चमार, खतबे, धुनिआ, कुजरा आउरके छोट-छोट टोल रहइ। बन-बनिहार आइओ काल्हि पेट बेचने घुरइए, ताहू दिन पेट बेचने घुरए। भूखक लेल अतरी अँइठऽ लागइ तऽ बाबू भइआ सँ चारि पसेरी अन्न आ की दूगो रुपइआ कहैन गऽ। काज तऽ चला देथीन, मुदा पाछाँ आस्ते-आस्ते लोहू घींच लेथीन आर चमड़ी चिबाकऽ ढिङ्गी बना देथीन। चुनमू बाबू—जइसन नाम तइसन काम! फूलबाबूक बाबा कनइली राजक तसिलदार रहथीन। भागलपुर सं दच्छिन, बौंकादिस चाकरी करइत जिनगी गुजस्त भेल रहइन। जमाकऽ टाल लगा देने रहथीन। चुनमू बाबू दुर-दरखूतक बलें जमीन जाल खूब बढ़ा लेने रहइथ। धनीक चाहे हिन्दू रहओ, चाहे मीआ, चाहे अङरेज रहओ, चाहे जपानी- सब एके जातिक होइए। गरिबहोके हमरा जनइत एक्के गो जाति होइ छइ। चुनमू बाबूक भितरिया मारिसँ कते टा नहि, बाभनो कईएक घर तबाह भऽ गेल रहए। बेटा के पढ़बइ छलइथ से जज मजिस्टर देथीन।

मुदा अपने इच्छे तऽ सब किछु होइ नहि छलइ। बापक जे मोन रहइन ताही मोताबिक फूलबाबू तइआर होइतथीन तखन की छलइन ?

फूलबाबू भितरे भितरे कङरेसिआ भेल जाइथ छलइथ खूब एखबार पढ़इथ। लीडर आउर के लेकचर खूब सुनइथ। बरका बरका लीडर

गिलिफदार हुए आर माला पेन्हि पेन्हि के जहल जाइ। गान्ही महात्माजीक इहे हुकुम चलइन ! बाकी पुरबला चड़की मैदानसें कहिओ कहिओ भरी मिटिंग होइ। फूलबाबू बरोबरि मिटिंगमे जाथि। एक आध बेर हमहूँ देखऽ गेल होएब। बात किछु नइ बुझिअइ, ओते रास लोक कें जमा देखिकऽ अजगुत लागए।

कोट कमीच छोड़िकऽ मालिक खद्दरक कुर्ता पेन्हऽ लगलखीन। धोती, गमछी, अङपोछा, चद्दरि, गेरुआक झोरा......सब खद्दरक। जीअल-महीन जे डेगापर भेंट करै अबथ न ताहूमे आब देहबे लोकके बेसी देखिअइ।

भेसा-पोशाक देही टक बदलि गेलइन। माछ-मांउ आर अण्डा छोड़ि देलैथ। हमरा मालिकक ई रबताऽ देखि के दुख हुए। किछु कहइतहन से हिम्मति नहि। अहि झोंक मे फगुआ बितलइथ।

कहइतक पहुआ आर बरसइतो। मालिक बेर बेर फाटि गेलइन। ई देखि कें हमरा कोइ फाएदा। हुनका तऽ बापक चिट्ठी बरोबरि अबइन, मुदा हमरा नहि आबए माइकेर हालसमचार। गामक लोक ओना तऽ ने दुइओ पतिआनी लिखत, अइन कोनो राजा-रैब हेतइ तइलगे मोन पाड़त।

चारि मासक दरमहा पठा देने छलिअइ, आठ गो रुपइआ। चालीस दिनके बाद तकर रसीद ऐल। ओंठा-निशान हमर माइएके रहइ बूझऽ ओइपर, गवाही मे के दसखत केने रहइ से नइ बूझलिऐ !

चैतमे दू राति मालिक बासा पर नइ एलइथ।

पुछला पर कहला—दीघामे सदाकत आसरम छइ ओतहि रहि गेलिअइ। हीत-मीत लोकनि नहि मानलइन।

बड़का कओलेज सब मे पढ़ाइ कम होइ छइ, छुट्टी बेसी। बरख भरिमे पांचो मास फूजल रहइ छइ की नहि, से कहनाइ मोसकिल। फूलबाबू

अपन हुनू काज सम्हारइथ—पढ़बो करइथ आर कङरेसो करइथ।

गरमीक छुट्टी हेबालऽ रहइ। चारिए छ दिन बांकी छल हेतइ। मालिक भोरे सदाकत आसरम गेलइथ कहले रहइथ—साँझुक पहर घुरब, एखन हमरालेल भानस जुनि करिहऽ।

खिचड़ि आर आलुक सानना बनइलऊँ अपना लए। खेलऊँ आर टहलि बुलि बड़ बेर बितओलऊँ।

साँझखन सकाले चुल्हा धरा देलिअइ। बड़ मोनसँ सुनिगा आलुक तरकारी कैली, टमाटरके मिठका चटनी बनौली। हीङसँ दालि छौंकली। तीन बघिआन खिआकऽ दूध औंटली, अचार नइ रहइ, त मकानवाली सँ निमकी अनली।

आहि रे बा ! बारह ठोकलकइ मुदा फूल बाबू कहाँ एलइथ। घुरि घुरि कऽ हम सड़कक कात मे आबि ठरा होइ। पच्छिमसँ जे कोनो रिकसा अबइ तकरा गहिकी नजरिसँ देखी, बड़ अनदेसा हुऐ। हुऐ जे की भेलइन मालिक के !

बाट तकइत तकइत थिरहा टहकऽ लागल तऽ कोठरी मे आबि कऽ पड़ि रहलहुँ। के खाइए के पिअइए !

कखन कोना पचनी सुना गेल आ नाक बाजऽ लागल से नइ बुझलिअइ !

भोर मे महेन बाबू आबि कहलइथ—"मालिक त तोहर गिलफदार भऽ गेलथुन, माला पहिरि कऽ जहल गेल छथुन। एसगर कथीलए बासा ओगरबें चल, ता बरु हमरा ओतऽ रह गऽ। चीज-बउस अपनकोठरी मे बन्द रहतइन।'

महेनबाबू एतेबात इथके बेर बाजि गेलइथ आर कुरसी पर बइठिकऽ सिकरेट पिअऽ लगलइथ।

हमरा ई सब सुनिकऽ अकबक किच्छो नइ फुराइ।

सोलह-सतरह बरखक अवस्था छल हेत। महेन बाबू के हमर हालति देखि

कऽ कनोट भेल हेतइन। मालिकक जिलफदारी तऽ ओ जऽ नहि कहितइथ आबि कऽ तऽ कोना बुझितिअइ? एखनार लेखवार बन्द भऽ गेल रहइ आर हमरा तऽ पढ़ए नइ आबइ, कारी अच्छर महींस रहइ हमरा लेखेँ। तहन अतस बात नइ बुझने रहितिअइ तऽ दू-चारि दिन अबस्से अउनइतउँ।

बड़ीकाल धरि गुम्म रहलउँ। तहन कहलिअइन—सरकार, दरिभंगा-मधबन्नी दिस केओ गेनिहार होए आर ओहिँक चिन्हार रहए तऽ ओकरे संग हमरा देल पठा दिअ ...अइ ठाम असगरे हम कोना रहब!

अइपर ओ हसलइथ आर बाजला— धुर बताहा! तोरा लेखे जेहने फूलबाबू तेहने महेनबाबू। हमरो आडर धरेमे रहइ छिअइ, बोन मे वहीं रहइ छिअइ? मास दू मास मे मालिक जहल सँ बहरेबे करथुन, तो अनेरे अगुताइ छऽ।

महेन बाबूक ई बिचार चिरैता माछित तीत बुझना गेल। हम सोचली जे बाबू लोकनि बड़ा मतलबी होइ छथि। हिनक नोकर-चाकर भागि गेल हेतेन तेँ हमरा पर एतेक जोर दए रहल छथि, नहि तऽ मंगनी मे ककरा के अन्न-पानि देत छैक। तइयो हिनका थोड़िहठाम दस दिन रहि देखबाक चाही। एना एसगर गाँव जायब तऽ मलिकाइन खोदि खोदि कए सबटा हाल जानि लेतीह। ई सभ बात जखन फूल बाबूक माए-बाप सुनथिन तऽ हुनका लोकनिक मोन हरबड़ा जेतनि। मालिकक माए तऽ अन्न-पानि छोड़ि कए जान देबापर उताह भए जयथिन्ह। ई सब बहन्च हमरे माथ पर पड़त! बाप रे! ई तऽ भऽ नहि सकैत अछि।

मोने मोन हम निश्चय कयलहुँ जावत फूलबाबू जेल सँ छूटि कए नहि औताह, तावत तक हम गाम नहि जाएब। महेन बाबू ठीके कहैत छथि, जेहने महेन बाबू, तेहने फूल बाबू। बाजब-भूकब, रहनाई सहनाई रंग-ढंग सब एके

छैन्ह। कहनाई कठिन छल जे दुनू मे के एनैस देताह आ के बीस। तऽ बुझ-लइ हो भाई! जल्दी-जल्दी वस्तु-जात ठीक कैलहुँ आ बंगला-खिड़की बढ़िया जकाँ बन्द कऽ देलियैक। अपन कपड़ा-बिछौना, सिलेट-पिनसिल निकालि कऽ बाहर राखल। मकान मे ताला ठोकि महेन बाबूक संग चलि अएलहुँ।

महेन बाबू बड़ा खुशी भेलाह। घरक विषय मे बहुत बात ओ बाटे मे हमरा सँ पूछि लेने छलाह। बाप मरि गेल। दाइ (आजी) मरि गेल। माए आ छोट बहिन अछि। दू-तीन बरख तक महींसक चरौनी कैलहुँ। ई सब बात महेन बाबू हमरा सँ बूझि लेने छलाह।

शहरक बाहर बाँकीपुर मैदानक लग एक बड़काटा बंगली लाल रंग मे रंगल छलैक। ओ सोझे हमरा भीतर लऽ गेलाह। हमर मलिकाइनक उमिर सँ बेसी नमहर महेन बाबूक माए पीढ़ी पर बैसल तिल मे सँ कंकड़ी बिछैत रहथीन। महेनबाबू हमर कान्ह पकरि माए, के कहलथिन—माए, ई फूल-बाबूक नोकर छैन्ह। माँजी हमरा एड़ी सँ शिखा धरि देखि बजलीह—फूल बाबूके ई कि सनक असवार भऽ गेलैन? गाँधीजी नीक परक नेना सबके बिगारबाक ठीका लए लेलैन्ह अछि कि? पढ़ब-लिखब छोड़ि कालेजक विद्यार्थी सब आब नूने बनौते कि?

एते बाजि ओ दुनू भगवानक दिस हाथ उठा कए बजलीह—हे दीना-नाथ! आहाँ एहि नेना लोकनि कें बुद्धि दियौन।

नमहर मकान रहैक। बड़का-बड़का बारहेक कोठली छलैक। आँगन मे लताम, हरसिंगार आ नेबोक भाड़ छलैक। हम ओही भाड़ सभक दिस टकर-टकर तकैत छलहुँ कि माँजी मनरिया कें सोरपारि कए कहलखिन—बाबाजी, फूलबाबूक नोकर आएल छैन्हि एकरो भानस हैतैक।

हमरा महेन बाबू लऽकऽ अपना कोठली मे अएला। अपन कोट उतारि

खुट्टी पर टाँगि देलखिन। कुर्सी पर बैसलाह आ इशारा सँ हमरो बैसए कहलनि। हम नीचा पलस्तर पर बैस गेलहुँ। कोठली बढ़िया आ नमहर छलैक साफ सुथरा। एक पलंग, कुर्सी, टेबुल, किताब सँ भरल रैक आ कपड़ा टाँगए बला खुट्टी। पलंग पर चनवा जकाँ ऊपर टाँगल मुसहरी, पैर पोछक पापोश। ई सब बड़ बढ़ियाँ लागल।

महेन बाबू बंगाली छलाह। हमरे मालिकक संग पढ़ैत रहथि। दुनूगोटा मे बड़गाढ़ दोस्ती छलैन। मालिक के घर सँ चूड़ा, घी, अचार, सब आएल रहथिन ताहि मे सँ आधा महेन बाबूक घर पठा देने रहथिन। महेन बाबूक माए-बाप सब हमरा मालिक कें चीन्हैत छलखिन। ओ लोकनि फूलबाबू कें अपने बेटा जकाँ बुझैत छलखिन।

बंगाली लोकनिक परिवार बड़ भरलपूरल रहैत छैक। हुनका लोकनिक घर-गृहस्थी, खेनाई-पिनाई, ओढ़ब-पहिरब, सब देशवाली (बंगाल सँ पश्चिम) लोकनि सँ भिन्न। महेन बाबू आठ भाई-बहिन छलाह। एकर अतिरिक्त घर मे माए-बाप, विधवा मौसी, दू नोकर आ एक मनसिया, जकरा सब बाबाजी कहि कऽ सोर पारैत छलैक। एक बड़का इस्टेट छलैक ही भाई! महेन बाबूक पिता सिकरेटरियट मे अफसर रहथिन। आठ सौ रुपैया महीना पबैत छलखिन। बारह सालक पुरान नोकरी छलैन। बंगलाक पाछू मे करीब दू बीघा खाली जमीन भेटल छलैन। आगा हरियर घासक काटल-छाँटल छोट-छिन मैदान-नीमक दू टा झूमैत झमैत पुआन गाछ। काठक छोट टा फाटक। साहेबक नाँव पट्टी पर लिखल रहैन। हता में ढुकब सँ पहिने ओह पट्टी पर तोहर आँखि पड़ि जैतह।

हुनका ओहिठाम चारि दिन रहिकए हमरा मोन के बड़ संतोष भेल। महेन बाबू हमरा अपन चाकर बना कए रखने छलाह। केओ बिरोध नहि केलक। नोकर के ओ मना कऽ देने छलखिन—आइसँ हमरा कोठली मे बलचनमा झाड़ू देत। हमर चाय आइसँ बलचनमे अइ टेबुल पर आनिकऽ राखत। हमरा धोती कें बलचनमे चुनिआयत। कहबाक तात्पर्य ई थिक जे सिनेह मे महेन बाबू हमरा सराबोर कऽ देलनि। मुदा हौ भाई सब, एतेक पछ्हो भेला हम अपन फूलबाबू कें कोना बिसरि जैतहुँ।

फूल बाबू बड़ा मोन पड़ैत छलाह। एलगर मे कतेक बेर करेज फाटल, कतेक बेर आँखि भरि आएल—से कहि नहि सकैत छीअ। ताइ दिन गाँधीजीक बड़ जोर छलैन। धड़-पकड़ जारी छलैक। सरकार बहादुर दिस सँ कानून छलैक जे नून तक नहि बना सकैत अछि। गाँधी महतमा सरकार कें झुकबऽ चाहैत रहथीन। अँगरेजी सरकार अपना जिद पर अड़ल छलैक। कलकत्ता बम्बईक सेठ साहूकार लोकनि सेहो भीतरे-भीतर गाँधीजीक पच्छ लेत रहइन। हुनका लोकनि के साफ-साफ देखऽ मे अबैत छलैन जे सोराज भेला पर सबसँ अधिक नफा हुनके लोकनि कें हैतैनि। सरकारक झुकला सँ सोराज आ सोराज भेला सँ बेसी सँ बेसी कल-करखाना फोलबाक अवसर, सब हुनका लोकनि कें स्पष्ट देखाइत छलैइन। अखन जे देस के दूहि कऽ अङरेज लऽ जाइत अछि से सोराज भेला पर सब हमरे खजाना मे आबऽ लागत...सन तीस-बत्तीसक जमाना रहैक। गाँधीजीक हुकुम सँ बाबू लोकनि गिरफ्तार भए रहल छलाह। हमरा फूल बाबू के सेहो गाँधी महतमाक हवा लागल रहैन। मुदा हमरा बूझऽ मे नहि अबैत छल जे कियाक लोक बेकार अपना के पकड़बैत अछि। ने मारि-पीट, ने गारि-तारि आने झगड़ा-झंझट। फेर किया पुलिस ककरो पकड़ि कऽ लऽ जाइत छैक। सरकार पागल ने तऽ भऽ गेलैया। हम एक दिन महेन बाबू सँ पुछनो कैलियनि आ उत्तर मे ओ बहुत बात कहलनि मुदा हौ भाइ हमरा बूझऽ मे किछु नहि आएल। बेर-बेर

हम इयाह सोचैत छी जे बाबू के जखन गहले जयबाक छलैन तखन हमरो नेने जइतथि। ई जे दस-दस, पाँच-पाँच आदमी कुर्त्ता, धोती, टोपी पहिर कऽ गरा मे माला पहिरने चढ़इआ छथी जकाँ नून बनाबऽ जाइत रहथि तऽ हमरा ई बाबू ओकनिक एकटा खेले बुझना जाए। अहुना कहियो ककरो लोराज भेटलेबा।

अधिक काल तक गुम-सुम रहबाक अवसर हमरा महेन बाबूक ओतऽ कहिओ नहि भेटल। हमरा उमिरक बच्चा सँ हुनकर घर भरल रहैन अपना भाए-बहिन मे नमहर महेने बाबू छला, भाए लेसर आ चारिम बहिन उमिर मे हमरे एहेक टा रहैन, चारिटा छोट-छोट। ओ कहिओ हमरा उदास नहि रहए देलनि। बड़ा बाबू आ अम्माजी सेहो हमरा पर नजरि रखैत रहथि। पन्द्रह पन्द्रह दिन पर हजाम अबै आ बच्चा सबके केश काटि जाइ। शनि दिन कऽ धोल कपड़ाक मोटरी लऽ कऽ धोबी अबैक। भोजन मे दू एक टुकड़ी माछ नित दिन अवश्य भेटि जाए। हम नहि चाहैत रही कि चाय पीबाक लति पड़ए मुदा महेन बाबू हमरा जबरदस्ती पिअबैत छलाह।

आर हमर काजे की रहए? महेन बाबूक थोड़ बहुत सेवा टहल आ साँझ कऽ छोटका खोखा बाबू के स्वरक पहिया बला छोटका गाड़ी मे घुमा लेनाई। बड़ा मौज छल। भरि पेट खेनाई आ राति कऽ सुतनाई। हमर ओ छोटकी मलिकाइन आ एहि अम्माजीक बीच अकास-पतालक अन्तर। एतए हमरा केओ कहियो मारि नहि देलक। केओ कुत्ता सुअर नहि कहलक। केओ कान नहि अंइठलक। उनटे एतए महेन बाबूक छोटकी बहिन सब नगर आ कनेरक झुमका सँ हमरा कानक साज सिंगार करए। एक बार कहिअ, कहबहक तऽ नइ ककरो? नइ कहबहक तऽ कहबऽ। अच्छा तऽ सुनह। हमरा सँ साल-छह मासक छोट छल। अनीता नाँव छलै ओकर।

महेन बाबूक छोटकी बहिन एक बहिन आ दू भाई ओकरा सँ नमहर रहै। पिंडश्याम गोल चेहरा, बड़का-बड़का आँखि, चाकर कपार, पातर-पातर ठोर वाली छोट-छिन मासुमि छल ओ। नाचगान सिखाबक हेतु हुनका ओहि-ठाम मास्टर अबैत छलखिन। पढ़ाबक हेतु तऽ फराके मास्टर रहबे करैक।

बंगाली लोकनि बड़ा मौजी होइत छथि। खाली खेब-पीब, पढ़ब-लीखब आ रूपैए पैसा नहि, नाच-गान आ राग-रंग सेहो चाही हुनका लोकनि कें। ठीके ने छइ हौ भाई केओ अगर ठेकान सँ जिनगी बिताबे तऽ कि हर्ज? तऽ हौ भाई, ओ अनीता खूब बढ़िया नचे। गला सेहो ओकर बड़ मीठ रहै आ हमरा तऽ खूबे माने। किछु दिन तक तऽ हम ओकरा सँ दूर भगैत रहलहुँ। मुदा देखल जे बेचारी चोराकऽ हमरा लेल बिस्कुट आ चोकलेट लबैत अछि। एक छोट-छिन ककबा आ एक ऐना कतौ सँ आनि कए ओ हमरा देलक आ जलहन दऽ कऽ कहलक दादाक (महेन बाबू) संगे रहैत छें। अहि ठाम एकेकटा ऐना राखल छैक। कहियो-कहियो ओहि मे अपन चेहरा तऽ देखि लेल कर।

किया, कि अछि हमरा चेहरा मे? हम जे ई पुछलियै तऽ अनीता हमरा दहिना गाल मे एक थप्पड़ मारि कहलक—रहतो की? तोहर केश बहुत बढ़िया छौक। सोन सन केश सभ के नहि होइत छैक। एहि केश मे ककबा धरए फिरबाक चाही। कनीकाल बाद फेर बाजल—हम राधा बनब आ तों कृष्ण बनिकऽ हमरा संगे नचबे?

लोक देखत तऽ की कहत?—हम ओकरा दिस देखि कए कहलियैक।

हमरा कान मे ओ फुसफुसा कऽ कहलक—दुपहर मे कहाँ केओ रहैत छैक! आ नाचऽ बेर मे घुंघरू नहि पहिरब। ने घुंघुर रूनुनुरक आवाज हेतै आ ने केओ बुझतै—। एकरा बाद अपन दुनू हाथ हमरा कन्हा पर राखि मधुर

इन्टरमे अनीता हमरा सँ ई कहा छेलक आ ओहि दिन तऽ नइ छुआ ओकरा तीन दिन बाद अवसर भेटल आ हमरा लोकनि खूब नचलहुँ। नाचऽ बजाबऽ तऽ हमरा अबैत नहि अछि, तखन अनीताक हठ छलैक से हो भाई हम ओकर बात राखि देलियैक।

फूल बाबू फागुन मे छूटि अएला। महेन बाबू फुलवाड़ीशरीफक कैम्प जेल मे जाकऽ हुनका सँ भेंट कऽ आएल रहथिन। हमरो कुशल-क्षेम कहि आएल रहथिन; छूटिते ओ सोझे महेन बाबूक घर पर पहुँचलाह।

अपना मालिक के देखिते हमर मोन भीज गेल। ओ दाढ़ी उठाकऽ हमरा आँखि मे देखए लगलाह आ पुछलनि—केना रहै छहो हे बलचनमा? हमर आँखि भरि आएल। कहि नहि सकैत छी जे हमरा खुशीक नोर छल अथवा पहिलुका वियोगक।

फेर ओ अपना गामक दिस नहि गेलाह। महेन बाबू अपन मात्रिक मुंगेर गेल रहथि। ओही दिन साँझ कऽ मालिक अपना डेरा मे चलि अएलाह। हम देखल जे मालिक बहुत बदलि गेल छथि। साँझ-प्रात गाँधीक भजन गबैत छलाह। जेले सँ गीताक एक छोट पोथी लए आएल छलाह। किछु दिन बाद बखरा मे रहए वला एक चरखा खरीद लएलाह। खेन-पिन सेहो हुनकर बदलि गेल छलैन। मसाला मिरचाई किछु ने। सरकारी उसीन कऽ खाइत छलाह। एक दिन देखल जे कटोरी मे गहूम भीजऽ देलखिन। हम तऽ बुझिए नहि सकलियै जे एकर कि हेतैक। दोसर दिन छानि कऽ गहूम के भीजल अंगपोछापर पसारि देलखिन। प्रातःकाल गहूमक दाना जखन अंकुरा गेलैक तऽ फूलबाबू एक-एकटा कऽ खएलनि। कहियो उसनल आलू, पियाज आ गुड़े पर रहि जाइत छलाह। हमरा तऽ हो भाई अन्देशा भऽ गेल जे बाबूक मिजाजे सनकि गेलैन अछि।

कॉलेज सँ नाँव कटि गेल रहैन। गाँव-घर जएबाक तऽ नहि मुदा दरभंगा जाए कांग्रेसक काज करबाक विचार करए लगलाह। महेन बाबू बीच-बीच मे आबथि आ दूनू मे देर-देर तक गप्प होइत। हम उल्लू जकाँ हुनका लोकनिक बात सुनी। अपन मालिक आ महेन बाबूक कृपा सँ अक्षर मे मात्रा लगेनाइ आब हम सीखि गेल रही। कऽ टऽ कऽ बच्चाक पहिल पोथी हम पढ़ए लागल रही।

फूल बाबूक मोन पढ़ाई सँ उखड़ि गेल रहैन। माए बापक डर आब हुनका नहि छलैन। ओ महेन बाबू सँ एक दिन साफ-साफ कहलखिन—हो भाई, हमरा सँ ई सब नहि हेतइ। घरक लोक सब हमरा वकील बनाबए चाहैत छथि। वकालत मे बात-बात मे झूठ बाजए पड़ैत छैक। आब कोनो दोसर-तेसर नोकरी सेहो हमरा सँ नहि हेतै। एतेक जमीन अछि जे हमर माए बाप भूखे नहि मरताह। अस्तु अपना देशक सेवा करए दऽ। तों बलिस्टर बनबऽ, विलायत जेबह। तोहर रस्ता दोसर छह आ हमर दोसर।

पहिला दू मास मे हमरा माए के नाँव पाँच-पाँच रुपैयाक मनिआर्डर पठौने छलखिन। जेल सँ अएलाह तऽ पाँच रुपैया फेर पठा देलखिन।

एकदिन भोरे उठि हमरा सँ ओ कहए लगलाह—बलचनमा, महेन ओहि-ठाम नोकरी करबे? हम तऽ पढ़ाई आब छोड़ि देल। दरभंगा समस्तीपुर, मधुबनी, मुजफ्फरपुर, पटना जतए कांग्रेस पठाबैत ओतइ रहि कऽ काज करब। आब हमरा नोकर नइ चाही। गाँधीक हुकुम छनि जे अपन नदी सेहो अपने साफ करए। अपन कपड़ा अपने साफ करए। अपन भोजन अपने बनाबे।

हम पहिने सँ बुझैत रही। कनीकालक बाद हम कहलियैन—चारि-पाँच मास भए गेल। माए मोन पड़ैत अछि। घर जाए चाहैत छी। माए के विचार हेतैक तऽ फेरो पटना आयब। अइ पर ओ कहलाह—तऽ चल हरिभंगा तक संगे। ओही दिन रातिक जहाज सँ हमरा लोकनि देशक (गाँव) दिस बिदा भेलहुँ।

३

हमर छोटकी बहिन रेबनी चौदहम बिता कऽ पन्द्रहम् मे पैर राखि चुकल छलि। चेहरा-मोहरा खुलि आइल रहै। जवान भऽ रहल छलै। दुरागमनक मेह ने बैस छै! हमरा समाज मे बिवाह पर ओते ध्यान नहि देल जाइत छैक जतेक दुरागमन पर।

हमर मोन रहए जे रेबनीक दुरागमन भऽ जाइक। मुदा हमर माए नहि चाहैत रहैक। ओकर विचार छलैक जे रेबनी अखन नेना अछि। दू-तीन बरख आरो नइहर मे खेलि-खा लिए, फेर तऽ जिनगी भरि गिरहस्तीक पहाड़ माथ पर ढोबाक छैहे।

माए जे एना सोचै तकर एक दोसरो कारण रहै। बात ई रहै जे हमरा लोकनि ओहि छोट परिवार मे सब मिलाकऽ तीनिए गोटे रही; खाऽ दऽ कऽ हम, रेबनी आ माए। हम सात मास पर देश मे रहि आएल रही। रेबनीए रहै जकरा छाती लगाकऽ माए सुतैत रहै। रेबनीक दुरागमनक बाद माए एसगरि भऽ जाइत। हमर रहनाई आ ने रहनाई एके रंग कारण माएक देख-रेख, हिफाजत, खबर गिरि आ परवरिश तऽ हम कऽ सकैत छलियै मुदा रेबनी जकाँ ओकर सहेलीक अभाव हटेनाइ हमरा बूताक बाहर छलै।

हमरा एतबे चिन्ता रहै जे जमीन्दारक गाँव छैक। ई लोकनि लुच्चा होइत छथि। अखुल-तहसीलक काज मुनस्सा बराहिलक माथ, घर गिरहस्तीक

देख भाल छोट भाईपर रोशा टहलक काज बहिया खबासक माथ, शेष बचलाह बेटा नाती, भाई-भातीज, आ सार-सरबेटा से बैसल-बैसल ताश पीटता, शतरंज खेलता, शहर जाऽ कऽ सिनेमा देखि औताह, बेकार मोन शैतानक घर। खेत पिन आ आरामक कमिए नहि, काज कोनो करताह नहि ककरो बेटी सयान भेलै नइ कि निशाना लगाबए लगैत छथि। ई नई कि बहिन-बेटी सभक एके रंग होइत छैक। अपन इज्जत आबरू जे सम्हारे तऽ दोसरो के नीक होएत छैक। मुदा हो भाई! जिनका लोकनि कें धन होइत छन्हि से निरट आन्हर होइत छथि। अपन आन किछु नहि सुझैत छन्हि।

आ हम तऽ गरीब ठहरलहुँ। हमरा लोकनिक लाश आर होइते कि अछि। कमाए-खटऽ लेल ई दुनू हाथ, माए बहिन-बेटीक इज्जत आबरू, सैह ने हमरा लोकनिक धन अछि। तोही कहऽ, हमरा लोकनि एकरो रक्षा नहि करी तऽ ई जिनगी कोन काजक।

हमर गाँव जमींदारक गाँव छल। बड़का घरक कि जवान आ कि बूढ़ सभक आँखि पाप मे डूबल रहैत छैक। दुरागमनक बाद केओ नवकनिया ककरो घर अबै तऽ एहि लुच्चा लोकनिक आँखि ओकरा घोघक चारूकात नचैत रहैत छै। जाबत तक आप-पोन दृष्टि सँ देखि ने लेताह ताबत एहि बदमाश लोकनि कें राति मे निन नहि होतैन। कतेक बेरतऽ एहन भऽ जाइत छैक जे जकरा देखए लेल बाप हरान तकरे लेल बेटा परेशान। ताइदिन मालिक सभक राज रहैन। हुनका लोकनिक खिलाफ केओ अपन छोटको आँगुर ने उठा सकितइ। ककरो इज्जत आबरू के बेदाग रहए देब हुनका लोकनि के सह नहि छलैन।

हम नई चाहैत छलहुँ जे हमरा बहिनक शरीर पर ओहि लुच्चा लोकनिक हाथ पड़े। हम नइ चाहैत रही जे हमर माए अपन बेटीके आमदनीक साधन

बनावे। गरीबी नरक छइ हो भाई! नरक चाउरक चारि दाना छीटकऽ बहेलिया जेना चिड़िया के फसबैत छैक ओहिना ई धनवान मरद् लोकनि स्त्रीगणके फंसा लेत छथि। हुनका लोकनि के पास धनो होइत छैन्ह आ बुद्धिओ। हुनका लोकनिक लीला अपरमपार थीक। नम्हर खनदानक अबारा सँ अबारा लोक पण्डित आ पुरोहित सँ भलमनसाहतक पदवी पाबि जाइत छथि।

से हो भाई! हम चाहैत रही जे रेवनी आब अपना मरद के संग रहे। बाबू लोकनिक एहि बस्ती मे अपना बहिन के रहनाइ हमरा पसीन नहि छल। छोटका मालिक आ मझिला-मालिक आ ओतर पहीक बाबू बबुआन ककरो पर हमरा भरोसा नहि छल। आ आब तऽ हम पटना देखि आएल रही। महेन बाबू कि राजा नहि छलाह? हुनका ओहि ठाम कि सुन्दर स्त्री-पुरुषक कमी छलैन? ओहन जगह पर रेबनी के चारि-छह मास रहि जायब हमरा नहि अखरइत। महेन बाबूक घरक लोक सब नीक नजरिक छलाह। मुदा एहिठाम महेन बाबूक परिवार हमरा कोन काज अबैत! एत तऽ छोटका आ मझिला मालिक रहथि। मलिकानक वैह पट्टी रहैन। हीरा बाबू, कुन्चन बाबू, मानिकजी, बचोलबाबू, लालसाहेब—मालिकक ढाका भरि साहेबजादे रहथि। एक सऽ एक शैतान। एक सऽ एक मजनू। इतऽ भऽ नहि सकैत छलै जे हमरा बहिन पर हुनका लोकनिक नजरि नहि रहल होनि।

हमर माए ई बात नइ बुझै, ओकरा मालिक सब पर बड़ भरोस छलै। समझैला सँ ओ एतबे कहइ, पानि मे रहि कऽ मोहि सऽ झगड़ा? जिनका लोकनिक ऐंठ खाकऽ तों एतेकटा भेलेहे हुनके लोकनिक विषय मे एहन-एहन बात सोचैत छे? अधरम हेतौ रे बलचनमा, अधरम। भगवान बिगड़ि जेथुन। शहर जाकऽ इयाह विद्या सीख एलेहेंऽ। तोहर बाबा-आजा तऽ सेहो हिनके

लोकनिक ऐंठ खाकऽ फेरन-फारन पहिर कऽ जिनगी बिता देलखुन, एहन उद्दन्त नइ बन बेटा।

हमर माए अहिना सोचैक। छोट जातिक ओतर स्त्रीगनक सेहो मालिक लोकनिक विषय मे एहने किछु विचार रहैक। खसल अवस्थो मे तऽ ओ लोकनि मालिके छलाह। मालिक लोकनि राजा होइत छथि आ राजा भेलाह भगवानक अवतार। हुनका लोकनिक खिलाफ के किछु सोचि सकैत छल?

मुदा सतति हमरा बुझैबाक फल ई भेल जे माए किछु सोचबाक हेतु मजबूर भेल। ओ राजी भऽगेल जे रेबनीक दुरागमन कऽ देल जाइ।

वैशाखक मास रहैक। ओइ साल आम नहि फरल रहैक। आब हमरा पूरा अनौरी भेटऽ लागल। कच्चा जोख मे पूरे चारि सेर धान हमरा अनौरी मे जाहि दिन माए के भेटलैक ताइदिन ओ आनन्दक धार मे बहि गेल। एहि दुखिया भिखमंगी कें ओही खुशी मे ओ आधा सेर धान कऽ देलकैक। ओइ राति जखन हम खाए बैसलहुं तऽ बड़ा सिनेह सँ माए हमरा पंखा हौंकऽ लागल। ओकरा नजरि मे हो भाई आब हम पूर्ण आदमी भऽ गेल छलहुं। छलहुं ने?

हमरा ओइठाम छोटका जाइत मे मड़ुआक बड़ आदर छैक। रहियो-कहियो बोनि मे धानक बदला लोक मड़ुए के पसीन करैत छैक। अस्तु गरीब के जे थोर बहुत उपरारि जमीन होइत छैक ओइमे ओ मड़ुए रोपनाइ पसीन करैत अछि। वैशाख मे पानि पटा-पटाकऽ मड़ुआक बीआ तैयार करल जाइत छैक। ओकरा नितदिन पाइन चाही, बीत-डेढ़ बीतक भऽ गेला पर मड़ुआक बीआ उखाड़ि लेल जाइत छैक। फेर ओकरा जोतल आ भुरभुरी माटिवला भीजल खेत मे रोपल जाइत छैक। मड़ुआक श्याम-सलोना डाँट-पात सँ लहलहाइत खेत तों कहीं देखने छह। नहि देखने छह तऽ देखि अबिहऽ

सेया सोन हरिअर भऽ जइतइ ? धानक हरिअर डाँटिक अपन फराके शोभा छइ तऽ साँवलिया बिहारी मड़ुआलाल के अपन फराक।

घरक पाछू मे हमरा थोरेक जमीन रहइ। अइबेर हम अपने मालिकक पोखरि सँ पैल भरि-भरि कऽ उपलौं। हमर बाबू सेहो अहिना पानि भरि-भरि कऽ मड़ुआ-पटबैत रहथि। सीक पटइ सँ पानि भरबाक अवसर अइ सँ पहिने हमरा कहियो नइ भेटल छल, तइयो उत्साह जोश आ उमंग क ओइ बेर मड़ुआक खेती हम कएलौं से देखिकऽ लोक सब दंग रहि गेल। एमहर कनेक थकावट बुझाएल तऽ बीड़ी ठानि लेलहुँ। बीड़ी पीबाक ई हिस्सक पटना मे लागल रहे। थकला पर बीड़ीक एकाध दम बड़ नीक लगै छइ हो भाइ ! आ फेर हमर तऽ ई हाल अछि जे दू दम खिचलौं कि फेर मिझा देल आ ओइ अधजर बीड़ी केँ कानपर खोसि लेलहुँ। तीन बेर मे हम एक बीड़ी खतम करैत छलहुँ।

ओ हमर उपजाइल पहिल फसल छल। डेढ़ कट्ठा खेत मे ६ पसेरी मड़ुआ भेल छल। अपन मेहनतिक फल केहन मीठ होइत छइ। अपन उप-जाइल मड़ुआक रोटी सँ पेट तोहर भलेही भरि जाय, हियाब नहि भरतह तोहर, हँ !

मड़ुआक बाद धान रोपबाक दिन अएलै। मालिकक खेत मे दिन भरि हम धान रोपैत रही आ घरक सब काज माए आ रेवती सम्हारे। थाकल-माँदल, मेहनति सँ चूर-चूर जखन साँझ कऽ हम घर आबी तऽ घर मे भोजन तैयार पाबी, दुपहरक भोजन मालिकक ओत सँ खेते मे पहुँचि जाइत छल—दालि, भात आ अचार। धनरोपनीक दिन मे ई लोकनि खेतक जनके भोजनो करा दैत छलथीन। अइमे दया-मयाक कोनो बात नहि, हुनका लोकनिक अपन स्वारथ काज करै छैन। अपन-अपन खेत पहिने तैयार करा लेबाक फिकिर पड़ल रहैत छैन। दूर दूर सँ जन बजाओल जाइत छैक। सबके बब्बा-दादा, कका कहल जाइत छै क। सुगा, राजा आ मुन्नाक बोली देल जाइत छै क। पूरा बोनि आ एक बेरक भरि पेट खेनाई दऽ कऽ सब अपन-अपन खेती करैत छथि। ओइ साल पहिल बेर हम पूरा बोनि पर धनरोपनीक काज कएने रही। छोटकी मलिकाइनक किछु दिनकलेल नैहर गेल रहथि। नोकरी छोड़ि कऽ मालिक घर बैसल रहथि। खेतीक काज मलिकाइनक भाई-देखैत रहथीन। मालिक बाबू दिन भरि किताब आ हरमुनियम मे डूबल रहथि।

माए हुनका ओइठाम घरक काज पहिने जकाँ अखनो करैत रहै—बासन धोनाई, पानि भरनाई, झाड़ू-बारहनि देनाई, नीपब-पोतब, चुल्हा जरा कऽ भानस चढ़ा देनाई इत्यादि सब काज छलैक। काज बेसी नइ, मुदा लपटोनी बड़ छलै। लपटोनी माने बुझलहक की भाइ ? नइ बुझने हेबहक। हौ भाई एक होइ छइ काज लेनाई---चटसँ कहलहुँ आ पट सँ काज भऽ गेलैक। दोसर होइ छइ घिचोर-पिसीर कएनाई। घिचिर पिचिर माने होइ छइ अपनो झंझट मे पड़ल रहनाई आ दोसरो के ओझरोने रहनाइ। ने अपना समयक कदर आने दोसरक। देहात मे जे नम्हर लोक कहबैत छथि, हुनका ओइठाम ने काजक मूल्य आनइ कमासुत भऽनक। हमर बाप-दादा लोकनि दू-दू पहर बैस कए मालिकक आँगुर चटकबथिन। मालिकक छोट छिन नेनाक पैर धोअऽ मे हुनका लोकनि के कतेक घटा लागि जाइत छलैन। बूढ़ा मालिक हेतु तमाकुले चुनाबऽ मे आधा पहर लागि जाइत छलैन। सुनै छी जे हमर दादा बहुत बढ़िया खवासी करैत छलाह। अपना मालिकक धोती के ओ एहन मेहो कऽ चुनिअबितथि कि केओ धोती के फूकिरइ तऽ सर सँ उड़ि जाए आ फेर जहिना के तहिना बैस जाए। मालिस ओ एना करथिन कि पागल सँ पागल आदमीक आँखि पर नीन सवार भऽ बैसनि छुड़ी

बनाबऽ मे दस कोस तक हुनकर यश रहैन । मुदा हो भाई ! हुनकर तरहत्थीक सब रस चाटिकऽ मालिकक तरबा तक गुलाब बनल रहल हैनि, अपन बाल-बच्चा हुनकर शाइते कहियो भरि देह कपड़ा अथवा भरिपेट भोजन कएने हेतैन । तीन पुरखाक हाल तऽ हमहू कहि सकैत छिअऽ । मालिकक ऐंठक गुन गबैत आ हुनका लोकनिक बिकट-सँ-बिकट गारि के परेम-भाव सँ सुनैत हम अपना दादी कें देखल । राति-दिन सेवा करिते रहलइ । पाव-आध पाव खुद्दीक लेल हमर माए कोना रिरिआइत घुमै से बिनरक बात छइ ? आ अपना बचपनक थोड़ बहुत हाल हम कहिए देने छिअऽ । आब तोंही कहह जे हमर तीन पुरखा कीन काज अएला । मालिकक लेल जीला आ मालिकक लेल मरलाह । शहर मे देखलिऐ केहन फुर्ती सँ लोक काज करैत अछि, केना एक दोसरक मेहनति आ लगनक हुनका लोकनिकें ध्यान रहैत छन्हैन । आह, तीन पुस्त पहिने जे आदमी कलकत्ता टाटानगर गेल से ओहे बसि गेल । ओकरा लोकनिक बाल-बच्चा सब पढ़ि लीखि गेलैक अछि हो भाइ, नीक-निकुत पहिरैत खाएत अछि । सब, कारीगर, मिस्त्री, फोरमैन आदि बन गेलै । आ सात पुस्त हमरा ओइ गाँव मे रहैत भऽ गेल, फटीचरी मे कोनो फर्क नहि पड़ल । दादी के मुँह सँ सुनने छी, हमर पुरखा पहिने पनिचोभ मे बहिआ-गिरी करैत रहथि । हमरा परदादाक परदादा कें ओहिठामक एक जमींदार दहेज मे जमाइक संग कऽ देने रहथिन । तहिया सँ लऽकऽ ई सातम पुस्त बीत रहल अछि । दुनिया जहान बदलि गेलैक अछि । मालिक लोकनिक दशा बदलि गेलैन अछि । हमरा लोकनिक गुलामी पर काफी असर पड़लैक अछि मुदा अखनी तक मालिक लोकनिक रहन-सहनक ढंग रहलेन कि राति दिन हमरा लोकनि हुनका पाछाँ नांगरि हिलबैत फिरैत छलहुँ । काज ओतेक नहि जते कि

खुशामद । हमरा लोकनिक मुँह सँ दिन मे पचास-पचास बेर मालिक-मालिक, सरकार सरकार, हजूर-हजूर सुनऽ मे जानि नइ बाबू लोकनि कें की रस अबैत छलन्हि । आ माएक तऽ किछु पूछह नइ, ओ तऽ बात-बात मे मलिकाइन-मलिकाइन, सरकार-सरकार रट लगौने रहए । कलकतिया, मालदह, किसुनभोग आ बम्बई आमक एक कतरा लेल ओ कतेक घंटा तक मलिकाइनक पैर जाँतैत रहैत रहै ।

छोटका मालिक रंगल दिलक आदमी रहथि । चालीस पार कए चुकल छलाह । मोंछ-दाढ़ी साफ । लाल-गुलाबी आ गोल मटोल चेहरा एहन सुन्दर लगैन से कि कहिअ । माथक केश कारी भुजंग रहैन, अँउठिया । ठोक फराक रऽ नहि छलैन । शहरक हवा जे खएने छलाह ? बी० ए० तक पढ़ि कऽ छोड़ि देने छलाह । पहिने किछु दिन सुपौल मे मास्टरी करैत छलाह । बाद मे राँची, हजारीबागक दिस कोनो राजाक ओहिठाम मनेजरी हाथ लगलैन । जावत तक ओतय रहथि, पाँचो आँगुर घीये मे । एमहर दू-तीन मास सँ घर बैसल रहथि । मलिकाइन रहथिन नइ । मोन उदास रहैन ।

एक दिन माएक संग रेबनी सेहो कामपर गेलै । चीकस पीसबाक रहै । माए कहलकै—दू हाथ लगा देबे तऽ जल्दी पीस लेब । मालिक मधुबनी जयथिन, दिनकऽ आम, दूध आ फुलका खाकऽ । रेबनी सेहो संग गेलै । दुनू माए-बेटी चीकस पीस चुकल तऽ मालिक शोर पारलखिन-बलचनमाक माए, अरे तोहर बेटी तऽ बढ़ि कऽ ताड़ भेल जाइत छौ ।

ई कहिकऽ ओ एड़ीसँ शिखा तक रेबनी कें देखऽ लगलखिन आ नचाकऽ आँखि घुमा देलखिन । सामने दोसर घरक ओसारा पर पलंग पड़ल रहै । गद्दा, चादरि आ गेरुआ, जकरा दूधसन दप-दप उज्जर खोलपर लाल-हरियर

डोराक कसीदा छलैक—डोल मे लोल मिरौने दूटा सुग्गा ! ओही पर केहुनी रोपने मालिक बैसल रहथि ।

आँखि फाड़ि-फाड़ि कऽ ओ रेबनी कें देखलखिन । चिलम पीब लेलापर माए संग जखन ओ रेबनीक बात उठौलखिन तऽ ओ कहलकैन—बरची छै बाबू अखन, की खाऽ पी कऽ ओ ताड़ हैलैक ।

एते कहि कऽ ओ फेर कोनो काज मे लागि गेलैक । ननहर जाति बलाक सोझा मे हमरा घरक माए-बहिन बहुत कम अबैत छैक । ओहू मे सम्बन्ध यदि मालिक आ नोकरानीक रहलैक तऽ लिहाज आर बेसी बढ़ि जाइत छैक । मुदा भैया, बड़का लोकक चुलबुली तबियत के एतबे मे संतोष कतऽ । ओ लोकनि बेकार हमरा लोकनिक घरक स्त्रीगणक संग बिना बातक बात करबाक बहन्ना तकैत रहैत छथि ।

माएक ओहि उत्तर सं छोटका मालिकक मोन नहि भरलैन । कनी-कालक बाद कहलखिन—तों जाकऽ आगि लरा बलचनमा माए, रेबनी एमहर आबि कऽ कनी पंखा हौंकि देत । ई बाजि कऽ मालिक एहन फुफकार छोड़लैन जे बुझऽ जेना आगि मे भाँटा । कहिए छुकल छिअ जे हमरा माए के मालिकक नेत पर बड़ा भरोस रहै । ओ हुनका लोकनि कें देवताक अवतार बुझैन । अस्तु ओ आँखि सं रेबनी के इशारा कएल कि जे चा कऽ कनी पंखा हौंकि दहुन ।

पंखा नइ रहै, बियनि रहै जे रेबनीक हाथ मे दऽ देल गेलैक आ ओ आँखि नीचा कएने बियनि चलाबऽ लगलैक । बियनि मे मूठक संग पातर बाँसक फोंफी रहैत छैक । गोल आ चिकन फोंफी के भीतर बियनिक काठी पड़ल रहै छैक । मुट्ठी मे लऽ कऽ कनिके डोलएला सं बियनि अपने सं चलऽ लगैत छैक । कि ई फिर्र, खिर्र खिर्र, फिरिर-फिरिर बड़ मीठ आवाज

होइ छइ हो भाई ! बगल मे बैस कऽ केओ पंखा चलएतऽ आ तों पड़ल-पड़ल हवा खाइत रहइ, तऽ तोहर सपत, हो भाई आँखि नइ लागि जाओ तऽ जे कहइ ।

रेबनी जखन पंखा चलबै छलै तऽ भईं सं मालिक गेरुआ तर मे हाथ देलनि आ अठन्नी निकाललनि पलंगक । पोआक माथ चपटल रहै, ओही पर अठन्नी धऽ देलखिन । रेबनीक आँखि मे लोभक दर्शन नइ रहैक, ओ अठन्नीक दिस देखबो नइ केलकै । पहिने जकाँ अदिग रहि मालिक कें पंखा हौंकैत रहलै । मोन मे सोचलक जे दोकान सं कोनो चीज बस्तु मँगाबऽ चाहैत छथि । अही सं चुपचाप रेबनी बियनि चलबैत रहलै ।

एमहर मालिक के मोन मे तऽ हो भाइ शैतान झिंगुर जकाँ झकझोरैत रहैन । ओ सोचैत छल हेताह, छौंड़ी छइकि खाँग्ह । नइ हिलै छइ ने डोलै छइ । केहन पाथर छइ । हुनका लोकनिक एहन सोचनाई बेकार नइ रहैन । कारण जखन ओ जुआन रहथि तऽ अही गाँव मे एक कुअरी मे इज्ञान छौंड़ी भेटैत रहै । रेबनी अदिग भऽ कऽ मालिक कें पंखा हौंकैत रहलैन । फेर मालिक अठन्नीक दिस इशारा करैत कहलखिन उठबैत कियाक नहि छें । रेबनी अठन्नी दिस देखि फेर पंखा हौंकऽ लगलैन । कनी काल ठहरि कऽ मालिक सं ओ पुछलकैन—किछु मँगाबऽ के अछि सरकार, दोकान जाउ ?

ई कहैत काल रेबनीक दृष्टि नीचा दिस रहैक । आँखि मे कोनो विकार नइ रहै । एकरऽ अइ अवस्था मे बेटी सब अहिना संकोची होइत छइ भाई, आ हमरा बहिनक तऽ हाले ने पूछइ । नेने सं ओ शील-संकोचबाली छलि । आँखि मिला कऽ ककरो सं बातचीत करैत कहिओ ओकरा देखबे नहि केलियैक । ई सोचि कऽ कि बनैया, मालिक मुस्कऽ लगलाह । माथ हिलाबऽ

भौंह तानिकऽ आँखि कें नचौलनि। ओ इशारा करैत आ रहल छलै, हुनक कुविचार सँ अनाड़ुँ।

अपन पहिल उमिर मे मालिक खेलल छलाह। एहन अवसर पर चुपचाप ठाढ़ वा नइ-नइ कहैत बीसो केओ बड़ा पकड़ने रहथि। ई हुनका लेल एकदम मामूली बात छलैन। छौंकऽ खाँसऽ जकाँ हो भाइ बिल्कुल मामूली बात। भनसा घर मे माए हमहर हाँड़ू सँ सजमनि चीरैत रहै। अनबे करैत छइक बड़का आदमीक अँगना बड़ौटा होइत छैक। चारू दिस घर होइत छैक, बीच मे खुलल जागह आ अइ खाली जागह कें अँगना कहैत छैक। पोखरि जकाँ चौकोर पर आँगन तों देखने हेबइक। सोझा-सोझी घरक बीच अनेक दूरी रहैत छैक। ओइ ओसारा पर केओ बात करतै तऽ एमहर बलाकें किछु सुनऽ मे नइ अएतै। अइ ओसारा पर छौंड़ाक बच्चा कंठ फाड़ि-फाड़ि कऽ मरि जाएत तऽ ओइ ओसारा पर बैसल माए के किछु पता नहि चलतैक। काज-परोजन मे परोलक हजारो बाभन पाँती मे बैस कऽ भोजन करैत छथि। पचास-पचास मोन धान सुखाए लेल पसारि देल जाइत छैक। एहेकटा-टा अँगना होइत छैन्ह जमीनदार लोकनि कें।

तऽ हौ भाई! मालिक के इएह अवसर सुझलनि आ चट दऽ रेबनीक गट्टा पकड़ि लेलखिन। हाथ झटकि कऽ फुरती सँ रेबनी दू डेग पाछा भऽ गेल, बुझऽ जे केओ ओकरा माथ पर एक सूप आगि राखि देने होइक। पंखो हाथ सँ छूटि गेल रहैक। चीलक बदला इलुक हाय सुनि मालिक एकरा नाटक बुझलखिन आ पलंग सँ उठि कऽ आगाँ बढ़लाह।

माए गे माए—रेबनी बकारि तोरि कऽ भागल तऽ मालिक उनटे ओर सँ सोर पारलखिन—कहाँ गेलै गे बलचनमाक माए, तोरा बेटी कें तऽ भूत लागि गेलैक अछि। एक हाथ मे हाँड़ू आ दोसर मे छीलल सजमनिक फाँक

लऽ कऽ माए दछिनबरिआ घर सँ बाहर भेलै तऽ रेबनी बेतहाश दौड़ि ओकरा सँ चिपटि गेलै—गे माए गे माए! ओ शैतान सेहो आँगन मे किछु दूर बढ़ि आएल रहै आ सुखाएल गला सँ खिलखिलाइत रहै।

हमर माए एहन हक्क बक्क भऽ गेल कि आँखि फाड़ि कऽ रेबनी दिस मात्र देखि रहल छलि। एमहर मालिक अपन चालि बदललनि। अपन दहिना हाथ हिला-हिलाकऽ जोर सँ चीकरऽ लगला—होय् होय्! बाप रे बाप! बिरनी काटि लेलक।

रेबनी के छोड़ि कऽ माए दौड़ि अएलै। अही बीच मालिक अपना बाँहि पर आने सँ बिढुआ काटि लेलनि, कि चेन्ह निकलि आबे। एकरा बाद ओ माए सँ कहलखिन दू बुन्द मटिआ तेल तऽ लाउ।

अपना ओइठाम बिरनी कटला पर मटिया तेल लगबैत छैक। घर मे मटिया तेल रहबे नइ करै। ई बात मालिक के बुझल रहैन। तइयो माए कें ओ कहलखिन दौड़, कतौ सँ बुन्द भरि मटिआ तेल लऽ आ। ओमहर दछिनबरिआ ओसारा पर बैस कऽ रेबनी सिसकि रहल छल। आँगन फेर सुन्न भऽ गेलै कारण माए मटिया तेल लाबए चलि गेल रहैक। लग मे आबि कऽ मालिक रेबनी सऽ कहलखिन—पगली कहीं के! भेलौ कि तोरा? हम तऽ अहिना तोरा छूबि देने छलिऔ आ तों कएन पिसाची खेलऽ लगलें। तोरे एतेकटा उमरि मे तोरा माएक दुरागमन भेल रहैक। आ अहिना पचीसो बेर हम ओकर हाथ पकरने हेबै·········

सूड़-सोध मे दुनकि कऽ रेबनी जबाब देलकैन—आहाँ झूठ बजैत छी! एतेक कहिकऽ ओ उठि ठाढ़ि भेल। दुनू हाथ पसरि कऽ आशा सँ मालिक ओकरा घेरऽ चाहलखिन। रेबनीक भौं अइदेर तनि गेलैक, चेहरा पर घृणा भरि गेलैक। हिम्मत बान्हि कऽ ओ कहलकैन—ई की भऽ गेल आह

आहाँ के मालिक !''''''

सरकार'''सरकार''' । मालिक एहन हँसी हँसलनि कि रेवनीक होश गुम भऽ गेलै । तामसक आ बलजोरीक ई खिलखिलाहट पंद्रहसालक ओइ अबोध छौंड़ीक लेल बिल्कुल नव वस्तु रहैक भैया, एकदम नव वस्तु ।

डर सँ ओकर करेज काँपऽ लगलै, एना काँपऽ लगलै, जेना केराक चिक्कन पात बगातक हलुक सिहक पाबि कऽ काँपि उठैत छैक । कनीकालक लेल बेचारिक होश गुम भऽ गेलैक । अचेत जकाँ भऽ गेल । मुदा रहल ठाढ़े !

अनचोके रेवनीक भीतर बिजली जकाँ कोधक लहरि दौड़ि गेलैक । ओकर अंग-अंग बुकऽ जे कन-कना उठलइक, आँखि मे लाली चढ़ि अइलैक । छाती धड़कऽ लगलैक आ ठोढ़ फड़कऽ लगलैक ।

मालिक अपना धुन मे मस्त रहथि । ओ राछ्छस तय कऽ नेने छला जे अइ अइ छौंड़ी कें अछूत नइ छोड़ब । बहुत दिन सँ हुनकर आँखि हमरा बहिन पर लागल छलैन । ओ अवसर तकैत छलाह । आ दैवक इच्छा, आइ अइ शैतान कें अवसर भेटलु छलैक । एक साधुक मुँह सँ हम बहुत बढ़िया पद सुनने छलहुँ भैया । मुदा आब मोन नइ अई । ओ पदक माने इयाह छलैक जे कामिनी आ कंचनक पाँछा ककरो मोन जखन खिचाइत छैक तखन ओकरा ऊपर एक सै बोतल दारुक निशा चढ़ि जाइत छैक । से भैया ओइ दिन हमरा छोटका मालिक पर सौ बोतलक निशा चढ़ि गेल रहैन । अपन होश-हवास के गवाँ देने रहथि ।

अन्त मे जबरदस्ती ओ नीचा मे रेवनी के पटकि देलखिन आ ओकरा देहपर काबू करक कोशिश करए लगलाह । पन्द्रह वर्षक ओ अबोध आ असहाय कन्या अपन सम्पूर्ण ताकति बटोरि कऽ ओइ पस्त दशा मे सेहो मोकबिला करऽ लागल । कुकुर आ बिलाइक लड़ाई तौं कहियो देखलहक

छहि ! वैह हालत रहैक । हमर बहिन हारल नइ । ओ मालिकक गट्टा पर एते जोर सँ दाँत गड़ा देलकैक कि ससुर अचेत भऽ गेलाह आ रेवनी बिजलीक फुर्ती सँ उठि कऽ भागि आएल ।

एकराबाद जे बवंडर उठलैक ओ हमरा जीवनक रस्ते बदलि देलक ।

बात ई भेलैक जे छोटका मालिक एकदम आगि बबूला भऽ गेला । मटिया तेल लऽ कऽ मार जखन हुनका लग गेलैन्ह तऽ ओइ बेचारिक पीठ पर ओ कसिकऽ चारि लात मारलखिन्ह । माए कानल नहि अइँचकऽ रहि गेल । रेवनी कें जखन ओ ओइ ठाम नइ देखलकै तऽ कोनो भारि अन्देसा सँ ओकर माथ चकराए लगलैक । छोटका मालिकक एहि राछ्छसी स्वभाव के ओ नहि जनैत हो, से बात ने रहै । ओ सब जनैत रहै । बेचारीक चेहरा उजर भऽ गेलैक । आ आँखिक नोर सुखा गेलैक । आँगन के कुन्न पाबि कऽ मालिक पाछां ओकरा पानि भरक रस्सी सँ हाथ पीठ पलंग सँ बान्हि देलकै । आब ओ फूटि-फूटि कानऽ लागलि तऽ मालिक गुर्रा कऽ कहलखिन —बाज साली, अपना बेटी कें एहऽ सऽ अइवे कि नइ ? बाज ।

ओ बेचारी की जवाब दितैक । अपन जानक डर सँ लोक कि नइ बाजि जाइत अछि । मुदा हमर माए बहुत दिलेर रहए । हमरा दाइ जकाँ बात-बात मे ओ दाँत निपोड़ऽ नहि जाने । मोनक कमजोर नहियो भेला पर अपन इज्जत आ पानीक ओ बहुत पक्का छल ।

ओइ दिन ओहनो दशा मे कोनो तरहें मालिक हमरा माए सँ कोनो तरहक वचन नइ लऽ सकला । ओकरऊपर बहुत पिटाई पड़ल रहैक । कुहरि-कुहरि कऽ समय कटलक । घैलक-घैल नोर बहैलक, तइयो ओ नीहरि माउगि अइ शर्त पर मालिकक जेल सँ नइ छूटऽ चाहलक जे ओ हुनका ओइठाम रेवनी कें लऽ कऽ

आयत। ओ पाछां नोर भरल आँखि सँ कानि-कानि कऽ ओ कहलक—बउआ बालचन ! भरि गेनाइ लाख गुन नीक मुदा इज्जतिक सौदा केनाइ नीक नहि।

अपन माएक मुँह सँ एहन बात सुनि कऽ हमर छाती जुड़ा गेल। भागवंते कें एहन माए भेटैत छैक भैया। हमहूँ ई ठानि लेलहुँ चाहे उजड़ि जाए पड़ए, चाहे जहल-दामुल भऽ जाए, चाहे फाँसी चढ़ी, मुदा कहियो ओहि जालिम के आगाँ माथ नइ झुकायब।

हम थोड़ दिन घर पर नइ रही, बाहर गेल रही। दूर नइ, लगे दू अढ़ाइ कोस। बात इ रहै जे महपुराक खाँन बहादुर नहुल्वा खाँ कुश्तीक बड़ा शौकीन रहथि। नवाबी खानदानी रहथि। बहुत बड़का जमींदारी रहैन। इलाका भरि मे इथ दूटा खानदान रहैक जे कइएक सौ बरख सँ राज करैत चलि अबैत रहैक। एक खनदान इयाह हमरा मालिकक रहैन, आ दोसर खान बहादुरक। हमरा मालिकक बहुत जमींदारी बिका गेल रहैन। दसे-पाँच हजार सालाना आमदनीक मौजे बाँचि गेल रहैन। ई छोटछिन जमींदारिओ बेँटि कऽ एकदम छोट भऽ गेल रहैक। सोलह आनाक सरकार छोट-छोट पट्टीमे बँटैत, एकन्नी, अधन्नी, पैसा, पाँच-कौड़ी दू-कौड़ी आ आधा कौड़ी तक भऽ गेल रहैक। हमरा मालिकक एहन एक पट्टीक मालिकक नाँव पचकौड़ी बाबू रहैन। एक दोसरे पट्टीक कोनो बाबूक नाम तिनकौड़ी बाबू रहैन मुदा नवाबी खानदान। जमींदारी अखन तक ओहिना रहैक। पुरनका रोब दाब आब महपुरावलाक नइ रहि गेल छलैन। तइयो पचास साठि हजार रुपया वसील बला जमींदारीक जेहन रोब होबक चाही से तऽ रहबे करैक।

खान बहादुर कें कुश्ती लड़ बाक बड़ा शौक रहैन। दूटा पहलवान त ओ अपने पोसने छलाह। हुनकर कहब छलैन जे हाथीक बदला पहलवान

पोसबाक चाही। सवारीक काज तऽ बग्गी टम-टम सँ चला लेल आ सकैत अछि मुदा अखारा मे जखन दू पैंतराबाज दू पट्ठा आपना मे लपटैत अछि तखन जे आनन्द देखऽ बला कें भेटैत छैक से हाथी पोसऽ बलाकें की खाकऽ भेटतैक।

तऽ हम ओहदिन महपुरा दंगल देखऽ गेल रही। फिरलौतऽ साँझ भऽ गेल रहैक। गाँवक बाहरे चुन्नी सँ भेंट भेल। ओ हमर नकौटिया संगी रहए। वैह पहिने हमरा टोकलक—के ! बालचन ! !

पाइनक नाला रहैक। थोड़ मे लाठी धोपिकऽ ओकरहि बले हम बाहर टपि अएलौं आ जबाब देलियैक—हँ चुन्नी, अबेर भऽ गेल। महपुरा सँ आबि रहल छी।

खूब कुश्ती देखने हेबऽ, के जोड़ा छलै ? हम आगाँ बढ़िकऽ कहलियैक नीता, तोंहऽ गेबे नहि कएलह। तोरा तऽ ने अपना महींस सऽ छुट्टी भेटैत छह आ ने महरानी सँ। महींस फोलैत छह तऽ महरानी बान्हल रहैत छथुन आ महारानी के चखैत छह तऽ महींस बान्हल रहैत छह।

हमरा हँसी आबि गेल। जोर सँ भभा कऽ हम हँसि पड़लहुँ, मुदा जबाब मे चुन्नी चुप रहल। हम सोचलहुँ-अन्हार छइ, चुन्नी मुस्काइत अछि। फेर पुछलियैक —चजैतनइ छइ ? भौजी दुलत्ती मारलखुन अछि ? चोट लागल छह तऽ चलह हम मालिश कऽ देत छिअह। पटना सँ सीख अएलहुँ अछि।

आब हम एक दोसराक लग आबि गेल रही। झाँकि कऽ हम देख-लियैक, चुन्नीक मुँह बड़ उदास रहैक। फूजल ठोर मे सँ उज्जर दाँत सेहो उदासीक सबूत दैत रहैक। लाठी कें बगल मे दबा कऽ दूनू हाथ सँ हम चुन्नीक कान्ह झकझोरि पुछलियैक—की बात छैक ? एतेक काल सँ तों चुप किएक छह ? कोनो नबबात तऽ नइ भेलैया ? तइयो चुन्नी किछु नहि

बाजल। फिकर सँ हमरा हाथ कें अपना कान्ह सँ छोड़बैत कहलक—किछु नहि।

एतेक बाजि चारि डेग आगाँ बढ़ि चुन्नी फेर रुकि गेल। हमर मोन तऽ पहिने खटकि गेल रहए, आब सन्देह पक्का भऽ गेल जे टोल परोस मे कोनो जरूर खराब बात भऽ गेलैक अछि। आब हमरो चुहलबाजी समाप्त भऽ गेल आ कोनो खतराक अनदेशा काँट बनिकऽ मोन कें बेधऽ लागल। चारिडेग हमहू आगाँ बढ़िकऽ चुन्नीक आगाँ ठाढ़ भए गेलौं आ कहलियैक हमर शपत कहऽ की भेलैया। महीस ने तऽ तोहर ककरो खेत मे चलि गेल छलैक? मालिकक कोनो छौंड़ा बात ने तऽ कहि देलकइ अछि?

एतबो पर चुन्नी चुप्प रहल। खाली हमर हाथ पकरि ओही ठाम एक-पेरियाक कात मे पोखरिक भीड़ पर धम्म सँ बैस गेल। हमहू बैस गेलहुँ। मोन हमरो भारी भऽ गेल रहै। कनीकाल हम दूनू चुप रहलहुँ, फेर चुन्नी बाजल, फुस फुसाकऽ—तों घर नइ जाऽ। किया?—आँखि फाड़ि कऽ आ दम साधिकऽ हम ओकरा दिस देखऽ लगलियैक। ओ थोड़बहि मे सोनबला सब बात हमरा कहि देलक आ फेर कान्ह पकरि कऽ कहऽ लागल—बलचन, आइ दिन भरि छोटका मालिकक हरबाह-चरबाह तोरा तकैत फिरलको। पचीसो आदमी सँ ओ तोरा विषय मे पुछलखिन कहाँ गेल बलचनमा? भैया, कनीकाल तों अही ठाम बैस, हम दीया फिरि कऽ अबैत छी फेर तोरा अपना ओइठाम ल जएबो।

हमरा पैरक नीचा सँ माटि हटऽ लागल। आँखिक आगा अन्हार घेर लेलक। हम थोक बनि गेलहुँ। हमरा ओहि हालत मे छोड़िकऽ चुन्नी दीसा फिरऽ लागल। ठेहुन पर कपार राखि हम गुम-सुम ओहिना बैसल रहि गेलहुँ। हमरा मोन मे किसिम-किसिम के भाव उठैत छल। एक मोन तऽ

ई होइत छल पचरिया होइ लऽ कऽ दुपहर राति मे जाइ आ छोटका मालिकक कें घेंट काटि आबी। दोसर मोन ई होइत छल जे मालिकक कागजक ओइ बंडल के उठा लाबी जाइ मे हजारक तमस्सुक आ सैएक दस्तावेज राखल छैक। तेसर बात जे मोन मे उठए ओ ई जे माए बहिन कें राता-राती लऽ कऽ पटना चलि जाइ। चारिम बात इहो मोन मे उठल जे अहिठाम सँ उनटे दरिभंगा चलि जाइ एहगरे ओतए आए फूल बाबू सँ छोटका मालिकक सब करनी कहि दी। अइतरहें किसिम-किसिमक बात हमरा मोन मे उठि रहल छल। एहन विपत्ति मे हम कहियो नहि पड़ल छलहुँ। भैया, छोटका मालिकक विषय मे ऊँच विचार तँ हमर कहियो ने रहल, मुदा आदमी एहन राकस होएत, ई तऽ सपनो मे नइ सोचइ छलऊँ। एतेक काल मे चुन्नी दीसा फिरिकऽ पंछुआ करऽ लागल। आवाज अबैत छलै—छपर छप्प—छपर-छपर-छप्प।

अइ आवाज सँ हमरा किछ होश आएल आ हम सम्हरि गेलहुँ जे चुन्नी सँ सेहो पूछि ली। एखगर दिमाग किछु काज नइ कऽ रहल छल। मोन दिररोक खर भऽ रहल छल।

हाथ पैर धो कऽ कुरुर कऽकऽ चुन्नी ऊपर पोखरीक भीड़ पर, जतऽ हम बैसल छलहुँ आएल। हमर कान्ह डोला कऽ ओ कहलक—पगलपन सँ तऽ किछ हैतइ नइ, ठंढा मान सँ सोचि विचारि कऽ आ दोस मीत सँ राय-सलाह कऽ कऽ ठीक करबाक चाही जे एहि राच्छस के हमरा लोकनि कोना हलाए करी!

चुन्नीक ई बात हमरा नीक बुझाएल। दोस्त-महीम, हित-बन्धु तोरा सब दिन भेटतऽ भाई? जतए अपन बुद्धि काज नहि करए ओतए हीत-मीत सँ राय लेबेक चाही। एक आदमीक बुद्धि सँ दस आदमीक मिलल-जुलल बुद्धि लाख गुना बढ़िया छैक। हमरा एहि समय मे किछु नहि सूझि रहल

छल। चारू दिस घुप्प-अन्हार बुझाइत छल। कोड़-करेज थर-थर कँपैत छल। एहन दशा मे चुन्नी हमर सहारा भेल आ हम उठि कऽ ठाढ़ भेलहुँ। ओ कहलक—होँडू घाट पर जो आ हाथ पैर धो आ। हाथ-पैर-मुँह धोला सँ थकान सेहो हटतौ आ मोन सेहो हलुक भऽ जएतौ।

लाठी ओकरा थमा कऽ हम पोखरिक घाट दिस बढ़लहुँ। नीचा ठेहुन भरि पानि मे पैस कऽ हाथ मुँह धोलहुँ। खखारि कऽ गला साफ कएलहुँ। रगरि-रगरि कऽ घुट्ठी आ पैर धोलहुँ। आँखि-नाक, कपार, कान, कनपट्टी, गरदनि, आ पाँजर पर भीजल हाथ फेरल आ बाहर निकलि अएलहुँ। चुन्नी तावत तक ठाढ़े छल। फेर हम दुनू गोटे आगाँ गामक दिस बढ़लहुँ। ओ आगाँ-आगाँ आ हम पाछाँ पाछाँ।

चुन्नी हमरा सोझे नहि आनल। मालिकक पट्टी सँ फराके-फराक गोसाँईंगीक भीड़ खेतक आरि पर भऽ तीरी अमातक घरक पछुआर दने ओ हमरा अपना घर लऽ गेलइ।

भाई, तोँहूँ तऽ देहाते के रहऽ वला छऽ। जनबे करैत छहक जे देहातक लोक सब साँझ-सबेरे खा-पी कऽ सुति रहैत छैक। बूढ़ पुरनिया तऽ राति मे बड़ी काल तक खँसैत-खोखैत रहैत छैक वा अन्हारे मे अपन बितलाहा दिनके मोन पारि कऽ विभोर भए बतियाइत-बड़बड़ाइत रहैत छैक। दिनक मेहनति सँ चूर-चूर जुआन आ अधेड़ लोकनि बहुत पहिने सुइत रहैत छथि। खेतीक समय नइ रहल तऽ बेकारी मे सुतैत-ओंघियाइत दिन बितैत छैन्ह आ राति कऽ जल्दी नहि सुतैत छथि। लोरिक, बिरहा, सलहेस आ कबीरक भजन गबैत रहैत छथि आ फेर कोनो चौपाई पर पुआरक बीड़ी पर बैसि तँ हुनका लोकनि के तमाकुल मलैत आ चिलम फुकैत देखबहुन। स्त्रीगण सब बेर तक जगैत रहै छथि आ तड़के उठि जाइ छथि।

चुन्नीक बाप मनियार मंडल मामूली ढंगक गृहस्थ रहथि। अपन पहिल उमिरक सात बरख तक ढाकाक कोनो चटकल मे मजूरी कऽ कऽ काफी रुपैया ओ चुन्नीक माए के पठौने रहथीन। चुन्नीक माए जिनका छोटे उमिर सऽ हम धन्नी काकी कहक अभ्यस्त भऽ गेल रही; बड़ा लछमिनिया रहैक। अपन घरवलाक कमाइ सँ धीरे-धीरे ओ तीन बीघा खेत लऽ नेने रहए। आब ई लोकनि छोटका जातिबला मे हैसियत बला बूझल जाइत रहथि। बूझले जाइत रहथि से नहि, हैसियतो रहनि। दू महीस, एक जोड़ा बरद आ आँगन मे चारू दिस घर रहैन। कमाए-खटाए बला तीन समर्थ जबान रहैक। मन-बूत काठीक दूटा कमासुत स्त्रीगन रहैक। बेर बखत पर सलाह देबाक लेल बूढ़ रहैक। लछमिनियाँ बूढ़ रहैक। हमरा अइठाम एहन परिवार के भरल-पूरल परिवार कहैत छैक।

ओइ राति कतौ बिरादरी मे भोज रहैक। चुन्नीक दुनू भाइ आ बूढ़क अपने बाल-बच्चा के संङ लऽ कऽ पात गरमा गेल रहथि। मानसक भंकटि नइ रहला सँ जनी-जाइत सब परोसियाक आँगन मे गप्प लड़ाबऽ गेल रहथि दरबाजा पर महीस आ बरद बान्हल रहैक। बेसार खाली रहैक आ घर सुन्न।

एहन समय मे पैर गारिकऽ हम दुनू ओइ आँगन मे ढुकलहुं। चुन्नी अपना पुबरिया घरक केवार खोलि कऽ कहलक—आराम करह, हम भोजनक इन्तजाम करैत छी आ तोरा माएक समाचार सेहो लऽ अबैत छी।

चुन्नी चलि गेल। हम अपन लाठी कोना मे भीतक अदहेगा दऽ ठाढ़ कऽ देलियैक। गंजी निकालि कऽ अलगनी पर टाँगि देलियैक। धोतीक फेँटा ढीली दील कऽ लेलहुँ आ ओछाएल सितलपाटी पर अन्हार मे परि रहलहुँ।

बड़ा भूख लागल रहए भाई। मुदा जे किछु भेल रहैक ताहि कारण भूख सुखा कऽ अँतड़ीक कोनो कोन मे घुसिया गेल छल। हमर दाइ एक बेर

कहिने रहै—बहुत जास्ती खुशी हो तइयो भूख मेटा जाइत छैक। से ओइ दिन हमर भूख उड़ि गेल। हम बेर-बेर एसगर ओइ अन्हार मे इएह सोची जे छोटका मालिक सँ डटि कऽ मोर्चा लेबऽ बिना निस्तार नहि। बात साफ रहैक। दू मे सँ एक, चाहे अपना बहिन के ओइ जालिम कँ हाथ कऽ दी अथवा मुसीबतक पहाड़ खुशी-खुशी माथ पर उठाली। तेसर कोनो रास्ता नहि। मोने-मोन पक्का कऽ लेलहुँ जेल चलि जायब, फाँसी चढ़ि जायब, गाँव सँ उजड़ि जायब मुदा एहि शैतानक आगाँ सपनो मे माथ नहि झुकायब। भैया हम उठि कऽ बैस रहलहुँ। डाँड़ सोझ कऽ लेलहुँ। ओइ घुप्प अन्हार मे हम अपना मुदइक छाँह साफ-साफ देखऽ लगलहुँ। ओइ राक्षस के ललकारैत हम बाजि उठलहुँ—बेशक, हम गरीब छी। तोरा संग अपन धन, कुल-खानदान बाप दादाक नाँव, अरोस-परोसक जान-पहचान, आ जिला-जवार मे मान छौ आ हमरा संग किछु नहि अछि। मुदा आखरी दम तक हम तोरा विरुद्ध डटल रहब। अपन सम्पूर्ण ताकति के तोरा विरोध मे लगा देब। माए आ बहिन के विष दऽ देब किन्तु तों ओकरा लोकनि के अपन रखेली बनेबाक अपना कहियो पूर्ण नहि कऽ सकबें.........

हम बैसल नहि रही सकलहुँ। भीतर सँ निकलि आङन मे घूमि फिर करए लगलहुँ। तौं कलकत्ताक चिड़ियाघर देखने छह भैया? ओतए जाहि पिंजड़ामे शेर रहैत छैक से देखने हेबहक शेर जखन खिसियल रहैत छैक तऽ क्रोध सँ ओकर आँखि लाल रहैत छैक आ ओ पिंजड़ा मे बन्द रहैत छैक तऽ कि करैत छैक? इएह कि अपन पिंजड़ा मे पाँच डेग एम्हर आ पाँच डेग ओम्हर, जहिना क्रोधक आँच के घूमि-फिर कऽ पचबैत अछि। से भैया, हमहुँ अपना क्रोधक आँच मे चुन्नीक ओइ छोट-छिन आँगन मे फेरा लगा कए पचाबए लगलहुँ।

अरे, तों चक्कर लगा रहल छँ—चुन्नीक आवाज आएल तऽ हमरा ध्यान टूटल। ओकरा एक हाथ मे रोटी रहैक आ दोसर मे कटोरा। हमरा किछु पुछला सँ पहिने ओ बाजल—रेबनी सुति रहल छैक आ चाची (हमर माए) पड़ल अछि। हम ओकरा लोकनि के समझा बुझा देलियैक अछि। तोरा विषय मे निश्चिंत कऽ देलियैक अछि। ले पीढ़ी पर बैस जो आ खो ले, हम डोल कऽ टटका पानि भरि लबैत छी।

हम नहि बैसलहुँ तऽ चुन्नी हाथ पकड़ि कऽ बैसा देलक। रोटीक नमहर टुकड़ी तोरि कऽ आ तरकारी बला कटोरी मे डुबाकऽ चुन्नी हमरा मुँह मे कोंचि देलक। मिरचाइ हम नेने सऽ कनी कम खाइत छी मुदा रामखिमनीक ओइ तरकारी मे बनाबऽवाली नइ जानी कतेक मिरचाइ झोंकि देने रहैक! मिरचाइक अधिक कड़ स्वाद हमर निशा के तोरि देलक। निशे कहिअऽ भाइ, कारण मोनक बेचैनी, दिमागक परेशानी आ भीतरक बेकली मनुष्य के ओहिना बेहोश कऽ दैत छैक जेना दारू आ तारी!

तऽ तरकारीक कड़ सँ हमर ध्यान टूटल, हम पुछलियैक—तों कि खएबह?

हम तऽ खा कऽ पोखरिक दिस गेलहुँ। छोटका मालिकक मोन खराब छैक। सरदी भऽ गेलैक अछि। अही वास्ते अतिथि भोज मे नहि जा सकलहुँ छैक जिनके रासक छलैक। तोरा वास्ते रामचरन ककाक घर सँ रोटी लेलिअइ अछि। हुनका ओहिठाम बुढ़ियाक पथ-पानि लेल सतति आगि जरैत रहैत छैक।

चुन्नी टटका पानि लऽ आएल रहै। रोटी जौ के रहैक। रामखिमनीक तरकारी आ जौ के रोटी बहुत बढ़िया लगैत छैक, मुदा ओइ राति तऽ हमर जीभ बथरा गेल रहए जेना-तेना गिर कऽ भरि इच्छा पानि पीलहुँ आ बाहर जा कऽ लम्बी कऽ अएलहुँ। हम चुन्नी सँ बात करऽ चाहैत रही, मुदा ओकरा कोनो जरूरी काज सँ अमनटोली जएबाक रहै। ओ कहलक अखन आराम करह। भोरे हमरा लोकनि उठब आ तखन गप्प होयत।

हम बहुत कालतक गुनधुन मे पड़ल रहलहुँ। किसिम-किसिमक बात सोचैत रहलहुँ आ ओहि सोच फिकिर मे पता नइ कखन नींन आबिगेल।

बलचनमा

(मैथिली)

मूल लेखक

ना गा र्जु न

मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कलकत्ता

४

चुन्नी दोसर दिन भोरमरे हमरा उठौलक आ कहलक जे फूल बाबू सँ ई काज भऽ सकत। छोटका मालिक हुनके सँ कनी दबेल भऽ सकैत छथि। चुन्नीक ई विचार हमरा बड़ नीक लागल। हम चुपचाप लहेरियासराय पहुँचि गेलहुं, गाड़ीयो ठीक समय पर भेटि गेल छल। लोक सब सँ पुछारी कऽ कऽ बरहमपुरा आ ओतऽ सँ आसरम पहुँचलहुं। पहुँचबा मे कनिको कष्ट नहि भेल।

दूपहरक समय रहैक। आसरमक अंगनई मे एकटा बड़का आमक गाछ छलैक। गाछ तर एकटा कमलक (कम्बल) आसनी पर पलथी मारने फूल बाबू मगन भऽ कऽ चरखा काटि रहल छलाह।

फूलबाबूक पैर पकड़ि कऽ हम कानए लगलहुं। एकाएक पैर पकड़ने हमरा कनैत देखि फूलबाबूक मोन अकचका गेलैन आ हाथक पीर (पूनी) छूटि गेलैन सूत सेहो टूटि गेलैन। फूलबाबूक दाढ़ी मोछ तथा केश बड़ पैघ-पैघ छलैन्ह। देह उघारे छलैन। ठेहुन धरि खधरक धोती पहिरने छलाह। बाबू भैया कें आइ तक हम एहन फकीर भेष मे नहि देखने छलियैन। फूल बाबू ठीक महातमा जकाँ हमरा बूझि पड़लाह। आब तऽ बेरागी बरहमचारी लोकनि कें बिना ढेकाक धोती पहिरैत देखैत छियैन। अपना जनकपूरे मे एहितरहक कतेको बेरागी-बरहमचारी भेटताह। चोरौत, मटिहानी आरो

कतेक महंथान अपना लोकनिक दिस अछि। ओतऽ बेरागी लोकनिक पलटन सेहो रहैत छैन जकरा लोक नागा कहैत छै। ओ सब खूब मेंही मलमलक धोती पेंट सं बान्हिक डाँर मे लपेटने रहैत छथि तकरा बेरागीलोकनि बरहमगांती कहैत छथिन।

आसरम मे पहुंचिकऽ फूलबाबू के ओहि भेष मे जे हम देखऽलियैन तऽ भीतरक सब सरधा (श्रद्धा) उमड़ि आएल। एना तऽ प्रथमे जखन हम हुनका मलिकाइनक ओहि ठाम देखने छलियैन तखने हमर मोन हुनका मे गड़ि गेल छल। बाद मे चारि छौमास ओ हमरा पटना मे संगे रखलैन। बड़ा परेम सं रखैत छलाह, जेना बाप बेटा कें रखैत छैक आ आब एहि भेख मे देखिकऽ हमरा चोटैल मोन के एहन लागल जे इएह फूलबाबू हमर उद्धार करथि तऽ करथि नहि तऽ छोटका मालिकक परकोप सं छुटकारा पाबक आर कोनो रस्ता नहि अछि। से हम हुनकर दूनू पैर छानिकऽ लुढ़सं माटि पर परि रहलहुं आ हिचुकि-हिचुकि कानऽ लगलहुं।

फूलबाबू हमरा उठा लेलनि। बेर-बेर पूछऽ लगलाह जे कि भेलौ—बाउ कोन संकट तोरा ऊपर आबि गेलौक अछि? माए तऽ ने दुखित छौक बलचनमा तोरा बहिन के तऽने किछु भऽ गेलौक अछि।

हमर हिचुकी बन्दे ने होइत छल। बड़ीकालतक ओ हमरा देह पर हाथ फेरैत रहलाह। आँगुर सं कतेक बेर नोर पोछलनि। हमर दशा देखिकऽ हुनकर चेहरा सपेता मालदह जकाँ भऽ गेलैन। ओहि दिन हमरा बूझऽ मे आएल जे दिल भरल हो, आ मारी ठेस लागल हो तऽ खूब कानक चाही। बड़ सं मोन हलुक होइत छैक। बहुत नोर बहेला पर हमरो मोन जखन हलुक भेल तखन हिचकी बंद भेल।

फूलबाबू ओतए सं उठलाह, खादीक लच्छी आ पीर बला पथिया अपने

छत्ता लेलनि। आसनी आ चरखा हम लऽ लेलियनि। ओ आगाँ-आगाँ चललाह आ हम पाछाँ। दूनू गोटे ओइ कुटी मे अएलहुँ जतए फूलबाबू रहैत छलाह। फूलबाबू मोने-मोने सोचने हेताह—खेत-पथार, एमहर-ओमहरक बात करत, धूनि-धामि कऽ आश्रमक चीजवस्तु देखत, मोन हलुक भऽ जेतैक तखन अपने सब बात कहि देत।

कहिए चुकल छिअ जे फूलबाबूक स्वभाव बड़ मीठ रहैन। हुनका बात सँ मधु चुबैत छलैन, हुनका आँखि सँ दूधक ठंढा धार फुहारा बनिकऽ बहइत छलैन। देखहो मे बहुत सुन्दर रहथि।

अपना कुटी मे जखन ओ पहुँचलाह तऽ दिनक एगारह बाजि चुकल रहैक ओ काठक बक्सा मे सूतल अल्ली मसहारह लगलाह। हम काह दिन देखैत छलहुँ। ई कुटी एक बड़का फूसक घरक एक छोट कोठली रहैक। कौंकक पातर देबाल एक कमरा के दोसर कमरा सँ फराक करैत छलैक। खमोली शीशोके रहैक। बरेड़ो मे बाँस आ पातर बत्तीक व्यवहार कैल गेल रहैक। ऊपर चार खड़ सँ छाड़ल गेल रहैक। कौंकनक देबाल मे काटिकऽ चौकोन खिड़की बनाओल गेल रहैक। ओसारा के खाढ़ीक आफरी के बीच-बीच मे घेर देल गेल रहैक। बाँसक एहन कारीगरी कहँ तँ पहिनें हम कतो नइ देखने छलिऐक। फूलबाबूक कमरा मे मामूली वस्तु-जात रहैन। एक एकटा खाट आ काठक एक बक्सा। आगाँमे दू-दूटा ईंट राखिकऽ काठक एक तखता राखल छलैक ओहि पर गोट दस-बारहेक पोथी। एक कोन मे माटिक घैल पानि सँ भरल राखल रहैक। छोट छिन कलगहयाँ लोटा सेहो रहैक। दूनू किनार मे डोरी बान्हल अलगनीक बाँस पर धोतीक लगा लटकैत छलैक। ओहि पर पचहत्थी खध्दर आ एक छोट छिन अंगपोछा लटकल सुखाइत छलैक। शीशामे मढ़ल तीन मूरत तीन दिस लटकैत छलैक। ओहि दिस आँखि गड़ौने देखलनि तऽ फूलबाबू अपन गरदनि हँसैत बजलाह—महात्मा गाँधी छथि।

महात्माजीक नाँव सुनने तऽ हम अवस्से रही आ सुनने एना रही जे सरकार बहादुर सँ केओ लोहा लऽ सकैत अछि तऽ गाँधी महात्मा लऽ सकैत छथि, अंग्रेज बहादुर के ओ नाक मे कौड़ी बान्हि देलखीन अछि। सरकार हुनका सँ हरान-हरान अछि। गाँधी के पकड़नाइ आ पानि मे आगि लगेनाइ दूनू मुश्किल अछि। महात्माजीकें अफसर लोकनि जहलखाना मे राखि दैत छैन्ह, मुदा भैया दोसरे दिन हुनका दोसर ठाँव खराम पहीर कऽ टहलैत देखि सरकार बहादुर के पेटक पानि डोलऽ लगैत छैक। बम्बई मे पकड़ि कऽ बंद कैलकनि तऽ लोक महात्माजी के कलकत्ता मे देखलकैन। अहमदाबाद मे पकड़ल गेलाह तऽ मद्रास मे मीटिंग करैत पाओल गेलाह। मनियार कक्काक मुँह सँ सुनने रही जे गाँधी महतमा के पूनाक जेलर खिसिया कऽ कोल्हू मे जोति देलकनि आ दू मोन सरिसो पेरबाक लेल कहलकैन। जेलर सोचने होयत जे दुबर-पातर कमजोर आदमी छथि, कोल्हू मे कि बहता, माफीनामा लिखि कऽ बैस जेताह। मुदा भैया, मनियार कक्का कहलैन जे गाँधी बाबाक हाथ लगिते देरी अपनहि दू मोन सरिसो कऽ तेल मे बदलि गेलैक। मनियार काका कहैत छलाह—कारी पहाड़ जकाँ दूटा बड़का बड़का बेहाल गाँधी महतमा के दासो दास भऽ कऽ हुनका संग चलैत छैन। ओहि बेहाल लोकनिक ई खेल रहैक'''एहि तरहक अजीब बात सँ भरल गाँधी-महतमाक नाँव जखन हमरा जिला जवार मे फैललनि, तखन हमरा कान मे हुनकर नाँव पड़ल। हम सोचैत रही जे गाँधी महतमा केहन हेताह। मुदा बुझऽ मे किछु नहि आबए। सोचि-सोचि कऽ रहि जाइत छलहुँ। से आइ फोटो मे देखलियैन तऽ मोन कें सन्तोष भेल। माथक केश उड़ल, कान छोट-छोट

आ बड़का, बाहर कपार चेहरा जनैक नीचा दिस कऽ झुकल। ई सब देखिते हमरा अजगुत लागल जे ई महतमा गाँधी छथि। ई तऽ अनमन हमरा सुभान बबा सन लगैत छथि। दोसर फोटो रोबदाबक रहैक। बढ़िया अंगा पहिरने आ माथ पर मुरेठा बन्हने। बड़का-बड़का मोंछ। टेल-टरकल आँखि —ई के छथि हम फूल बाबू सँ पुछलियैन। उत्तर भेटल—लोकमान तिलक। तऽ इहो कांगरेस के भारी अफसर छथि। ओ कहलनि जे—नहि, छथि नहि। छिन तर स्वर्गवास भऽ गेलैन मुदा बड़का भारी नेता छलाह।

तेसर फोटो दिस हाथ देखा कऽ फूल बाबू कहलनि—ई तऽ अपना अइठामक राजिन्दर बाबू छथि। अपना अइठाम—दरिभंगाक? फूल बाबू हँसि कऽ कहलनि हुर पागल कहीं के! अपने अइठामक माने खाली अपने जिला ज्वार नइ होइ छइ। एकर माने होइ छइ अपन प्रांत, अपन कमिश्नरी, अपन जिला, अपन थाना, अपन इलाका आ अपन देश। अइ भारत देश मे छोट नमहर नौ प्रांत छैक। हमरा लोकनि जतए रहैत छी से बिहार प्रांत कहबैत छैक। एकरा अन्दर उड़ीसा सेहो मिलल छैक। छोटानागपुर, भोजपुरी, तिरहुत आ मगहक इलाका सामिल छैक। राजिन्दर बाबू छपरा कें रहऽ बला छथि आ गाँधी महतमाक बड़का भारी चेला छथि। आला दरजाके वकील छलाह। बहुत बढ़िया प्रैकटीश रहैन। हँ, हजार मोकिल रहैन। खानदानी रोब-दाब रहैन, जमीनदारी ठाठ-बाट। सब छोड़ि-छाड़ि कऽ गाँधी महतमा के पाछां फकीर भऽ गेलाह अछि।

फूल बाबू एना तऽ सभ बजैत छलाह मुदा कखनो-कखनो जेना बोतलक ठेकी फुजि जाइत छैक ओहिना हुनको मुँहक ठेकी फुजि जाइत छैन्ह आ तखन गँवार हुनका सँ दुनिया भरिक अल्लम गल्लम सुनि लऽ। एहन समय मे किछु आर पुछनाइ आगि मे घी देनाइ बुझह। अइ लेल हम चुप रहलहुँ।

ओ बजिते छलाह कि घंटी बजलै। हम अकचका गेलहुँ। फूल बाबू कहलनि भोजनक बजाहट छैक। बिकओ बूझइ। हमरा मलिकान मे भोज-भात होइते रहैत छलैक। टोल-परोस आ कहियो-कहियो कउँसे गाँमक बाभन देवता भोज खएबाले अबैत रहैत। बूढ़, नेना, जुआन सब केओ जखन आबि आबि तऽ केओ परसैया आबि कऽ जोर सँ ई आवाज लगबैतथि जे बिकओ हो! बिकओ हो। से बिकओ के माने हमरा बूझल रहए मुदा भोजनक बजाहटिक लेल घंटी बजा कऽ ई बिकओ हमरा लेल एकदम नव बात छल। मालिक कहलनि चल संगे खाएब। एतऽ ऊँच नीचक झंझट नहि छैक। गाँधी महतमा कें गुरु मानऽ बला आश्रम निवासी ने छुत-छात मानैत छैक आऽने ऊँच नीच। सत कहै छिअ भैया फूल बाबूक ई बात सुनि कऽ हमरा बड़ा अजगुत भेल, मोने-माने हँसी आबि गेल। ऊँच नीचक भेद बहुत दिन सँ चलि अएलैक अछि आ बराबरि रहतैक। चारि आदमी कें मानला सँ की होइत-जाइत छैक? फूल बाबू कहलनि जे लोटा लऽ ले आ जल्दी चल।

आसरमक मकान पर दोसरा कात पछुआर दिस रहैक। दू चारक छोट छिन घर, फाँफनक टाट आ शीशोक दू टा खाम्ह छलैक। बड़ेरी पर टिकल चार, आ पाछां दिस धुँआ बहार देबाक लेल जाफरी बला खिड़की छलैक। खेबाक वास्ते एक चार बला नाम एकचारी। लाइक पातक छोट-छोट आसनी ओइठाम ओछाओल छलइक। एक पाँती मे मालिक आ कऽ बइस गेलाह। आरो दस बारह बाबू लोकनि छलाह। अपना सन हम एसगरे रही। कए गोटे हमरा मालिक सँ पुछलखिन—बजाकऽ अएलह अछि? फूल बाबू ओइ बेचारी कें आइ बेकारे सतबइत छियइक हम बूझि गेलियइ जे ई इशारा बाबू लोकनि के ककरा दिस रहैन? बुझलह भइया? ई इशारा रहैक फूल बाबूक स्त्री दिस। हुनका फूल बाबू नइहर मे छोड़ि देने रहथिन।

अपने आसरम मे बइरागिक जीवन बिता रहल छलाह। फूल बाबू हुनका लोकनि कें कहलखिन आहाँ लोकनि कहिना अलगटप्पू मारइत छी। ई हमरा घर सं नहि पीतीक ओइठाम मे आएल अछि। हुनके लोकनिक चहिथा छैन्ह।

एक दोसर बाबू हंसइत कहलखिन—तऽ आहाँक बास्ते कोनो दोसर दुलहिन ठीक होइत अछि अइ पर सब बाबू ठठाऽ कऽ हँसि पड़लाह।

आगाँ मे पुरइनक पात परसल जा चुकल छलइक। पानि भरि-भरि कऽ गिलास राखल जा चुकल छलइक। बाबाजी महाराज आब भात परसइत रहथि। हम देखल जे उज्जर धोआएल खद्दरक कपड़ा पहिरने चिक्कन चुनमुन चेहरा-मोहरा वला ओइ बाबू लोकनिक सोफा मे मनसिया कराँकुल जकाँ लगइत छलइक। बड़ पातर टाँग, नाम पेट, धँसल आँखि आ डाँड़ मे मइल धोती लपेटने रहै। जनक सेहो मइल रहैक। छातीक हड्डी देखाइत छलइक।

हम सोचल जे देस सं अंगरेज बहादुर, चलि जेतइ तऽ फेर कपैइ बाबू भइया लोकनि अफसर बनताह आ तखन अइ बाबाजी महाराजक सेहो उद्धार भऽ जेतनि। हिनका हड्डी पर माउस चढ़तनि आ चेहरा पर चिक्कनई अएतनि। बूड़ सूगा भऽ गेलापर पढ़ि-गुन तऽ ई की सकताह मुदा बाँकी आराम सुभीता हिनको भेटतइन। सोराज भेला पर कि हेतइक? इ बात पटना मे एक बेर हम महेन बाबू सं पूछने रहियनि। ओ कि जबाब देने छलाह मइपा पे कि कहिअ? महेन बाबू इएह कहने छलाह जे सोराज भेला पर सभक दिन फिरतइक, सभक भाग चमकतइक। हमरो, तोरो।

पात पर भात परसल गेलैक। पीतरक बाटी मे राहरिक दालि। बिना मिरचाइक आलूक तरकारी छलैक। एक-एक फाँक पियाज भेटल छल। बाबू लोकनि भोजनक समय अजैत-बतियाइत रहलाह। हमरा तऽ मोने ठीक नइ

रहै, कोनो तरहें दस कौर मारि लेलहुँ आ हाथ रोकि कऽ बैस गेलहुँ। देखल, के ओ पात मे दँठ नहि छोड़ने रहथि। जठैत बेर पात कें लपेटि कऽ सब केओ बाहर बहरेलाह आ एक नमहर टाकी मे राखि देलखिन। हाथ मुँह धोबाक हेतु कोनो खास जगह नइ छलैक, पेप मैदान रहैक।

फूल बाबू आ हम खाकऽ ओही कोठली मे अयलहुँ। फूल बाबू बिना ओछाइनेके खाट पर ओंघरा गेला आ हमरो बैसऽ लेल कहलनि। फूल बाबू कें सुपारीक कतरा आ दखिनी छेबाक शौक रहैन मुदा अइ आश्रम मे आएला पर तऽ ओ इहो छोड़ि देने रहथि। एमहर-ओमहर आँखि मारि कऽ कुटी मे हम देखल तऽ चूहो नजरि नहि आएल, हँ खराम अवश्य रहैन। तखन हमरा फूल बाबूक पटनावला जीवन मोन पड़ल। किसिम-किसिमक गंजी, कमीज, कुरता, पाँच-पाँच, छौ-छौ कोट, तीन तीन जोड़ जूता, चारि-चारि जोड़ चीन', दू तौलिया, दू छोट अंगपोछा, दूध तन धोल सुन्नर मसहरी, ओछाइन मे गमावला उजर कम्मल, सुन्नर सतरंजी, तोसक, गलैंच, तीन गो गेलआ। हमर फूल बाबू राजा जकाँ रहैत छलाह, आब फकीर भऽ गेलाह अछि। मोन मे बड़ कचोट भेल। मुदा संगे-संग सभाँ से हो बढ़ऽ लागल।

कनी काल बाद फूल बाबू पुछलनि जे कियाक अएलह अछि। फेर तऽ हम एक-एकटा कऽ सब बात कहि देलियनि। अंत मे पुछलियनि—छोटका मालिक थाना मे रिपोट कऽ देलखिन अछि, हमरा ऊपर चोरीक अपराध लगौलनि अछि। दरोगा तऽ नइ मानतैक। की तऽ घूस लेतै वा बात के आगा बढ़ा देतैक। अइ सं हमरा छुटकारा कोना हैत?

एतेक बात सुनियो लेला पर फूल बाबूक मुँह सं एको आखर नहि फुटलनि। हमरा सब बात के ओ पीबि गेलाह। हम सोचल जे छोटका मालिक हिनकर फूफा लगैत छथिन, इ यदि सिपारिस कऽ देताह तऽ छोटका मालि-

कक मोन ठंढा भ जएतैन। थाना मे जे गाह मालिक रिपोट कऽ देलखीन अछि से शान्ति खतम भऽ जाएत। फूल बाबू पुर्जी लीखि कऽ हमरा दऽ देताह अथवा कोनो दोसर आदमी के मालिकक ओइ ठाम पठौथीन। कहुना हो, काज तऽ हमर भइए जायत। मुदा फूल बाबू तऽ अगम कुँआ बनि गेलाह, जाइ मे तकलो सँ लोक केँ डर लगैत छैक।

हम सोचल जे आइ बाबू गांचि-गांचि कऽ कोनो बात कहताह। भोर मे जखन हम जाए लागब तऽ कोनो पुर्जी जरुर देताह। हम बहुत बात सोचैत रही। यदि फूल बाबूक इच्छा हैतेन तऽ हम मास पुरलाक अपन डीह छोड़ि कऽ हुनके गुलामी करब। फूल बाबूक मोन हैतेन तऽ रेवनीक गौना जल्दी कराकऽ माएक संग हम पटना चलि जाएब, ओतऽ रिक्शा खींच कऽ वा दीघा घाट पर जहाजक माल ढो कऽ माएक आ अपन जिनगी गुदस्त करब। नइ जौं फूल बाबूक इएह राय हैतेन कि कटिहार, सिलीगुड़ी वा जलपाईगुड़ी जाकऽ जंगल मे मजूरी करी तऽ ओहो करब। एहि तरहक बहुत बात सोचि कऽ हम आसरम पहुँचल रही। हमरा इहो भरोसा रहै कि फूल बाबू जखन गाँधी महतमा के चेला बनि गेलाह अछि तऽ हमरा मालिक के एहि जोर जुलुमक बाबते ओ दु बात जरुर कहथीन। गाँधी महतमा नइ बड़ा लाट सँ डेराइत छथि नइ छोटा लाट सँ, नइ सरकार सँ आ नइ अमला सँ। गरीबक पच्छ लैत छथीन। फूल बाबूक सेहो गाँधी महतमाक चेला भऽ हमरा बास्ते कि एतबो नहि करताह, कि अपना फूफा-फूफी के कने बुझा देथीन? ओइ दिन फेर फूल बाबू हमरा सोझा मे मुँह नइ खोललनि। हम बड़ी काल तक सूतल रहलहुँ। जेठक मास रहैक। आसरम एक बड़का कलमबागक बीच मे रहला सँ ठंढा रहैक। कुटीक बाहर ओसारा मे एक सीतलपाटी पड़ल छलैक, टूट-फूटल सन। ओइ पर हम चित भऽ कऽ जे

पड़लहुँ से तखने निन टूटल जखन गोसैंयाँ लुकझुक करैत रहथि, साँझ होबइ बला छलैक।

आँखि मलैत उठलहुँ आ फूल बाबूक कुटीक नजदीक पहुँचलहुँ। जिंजिर चढ़ल रहैक आ दुनू दरवाजा बन्द रहैक। हम कोठली फाँकिकऽ भीतर नइ गेलहुँ, एमहर ओमहर घूमैत रहलहुँ। एतेक मे फेर घंटी बजलैक। ई की छैक? देखल जे एक चौमुहाँ दलान मे बाबू भैया लोकनि जमा भऽ रहल छथि। हमहू ओम्हरे गेलहुँ।

दरवाजा नमहर नइ रहैक। मुदा ओकरा दलान नइ कहि मंडप कही तऽ बढ़िया। चौकोर मंडप, डाँड़ भरि ऊँच। ऊपर चढ़बाक लेल चारि ईंट राखि कऽ तोख सीढ़ी बनल रहैक। खजूरक पातक बनल बड़कीटा सीतलपाटी ओछाएल रहैक, हाँसुक रुप मे लोक सब बैस गेलाह। सब बाबू भैया रहथि। हमर छोटकी मलिकाइन सन चेहरा-मोहरावाली एक स्त्रीगन सेहो रहथिन। पच्छिम दिस कमलक एक चितकाबर आसनी राखल रहैक। ओइ पर उज्जर धमिरबला धोती धारी एक बाबू बैस गेलाह। एकर बाद सब एक अबाज मे श्लोक पढ़ऽ लगलाह। हमर हिम्मत नइ भेल जे मंडप मे जाकऽ बैसी। नीचे ठाढ़ रहलहुँ। कनीकालक बाद ओ महिला भजन गाबऽ लगलीह। बाकी बाबू-भैया ओकर गाओल पद के दोहराबए लगलाह।

अधिक किछु नहि बुझलो पर एतेक तऽ हम बुझिए गेलहुँ जे गाँधी महतमाक पूजा पाठक इएह तरीका छैन्ह। हमर फूलबाबू सेहो मगन भऽ कऽ भजन गबैत रहथि। आशा छल जे राति मे भोजनक उपरान्त फूलबाबू किछु बजताह। मुदा नइ बजलाह, तऽ कहमछा कऽ आ कनी नरमी सँ हम पुछलियैन—सरकार हमर निस्तार कोना हेतै?

अइपर कनीकाल चुप रहिकऽ फूल बाबू बजलाह—हमरा तऽ आब गाँव-

घर स कोनो सम्बन्ध नइ रहल । माए आ बाबूजी आब सेहो हमरा सँ हारि मानि लेलेन अछि । पहिने चिट्ठी लोखिकऽ बात-विचार पूछैत छलाह । अखन हमरा दिल सँ बरोबरि ओ उदासी देखलनि तऽ आब ओइतरहक बात चिट्ठी मे नइ लिखैत छथि । पीसीक ओइठाम हम दू बरख सँ नइ गेलहुँ अछि । पीसा सँ भेंटघाटला हमरा तीन बरख भऽ गेल । बालचन, आब तोही कहऽ जे एहना हालत मे हमरा कोनो बातक तोरा मालिक पर कतेक प्रभाव पड़तेन ।

अन्हरिया राति रहैक । बांसक कुटी सँ खांगड़ खसारक आवाज उठैक तऽ पहिल रातिक इजुक निर्जनता फाटि जाइत छलैक । लगपासक गाँव सँ कुकुरक भुकनाइ साफ-साफ सुनाइत छलैक । राति अधिक नहि डेढ़ पहर बीतल हेतैक । मुदा आसरम मे रहऽवलाक लेल दिन ने सुतनाइ मना रहैक । नींदक भोंक सँ गरमी दिन मे आसरमक बाबू-भैया कोनो गोरचा लेल छलाह ? अनेत कुह भैया ? कोनो-कोनो सोराजी बाबू जरला नलाकऽ दुपहरिया बितबैत छलाह कोनो बाबू बड़का ओसारा पर टहलि-घूमिकऽ अपन नीन पचबैत छलाह । कोनो कोनो बाबू दू-तीन गोटे मिलिकऽ गीता व रमाएन लऽ बैसैत छलाह । एगो बाबू एहन रहथि कि छोट-छोट शीशी मे सँ दबाइक सरिलबा दाना निकालथि आ गनि-गनि कऽ ओही शीशी मे फेर ओही दाना कें रखैत जाथि । हुनी आलस ओंघी पचैबाक एक उपाय छलैक ।

माने ई कि दिन भरि सूतऽ पर आसरम मे बड़ कठिन पहरा रहै । अही सँ साँझ-सकाले बाबू भैया लोकनि भोजन कऽ कऽ अपन-अपन ओछैन पर ढेर भऽ जाइत छलाह । भोरे एकदम अनहोखे घंटी बजै आ उठनाइ जरूरी भऽ जाइक ।

हम सोचल जे अखन मालिक के सुतऽ देबाक चाही, भोर भेलापर बाकी गप्प करब । मुदा फूलबाबू तऽ इ कहिकऽ बात खतम कऽ देलेन जे ई तऽ तोहर आगलक झगड़ा छोक, बहिया-महतो कें । एकर निबटारा सेहो तोही दुनू गोटे, कऽ लेबे । अइ मे हमर कोनो जरूरति नहि । ओजा कऽ अपन मालिके के हाथ पैर पकड़ । ओ तोरा माफ कऽ देथुन । फूलबाबू सँ हमरा अइ बातक उमीद नइ छल । भरोसा रहए जे ओ हमरा बचायक कोनो ने कोनो रस्ता जरूर निकालताह ।

केहन धोखा मे हम पड़ल रही । हमर सब मोह क्षणभरि मे टूटि गेल । साफ-साफ बुझाए लागल जे बाबू भैया लोकनि ओतबे कालतक हमरा लोकनिक पच्छ लेताह जाबत तक हुनका लोकनिक अपन मतलब रहतैन । देखह ने फूलबाबू एक छोटका पुरजी अपना पीसाक नाँव सँ हमरा द दीतथि तऽ अइमे हुनकर महातम कि बिगरि जैतनि । अन्हार छलैक सूझैत नहि छल । मुदा हमरा साफ साफ बुझऽ मे आएल जे फूल बाबूक माथा भारी भऽ गेलेन अछि आ गेरुआ पर एक दिस घुड़कि गेलेन अछि । भैया ! हो भैया ! पीसा आ सरबेटाक सम्बन्ध बाप बेटाक सम्बन्ध बूझह । अइ सम्बन्ध मे ओइ छोटका पुरजी कऽ खरोच नइ पड़ि जैतनि । सोराजी भऽ गेल छलाह ते कि, छलाहता आखिर बाबुज-भैया ने ! गरीब-दुखियाक दुःख ई लोकनि की बुझथिन ।

सच बूझलऽ भाई तखन हमरा मोन मे ई बात बैस गेल जे जेना अंगरेज बहादुर सँ सोराज लेबाक हेतु बाबू भैया लोकनि एक भऽ रहल छथि, हल्ला-गुल्ला आऽ झगड़ा झंझट मचा रहल छथि ओहिना जन बनिहार, कुली-मजूर आ बहिया खबास कें अपना हकक लेल बाबू भैया सँ लड़ऽ पड़तैक ।

फूलबाबू सँ कनिको भरोसा नइ रहल । कनीकाल अन्हार मे हम

बसल रहलहुँ। फेर बाहर आ कऽ ओसारा आ ओहि टूटल पटिया दिस बढ़लहुँ। निपट अन्हार छलैक। पैर सँ टटोरिकऽ पटिया भेटल आ ओइ पर पड़ि रहलहुं। ओइ के बाद कखन नीन आबि गेल आ केना भोर भऽ गेलैक से बूझऽ मे नहि आएल।

आँखि मलिकऽ उठलहुँ आ फूल बाबूक कोठली दिस गेलहुं तऽ देखल जे जिंजिर चढ़ल छैक। केवार बन्द रहैक। बाबू नहाए गेल हेताह हमहू पोखरि दिस बढ़लहुं। एतए कनेक आसरमक विषय मे तोरा लोकनि कें कहि दैत छिअइ।

ई आसरम दस बीघा जमीनक हाता मे पसरल छलैक। लाकिन बरडनपुरा, थाना लहेरियासराय जिला दरिभंगा। अहठामक बहुत बड़का जमींदार बाबू शुभंकर भुँइहार खनदान के रहथि। नीक जमींदार मे हुनकर गनती रहैन। अस्सी-नब्बे हजारक मलगुजारी असूल होनि। डेढ़ हजार बीघा धनहर खेत अपना जोत मे रहैन। बीजू आ कलमी आम बाग पचासो बीघा मे छलैन। केरबनी, खढ़ोर सब रहैन। गाय, बरद घोड़ा आ महींसक चरागाह पचासो बीघा जंगल रहैन। आठ-दस छोट नमहर पोखरि रहनि। गुमश्ता, बराहिल, अमला-फमला, नोकर-चाकर देवान जी मुनशी जी सब रहैन।

बूढ़ा मालिक इलाका भरि मे राजा बाबू कहाइत छलाह। दूटा बेटा रहैन। एक हीराजी, आ दोसर मानिकजी। हीराजीक दोसर नाँव छलैन, किशुन वल्लभ, नारायण ठाकुर। मानिक बाबूक नाँव छलैन राधा वल्लभ नारायण ठाकुर।

मानिक जी पढ़ऽ मे बड़ा तेज रहथि। कलकत्ता मे रहि कऽ बी॰ ए॰ तक पढ़ने छलाह। ओकरा बाद गाँधी जीक लहरि मे हमरा फूलबाबू जकाँ मानिक जी सेहो बहि गेलाह। जज-बालिस्टर नइ बनि कऽ अपना जिलाक नेता बनि गेलाह। अपन दरबारी नाँव मानिक जी छोड़िकऽ औ लोकै राधा बाबू कहयैत छलाह। बड़ा पक्का कांग्रेसी छलाह। एहन पक्का कि बाप आ बड़का भाइ सँ झगड़ा कऽ कऽ आसरमक लेल एतेक टा अहाता ओ दफानि नेने छलाह। वैह ओइ आसरमक सर्वे-सर्वा रहथि। हुनका पाछाँ सोराजी बाबू लोकनिक एक छोट पलटैन रहैन। शुरु-शुरु मे हिनकर शाहखर्चीं अइ जिला मे गाँधी महतमाक काज आगा बढ़ाबऽ मे काफी मददि केलकैक। तकरा बाद बाप आ बड़का भाई इस्टेट सऽ एको पैसा देनाइ रोकि देलखीन। अइ सँ नाराज भए राधा बाबू घरक लोक सब सँ असहयोग कऽ देलनि। असहयोग कि होइत छैक भाई?

गाँधी महतमा ई तरीका निकालने रहथि जे शत्रु यदि बली हो तऽ लौ लाठी सँ ओकर मुकाबिला नइ कऽ सकैत छहक, ई ओकरा सँ बजनाइ-भुकनाइ बन्द कऽ दे ओकरा कोनो काज मे मददि नहि पहुँचाबह, शत्रु दच्छिन दिस मुँह कऽ कऽ ठाढ़ रहैतऽ तो मुंह फेरि कऽ उत्तर दिस कऽ लऽ। सहयोग क अर्थ होइत छैक, संग देनाइ, संग मे जुटि गेनाइ।

से भैया राधा बाबू अपना घरक लोक सब सँ असहयोग कऽ देने रहथीन। एतेकतक कि हुनकर बालबच्चा तक मानिक मे रहैत-रहैथ। हुनकर स्त्री अपना नइहर मे रहऽ लगलैन। भगवानक परताए सँ ससुर सेहो हुनक बड़का भारी जमीन्दार रहैन। आ भैया, राजा अपना बाल-बच्चाक विआह रजे-खनदान मे करैत अछि। राधा बाबू कें नगद पचास हजार तिलक चढ़ल रहैन। हाथी, घोड़ा, पालकी, खवास, जमीन-जजात सब दहेज मे भेटल रहैन। राधा बाबू जखन सोराजी बनला तऽ हुनका बाल बच्चा के सम्हारऽ मे सासुरक धन बहुत मददि केलकैन। जिला भरि मे दु-तीन बाव भैया अपना

अपना स्त्री कें परदा सं बाहर निकालने छलाह। ओहि मे सं एक छलाह राधा बाबू। बूढ़ा मालिक जखन अपना पुरोहुक बेपर्दगीक विषय मे सुनलैन तऽ हुनकर दिमाग पथरा गेलैन। आँखि चोन्हिया गेलैन। ओ राधा बाबू कें कड़ा पठौलखीन जे ड्योढ़ीक अन्दर पैर नहि राखए। बादे सं राधाबाबूक असहयोग शुरू भेल रहैक, बेटा असहयोगक अंत कऽ देलकैन। राधाबाबूक माए मरलैन तैयो ओ घरक लोक के संग नहि देलखीन। लोक सब कहैत छलैन जे राधा बाबू अकरी नास्तिक भऽ गेलाह अछि। माएके मरला पर ने केश कटौलनि आ ने अशौच मानलैन। आनरमक सब काज पहिने जकाँ करैत रहलाह। जखन हुनकर माए मरल रहैन तखन थाना मधेपुर आ फुलपरासक दिस बड़ जोर बाढ़ि आएल रहैक। आदमी-जन, माल-मवेशी सभक बड़ खराब दशा भऽ गेल छलैक। राधा बाबू चारि टा डेंगी कऽ कऽ ओहि इलाका मे अपना सगीक संग रिलीफक काज कऽ रहल रहथि।

साँझ कऽ मंडप मे फराक आसनी पर जे बाबू बैस कऽ पूजा-पाठ करैत रहथि आ पाछाँ मगन भऽ कऽ भजन गबथि बेह राधा रहथि। पोखरि दिस जएथा काल मे ओही राधा बाबू सं हमर भेंट भऽ गेल। रुकि कऽ पुछलनि — थानुक छें कि ग्वार। ग्वार छी सरकार—हम कहलिऐन। ओ चारि डेग आगां बढ़ि अएलाह। हम गरदनि टेढ़ कऽ कऽ हुनका दिस देखैत रहलहुँ। एकाएक रुकि कऽ राधा बाबू पाछा सं हमरा दिस देखैत रहलाह आ कहलनि —आसरम मे रहबे? तोरा अपना संग रखबौ, किछु पढ़ियो लीखि जयबे। दस-पाँच रुपैया ऊपर सं दऽ देबौ, घर पठा देल करिहे। हम किछु कहलि-येन नहि। एकदम गुम-सुम रहि गेलहुँ। आँगुर सं आँगुर पकरऽ चेष्टा करैत रही।

राधा बाबू एकदम लगीच आबि हमरा कन्हा पर अपन हाथ रखलैन तऽ बड़ नीक लागल। नहाकऽ आएल रहथि; हथेली हेनाल भऽ गेल छलन। हम दुहि कऽ उठल छलहुँ। राति भरिक गरमी देहपर हेलैत छल। कन्हा पर हुनकर ठंडा हाथ हमरा बड़ नीक लगैत छल। एक नजरि हुनका दिस देखि कऽ फेर हम अपन पपनी नीचा खसा लेलहुँ।

की बात छै—बाबू पुछलनि। हम फेर चुपे रहलहुँ। आब आर लग मे आबि कऽ ओ हमर ठुड्डी उठौलनि। लाज आ झिझक सं भरल हमरा आँखि मे अपन आँखि दैत ओ बजलाह—नहि रहबे आसरम मे?

माथ हिला कऽ जखन हम हँ कहलिऐन तऽ ओ छोड़ि देलन। फेर कहलैन जे हम फूल बाबू सं बात कऽ लेब।

हम पोखरिक भीड़ पर पहुँचलहुँ। दुपुख पुरान पोखरि छलैक। हरियर कचोर पानि। चारु दिस सिमिटक पक्का घाट। भीड़ पर तीन दिस कलमी आमक गाछ, एक दिस शीशोक सुन्दर पांती देखि कऽ किछु काल तक ओही ठाम मोन गड़ल रहल। भीड़ सं नीचा उतरि कऽ खेत मे दीसा फिरलहुँ आ पोखरिक एक कोन मे जतऽ पैरक चेन्ह बनल छलैक आबि कऽ शौच कएलहुँ। पक्का घाट पर आबि कऽ हाथ मटिआएलहुँ। आमक पल्लव तोड़ि कऽ दातमनि कएलहुँ' ओकरा चीर कऽ जिभिया बनैलहुँ आ जीह कें साफ कएलहुँ।

कपड़ा हमरा मामूलिए छल। आठ हाथक मैल पुरान धोती छल। देह पर गंजी आ दू हाथक अंगपोछा। धोती फेरि कऽ पहिरऽ लेल राखि लेलहुँ। डराडोरि मे अंगपोछा के बान्हि डाँड़ मे लपेटि कऽ पोखरि मे नहाय लेल उतरलहुँ। कहबी छै, 'आन गामक पोखरि आ अपना गामक गाछी,' डेराअन होइत छैक। हमरो पानि मे जाइत किछु डर भेल। मुदा हम हेलऽ तऽ जनिते छलहुँ तखन डर कथी के? हँ ओइ नमहर पोखरि वा झील मे अवश्य डरबाक चाही, जाइ मे, गोहि, बोच, घरियाल, सौंस वा बड़का-बड़का रहु,

सुत्ता आ भाकुर माछ रहैत छैक। ई गाँव थारक बात नइ मेला सँ आइ पोखरि मे गोहि घड़ियाल भइए नइ सकैत छैक, से निश्चिन्त भऽ कऽ बड़ी काल तक पानि मे बोहियाइत रहलहुँ। हेलनाइ आ बोहिएनाइ तू फराक बात छैक भैया। हाथ-पैर मारैत जाइ तऽ हेलनाइ भेलइ। एना बेसीकाल अथाह पानि मे फैल जाइत छैक। गरमीक दिन मे अधिक काल तक हरा-थटक मजा लेबाक हेतु लोक थाह पानि मे पड़ल रहैत अछि। सउँसे धर पानि मे रहैत छैक आ माथ ऊपर। एकरे बोहियेनाइ कहैत छैक। बुझलइ भैया।

मोन जखन तिरपित भऽ गेल आ देह हेमाल भऽ गेल तखन बाहर भेलहुँ। जल्दी-जल्दी धोती पहीर कऽ अंगपोछा खिचलहुँ आ ऊपर अएलहुँ।

हमरा तऽ होइत छल जे आसरम मे रहि जाइ, मुदा माए बहिन के ओइ दशा मे छोड़ि देनाइ खराब बुझाइत छल। दोसर बात ई रहैक जे छोटका मालिक थाना मे चोरी के रिपोट कऽ देने रहथीन। हमरा बुझाइत छल जे चारि छौ मास जेल मे सजाए भोगऽ पड़त।

नहैला सँ देह तऽ ठंडा भेल मुदा मोन के फिकिर फेर गरमाबऽ लागल। भारिए पैर लऽ कऽ हम आसरम घुरलहुँ, आ फूल बाबूक कोठलीक भीतर अएलहुँ। ओ पिनसिल सँ किछु लिखैत छलाह। हमरा हुँकारी भरि कऽ इशारा कएलनि जे जग मे थाबिकऽ बैस जो। हम बैस गेलहुँ। लिखनाइ समाप्त कऽ कऽ बजलाह—राधाबाबू हमरा तोरा विषय मे कहैत छलाह। ओ तोरा अपना संग राखऽ चाहैत छथुन। किथाक ने रहि जाइत छे?

हम कहऽलियैन हमर गरदनि तऽ फँसल अछि—जहल हेत कि जुरमाना के जाने। बाबू कहलनि किछु नइ हेतौ, तों राधा बाबू के संगे रहि जो। सब बात ठीक कऽ लेल जएतैक।

हमरा बड़ा अजगुत लागल कीना सब बात ठीक कऽ लेल जएतैक।

कीना केओ छोटका मालिक पर अंकुश देतैक। फेर मोने मोन हम ई तय कएलहुँ-जे होने हो राधा बाबू फूल बाबू सँ सब बात नइ तऽ किछु बात अवश्ये बुझि नेने हेताह आ तेँह कोनो ब्योंत लगौलाह। नहि तऽ फूल बाबू सँ कि हेतैन? ई तऽ अपने भारी दब्बू छथि।

बातो इएह रहैक भैया! राधा बाबू नामी सोराजी रहथि। हमरा ओइठामक बड़का मालिक सँ राधा बाबू के कोनो सम्बन्ध सेहो छलैन। ओ एक चिट्ठी बड़का मालिकक बेटाक नाँव पठौलखीन आ दोसर चिट्ठी दरोगा-जीक नाँव। दरोगाजी एक बेर एस० पी० आँखि सँ राधे बाबूक बदौलत बाचल छलाह तहिया सँ दरोगाक दिलमे राधा बाबूक लेल बहुत सम्मान भऽ गेल छलैन। कहबाक मतलब ई थीक जे हमर मामला समाप्त भऽ गेल। सजाए-तजाए नहि भेल आ ने जरिवाना भेल। बात जहैं-तहैं दबि गेलैक। छोटका मालिक अइ के बाद गाँव सँ चलि गेलाह।

छोटका मालिकक ई करनी चोरैल नइ रहि सकलनि। हमरा बहिन पर जे ओ हमला कैने रहथीन से बात सहे-सहे सउँसे गाँव मे फैल गेलैक। बाबू-भैया लोकनि भीतरे-भीतर एक दोसरा पर सह चलबैत रहैत छथीन। समाजी शत्रुता बड़ खतरनाक होइत छइक। हमरो मालिक सब मे आपसक दाब पेंच खूब चलइन। एक दोसरक कमजोरीक नफा उठाबऽ मे बाबू भइया अपन सब बुद्धि लगा दैत रहथि। कहबी छैक जे सतरंज खेलऽबला के बागाक दस चालि सोचिकऽ राखि देबऽ पड़ैत छैक। बाबू भैया लोकनि अपना मे एक दोसरके मात करबाक हेतु सतरंजे जकाँ शह पर शह सोचैत रहैत छथि।

से जखन छोटका मालिक पर मलिकानक छोटका-बड़काबाबू लोकनि नाक भौं सिकोड़ऽ लगलाह तऽ तुरंत गाँव सँ चलिए जाय मे अपन नीक बुझए-

लैन। देखनी, हमर माए आ हमरा पर जे खीफ रहैन तकरा ओ चुपता कऽ मोनक कोनो गाँठ मे बान्हि लेलैन आ कलकत्ता दिस चलि गेलाह।

हम राधा बाबूक संगे रहऽ लगलहुँ। सब सँ पहिला काज ओ जे कएलनि से ई जे हमरा वास्ते ओ असमानी रंगक पैजामा सिया देलैन, खाकी रंगक हाफ कमीज आ उज्जर टोपी। सब पहिरक जखन हम पहीर कऽ तैयार भेलहुँ तऽ कहलैन—जेओ पूछौ तऽ ई नइ कहि अही जे आसरमक हम नोकर छी। पूछलियैन जे कि कहबैक? तऽ कहलैन जे कहियही जे काँगरेसक भोलंटियर छी, बुझलेँ? हम मथा हिला देलियनि। आब फूल बाबू सँ हमर कोनो लागि-भागि नइ रहल। एवे बाबू हमर मालिक छलाह।

हमर उमेर सतरह पार करैत रहे। मोंछक पम्हो आबि रहल छल। देखऽ मे सुन्दर नहि छलहुँ तऽ खराबो नइ छलहुँ। कहिए देने छियऽ जे हमर बाप दाद बढ़िया काठीक मजगूत लोक छलाह। छाती चाकर, विस्तृत कपार, विशाल चेहरा हाथ पर लटकल बाला। हमर माए सेहो पिण्डश्याम जरूर छल, मुदा चेहरा मोहरा, साँचा-ढाँचा बड़ नीक रहैक। छोटे उमेर के हम रही तखने बाबू मरि गेलाह। घर पर कष्टक पहाड़ खसि पड़ला सँ हमर गिरस्ती चौपट भऽ गेल छल। दादी आ माए नइ जानि कतेक कठिन सँ पालि-पोसि कऽ हमरा दुनू भाई बहिन के नमहर कएने छल। नइं जानी कतेक धैर्य नोर सँ हमर बचपन पटाओल गेल छल।

राधा बाबू आसरमक महंथ रहथि। बहुत पढ़ल-लीखल छलाह। भागलपुर कलकत्ता मे रहिकऽ अपन पढ़ाइ ओ पूरा कएने छलाह। पूरा कि कएने रहथि पार पहुँचनि किनारा के छोड़ि देने रहथि। थाड़े आर पढ़ितथि तऽ परफेसर भऽ जइतथि। धन-दौलत कें कोनो कमी तऽ रहैन नइं तऽ विलाइत सेहो जा सकैत छलाह आ बालस्टर भऽ सकैत छलाह।

मुदा बीचे मे दिमाग बदलि गेलैन। लोक सब कहैत अछि जे बूढ़ा मालिक राधा बाबू सँ बड़ आशा रखने रहथि। ओ कहथीन जे मालिक जी कि तऽ कलट्टर बनता वा एस० डी० ओ० अइ सँ छोट हाकिम ओ कि हेताह? फेर बूढ़ा मालिक ई सपनाइत रहैत छल हेताह जे मालिक जी कलट्टर बनि कऽ अइ जिला मे अएताह तऽ हमरा खनदानक कतेक रोब दाब बढ़ि जाएत। जिला भरिक बड़का-बड़का लोक सब मालिक जीक सोझा मे हाथ जोरि कऽ ठाढ़ हेताह। बड़का-बड़का बाबू लोकनि मालिक जी सँ हाथ मिलएबा मे अपन अपन अहोभाग्य बुझताह। खरौरे खानदानक भारी भारी राजा-राजकुमार आबर आ जतन सँ मालिक जी के भेंट-सौगात पठौथीन। महाराज सेहो मालिक जीक आदर सम्मान करथीन।

ई सब सोचैत-सोचैत राधा बाबूक बाप, बूढ़ा मालिक चौधरी शुभंकर ठाकुर एतेक मगन भइ जाइत छलाह कि कलट्टरक कलट्टरी बिसरिक हुनका वास्ते बपौती-विरासत जकाँ बुझाइत छलैन। कनिक सोचहु भैया कि राधा बाबू एकाएक पढ़ाई छोड़ि कऽ अपन वृद्ध पिताक आस-भरोस पर कतेक भारी बज्जर खसौलखीन?

राधा बाबूक ससुर सेहो बड़का भारी जमींदार रहथीन। अपन जमाएक विषय मे ओहो बड़ पैघ आस लगौने छल हेताह से ओ बेचारा सेहो निराश भऽ कऽ खसल हेताह। राधा बाबू डेढ़ सालक सजाए काटि आएल रहथि। पटना कम्प जेल मे हुनका राखल गेल रहैन। जखन महत्मा गाँधी के लाट बहादुर इरविन सँ सुलह भऽ गेलैन तऽ देश भरिक सब जेल सँ कैदी सब के छोड़ि देल गेलैक। फूल बाबू से तखने जेल सँ छूटि कऽ आएल छलाह। राधा बाबू सेहो ओही समय मे छूटल रहथि।

आसरम मे बाबू-भैया आ नोकर-चाकर मिला कऽ बीस आदमी रहथि।

महतमा जीक हुकुम नइ रहनि जे गोराजी लोकनि आसरम मे ककरो नोकर चाकर-बनाकऽ राखथि। तइयो आसरम मे हमारा लोकनि चारि आदमी रही से नोकरे रही कहऽके लेल भोलंटियर कहिऔ, सेवक कहिऔ, मुदा रही हम सब केओ नोकरे। एकगोटाक नाँव छलैक रुपलाल, दोसरक छट्टू, तेसर मंगल आ चारिम हम। रुपललवा, छटुआ, मंगला, बलचनमा। हम चारू भिन्न-भिन्न जातिक रही। रुपललवा धानुक रहै, छटुआ मलाह, मंगला पासी आ हम ग्वार। एगना बछौरक एक मिसर जी रहथि, ओ भानस बनाबक काज करथि।

मिसर जीकें खेनाई-पीनाई दऽ कऽ ऊपर सँ बारह रुपैया भेटैन। हमर दरमाहा ठीक नइ रहै। कहियो सात, कहियो आठ आ कहियो दस। राधा बाबू मौजी जीव रहथि। हमरा ऊपर हुनकर सिनेहो बड्ड रहैन। खेनाई पिनाई, कपड़ा-लत्ता बढ़िया अकाँ भेटै। अपन खास भोलंटियर बना कऽ ओ हमरा रखने छलाह। दूर मे जहाँ जाथि हमहूँसंग रहियनि। राधा बाबू कें हमर बड ध्यान रहैत छलैन। लोक सब हुनका देवता अकाँ मानैनि। चढ़ावा हुनका जे भेटैन से थोड़-बहुत हमहू पाबि जाइ।

रुपललवा खेनाई छोड़िकऽ आठ रुपैया दरमाहा पाबै। छटुआ से हो आठ। मंगलाक दरमाहा छौ रुपैया रहैक।

रुपललवा आसरमक खेती-बारीक काज देखैक छटुआ लग पासक गाँव सँ अन्न बटोरिकऽ लाबै। मंगला आसरमक चपरासी छल। झाड़ूदेनाई, घैल मे पानि भरि कऽ रखनाई, डाक लेनाई आ लऽ जेनाई, दुखित भऽऔला पर बाबू भैया लोकनिक पथ पानि केनाई मंगलाक काज छलैक। एनातऽ राधा बाबू हमरा आसरम भरिक लोक सब सँ इएह कहने रहथीन जे हमरा छौ रुपैया महीना भेटत। मुदा देत काल बाबू सब बेर किछु बढ़िके देथि। एना

भियैक होइक !

बात ई रहैक भैया जे राधा बाबू राजा खनदानक छलाह। पढ़ाई कर-बाक समय इस्टेटक रुपैया फूकैत रहथि आ आब पब्लिकक। चन्दा आसरम मे खूब अबैक। केओ हुनका सँ हिसाब लेबऽ बाला नइ रहनि। जेना इच्छा भेलैन तेना खर्च केलैन। हमरो ओही झोंक मे कहियो सात, कहियो आठ कहियो दस आ एकाध बेरतऽ बारह रुपैया हमरा हाथ मे ओ थम्हा देने छलाह। एकर अतिरिक्त मेला ठेला, हाट-बाजार, पाबनि-तिहार अवसर पर एकन्नी, दुअन्नी, चौअन्नी, अठन्नी दैते रहैत छलाह।

नवका मालिक सँ हमरा खूब पटै। फूल बाबूक दिस सँ जे उदासी मोन कें घेरने रहै से आब फाटऽ लागल। आसरमक हवा-पानि, बाजब-भूकब रंग ढंग हमरा नीक लागै। एतए दू चारि बाब-भैया एहनो रहथि जे भीतर सँ गरीबक दुःख दर्द बुझथिन। बातचीत मे हुनका मुँह सँ मलिकाना गन्ध नइ अबनि। राधा बाबू सँ हो बहुत नरमी सँ बजैत-बतियाइत रहथि। कखनों-कखनो नाक-भौं चढ़ाकऽ ओ अपन रोब अवश्य परगट करथि। मुदा हुनकर क्रोध आ नाराजी आसरमक लोक बास्ते ओहने रहैक जेना कोनो बढ़िया खनदान के ईमनदार मुखिया के होइत छैक।

५

हमरा जातिसभ मे लोकक बिआह लड़िकारिये मे होइ छैक। तइँ एकरा बिआह की कहब, लगाइये कहब से ठीक होएत। छ बरीस के उमेरि मे हमर बिआह भऽ गेलै। आर तऽ किछु मोन-तोन नहि अछि, मुदा बरिआती मे बाजा बजबै बला सभक मुँह नहि बिसरल अछि। बड़का गीरहथ सवारी मे पालकी मङनी देलथि। हमरा लोक कनैलक फूल सँ सजि हमरा ओइ पर बैसा देलक। बरिआती मे दस बारह गोटे सँ गेल। पीरा धोती, हरिअर डोरिआक अंगा। माथ पर जरी बला टोपी। पैर खालिए। हमरा सबटा तऽ मोन नहि अछि मुदा केश आर लाइ जे खाइ लेल देलक से खूब बढ़िआ जकाँ मोन अछि। पाकल-पाकल पिअर केरा की सनगर रहैक मुरहीक लड्डु कें हमरा बेरावरी मे जाइ कहै छै। बिआहक खातिर कै दिन तक हमरा माए आ दाइ सँ फराक रहऽ परल। किएक तँ हमर सासुर हमरा गाम सँ बारह कोस दूर छल। बरिआती मे हमरा सभ मे जनी-जाइत के तऽ जइये नहि जाइ छैक।

सुनऽ मे आएल अछि जे पच्छिम भर ई रेवाज छैक। एहेक छोट उमेर मे अइ सँ पहिने हम गाम घर सँ बाहर कहूँ ने गेल छलहुँ। हमर कनियो हमरे एहेन तीन चारि बरिसक छल होएत। हम दूनू जनी एतेक ने छोट रही जे मोन-तोन कहाँ किछु अछि। हँ एहो मात्र बाजा-ताजा छोड़ि कऽ आओर किछु मोन-तोन कहाँ किछु अछि। हँ एहो

मोन अछि जे हम दूनू गोटे एके सवारी मे बैसकऽ ओइ गामक मलिकान सभक ओतऽ बिओकी माँगऽ गेल रही। आइ तक हम तोरा अपना बियाह कऽ नहि कहलिओक मुदा आइ तऽ कहहि परल। सतरह बरखक उमेर हमर भऽ गेल। माय पहिने साल सँ कहैये जे दुरागमन कऽ ले। से सोचि एही लेल हमर नाए अपन बेटीक बिदागरी नहि करबइ छल। ओ सोचइ छल पहिने पुतहु लऽ आनी तखन बेटीक बिदागरी करी।

ई तऽ बीच मे गीरहथ सँ फगड़ा भऽ गेल तइ दुआरे गौना रुकि गेल ने तऽ भऽ गेल रहिते। बियाह आर दुरागमन के बीचक दिन हमरा खेलए के दिन छल। एहि बीच कहिओ सासुर नहि गेलौं। सँ दुरागमन पहिने हमरा सभ मे जेबाक रीति नहि छै। हमरा सभक बियाहक बड़का आति भला सँ अलगे रीति छैक। एक ई जे बीना जनउ मेने हुनका लोकनि मे बियाह नहि होइ छैन। दोसर इ जे बियाह दुरागमनक बीच मे ओ सब सासुर आइछथि। मतलब ई जे माए के जोर देबऽ सँ हमरा गवना करय लय तैआर होअ परल। छोटकी गीरहथनी माए के बोल भरोस देलखिन। गीरहथ गीरहथनी सँ डेराथि आ हमरा बहीनक मामला सँ तऽ गीरहथ बाबू अपना जनाना के मुँह देखबहि ने चाहथि किएक तऽ देखबऽ जोग नहि रहि गेलाह। बहुत दिन तक चीठ्ठी पतरी बन्न छल बहुत दिन तऽ मालिक घरो नहि अएला।

गीरहथ बाबू कें नहि रहला सँ गिरहथनी के किछु बीगरै नहि। ओ तऽ अपने सात मनताक एक मनसा छली। जरूरति परला पर हुनकर भाइयो घोड़ापर चढ़ि कऽ पहुँचि जाइ छलैन्ह। हरवाह चरवाह रहैन खेती मे रातिदिन खटैलै बनिहारक कमी नहि रहैन। खानदानी रोबदाब रहैन। सोना के टकरा सन सेकरो बिघा खेत छलैन्ह। बाग बगीचा, गाछी बिरछी, फार फंखार, पोखरि

इनार कथुक कमी नहि । चारि जोरी बरद रहैन । गुजराती महींस । छोटकी मलिकाइन घर गृहस्तीक इन्तिजाम खूब बढ़ियाँ रखै छलीह । ई गुन नहिरेक छलैन । फूल बाबूक बापो बड़ चलाक गीरहथ रहथिन । पैघ घरक जनाना बर अकिलमन्ती होइ छै । कहियो चौखटि सँ बाहर पैर नहि रखै छलथिन । ससुर भैंसुर, भरारी, पुजारी, मुंशी जी, देवानजी, कर्मचारी ककरो सँ बी बातचीत नहि करैत छलखिन । की खवासनी सं कहबीतैथ भेलऽ देवाल खामक ओठ सं अपने कहितैथ । कोनो काज छोटकी गीरहथनीक रुकल नहि रहितैक । गीरहथ रहौथ कि नहि मलिकीनो अपने घर चलबथि ।

ई स्त्रीगन बड़ चलाकि छल । लड़ाई कऽकऽ भेल सं जेना होइतइ तेना अपन काज पूरा करबे लेलइन । सच पूछी भाइ तऽ जँ ओ पुरुख रहीत त डेनबी साहेब सनक कान काटति ।

से हो भैया ! हमरा माए के नैनानि के कोन जरी सूंघा देलकै । अपन बेइजति बिसरिकऽ हमर माए सोक भय गेल । दू मास आसरम मे रहलाक बाद हम माए सं भेंट करय गेलहुं तऽ गीरहथनीक गुनगान करैत ओकर रोइयाँ-रोइयाँ लहरऽ लगलै । ओ कहए-एहिमे मलिकाइनक कोनो कसूर नइ छइन । ओतऽ एतऽ रहबो ने करथिन । हम कहलिऐक —मलिकिनिए कोनो कि देवता छथुन जकरा ओइ ठाम हमर निबाह नहि भेल ओकरा ओहिठाम तों रहै छँ तकर माने जे तों अपन थूक चटइ छँ ।

हमरा क्रोध मे देखि माय चुप भय गेल । थोड़े कालक बाद दुरागमनक चर्चा चलल । खर्चा कहाँ सँ आओत ।

माय बाजलि—भगवान कोनो उपाय करबे करथिन की ।

हमरा ई बुझल छल जे जाहि बातक जवाब माय के नहि फुराइ छइक ओहि मे ओ भगवानक नाम लइत अछि । ई ओकर पूरान आदति छइक ।

तइयो हम कहलिऐक—भगवान कहाँ सँ ओ उपाय करथिन । हम चोरी तऽ करब नहि डाका तऽ देब नहि । आगू पाछू तऽ कियो खोज खबरि लेबऽ बला नहि अछि । तखन फेर भगवान की करताह ?

एहि पर माय किछु नहि बाजलि । हमरा भेल एहि बेर माय मानत नहि । बिना पुतहु के देखने एकरा चैन कहाँ । आ आइ नहि काल्हि, परसू नहि चारिम दिन, कहिओ तऽ दुरागमन करहि परत । ऐना तऽ नहि होएत जे आइ गरीबी अछि तऽ काल्हि रुपया सँ भरल पेल भेटि जाएत । एनाऽ नहि होएत जे आइ खैबाक उपाय नहि अछि आ काल्हि कुबेरक भंडार भेटि जैत । गरीब गुरबाक बियाह दुरागमन साजबाज सं नहि सादगीए सं होइ छइ ।

इएह सब सोचति सोचति मोन मे संतोष भेल । राधा बाबू हमरा बुझबऽ लागल छलाह तऽ सेहो फकीरे सुदा शाही फकीर । बड़का-बड़का महन्थ महात्मा पइघ-पइघ साधू बाबाजी दूध सन उज्जर मखमल सँ ओ झपने जे बैरागी महाराज रहै छथि से सब साहिए फकीर छथि । डाँर मे अंगपोछा सन चारि हाथक कपड़ा बान्हय बला मे एक आध नेता देखाइ दैत छथि से हो फकीर छथि । शाही फकीरक लीला अपार होइ छइ । ई जँ कनिको कोप करताह तऽ भगवान जानथि आर कहैत छी जे ओ अहाँक सातो पुरखा के उद्धार कऽ देताह ।

हमर राधाबाबू सेहो अपन राजकाज छोड़िकऽ सोराजी (कांग्रेसी) बनि गेलाह परंन्तु हुनकर मुट्ठी खूजल छइन एखनो कहियो ओ हमरा गनि कऽ रुपया पैसा नहि देलथि । जहिआ देलइन तहिया जेबी मे हाथ दइत जे आबिजाइन दऽ देथि । हमरई पहिने कहि चुकल छी जे ई गांधी महतमाक जमाना छलैन्ह । जाहि दिन ओ जमाना रहै कांग्रेसी भइया क छाँही देवता जकाँ झुकाइक । जकरहि पैर पड़ि जाइन ओतहि चबूतरा बनि जएतैक । ई जाहि दिन

ताकि देताइ ओहि दिन जैजैकार भऽ जैत ।

एहन नेनाक संग हमरो भाग चमकि गेल । आहो भइया । जहन एहन बात रहैक तहन हमरा फिकिरे कथिक ? सोच संकोच केहन ? मोन खुशी सँ नाचि उठल हम गीरह बान्हि लेलहुँ जे दुरागमन करबे करब ।

दोसर दिन माय के पूछलियैक—दिन तिन तकबेने छहिन ? ओ हरदि पीसि रहल छलि । लोढ़ी सिलौटक घिसिर घिसिर आवाज होइ छलइ तैंइओ पहिल बेर हमर बात नहि सुनि सकल दोसर बेर मे कनी जोर सँ कहलहुँ तऽ बीच मे माय लोढ़ी रोकि कहलक—तोहर मोन होअ तऽ दिन तिन तकाबऽ मे की लगतइक ।

ककरा सँ पुछबही ?

डीह टोल जाकऽ बड़ैक बाबू सँ पुछबनि । नौ तऽ अहिना हमरा टकइत रहै छँ, कतेक दिन तक हमर मोन टोवै ।

मायक गप्प सँ ई बूझि पड़ल जे ओ अपना समर्थ पुतोहु कैं देखबालेल छटपटाइत अछि।

साधारण जिनगी मे हेर-फेर के नहि चाहत ? यदि बारहो महीना जाड़े रहै तऽ ककरो नीक लगतै ? आ तहिना जौं भोर-साँझ नहि होइ सदिखन जेठक दुपहरियाक रौदे रहै तऽ केहन लगतैक, मनुखक जिनगी ? कहबाक अर्थ ई जे मनुक्खक जीनगीक गप्पे कोन समूचा संसार आई परिवरतने पर चलै छै । परिवरतनक पहिया सदिखन चलिते रहै छै ।

हमरा तैयार होमय पड़ल । हमरा द्विरागमन दऽ सुनि माय खूब खुशी भऽ गेल ।

आसिनक मास छलै । ओहि बरख भदइ खूब भेल छलै । आठ मन मड़ुआ अपना बटाइ बाला खेत मे सेहो भेल छल । दू अढ़ाए मन धानक आशा सेहो छल । अगहन मे हमर दुरागमन होइतइ हम जनैत छलहुं । माय के विचार छलै जे एक मासक छुट्टी कऽ ली धनकटनीक दिन मे । माय, रेवनी आर हम तीनु गोटे मलिकाइनक खेत मे धानक कटनी करब । मजूरी मे जे धान भेटत ओहि सँ दू-अढ़ाइ मासक गृहस्तीक खर्चा अवश निकलि आएत । हमरा मन मे छल जे धान कटबाक समय मे एहि बेर परदेश नहि जायब । यदि पूछल जाय तऽ खेत मे कार्य करबाक लेल हमर मोन छटपटाइ छल । डाँर मे अंगपोछा लपेटि या लंगोटी बान्हि कऽ खेत मे धान रोपक हेतु उतरी तऽ बूझना जाइ छल जे कि दू बोतल दारुक नशा सवार अछि तथा दुनिया जाओर किछु छैक नहि खाली हम छी आर खेत छैक । हमर हाथ अछि आर ई छोट-छोट हरियर-हरियर मनमोहक गाछ अछि । कनेको जोति कऽ तैयार कएल खेत मे हमरा सन-सन आओरो कतेको आदमी अछि जे धानक गाछ रोपि रहल अछि ? पानि बला खेत मे धान रोपय कें समय छुप-छुप सुप-सुपक आवाज अवैछ । ई आवाज एहि कानक हेतु सिनेमावाली सुरैयाक तान सँ भी मीठ होइछ । हमरा जिला-जवार मे नामी-नामी गवैया छथि जिनकर गीत जखन लोक सूनैं अछि मगन भऽ आँखि बन्न कऽ लैं अछि । डाइु लोकनिक घरक जनीजाइत जखन अपना मेंठी स्वर सँ मलार, बटगबनी आ समदाउन गबै छथिन तखन गाय बरद चरब छोरि कऽ इम्हर-उम्हर ताकऽ लगै छै । तहिना धनरोपनीक समय छुप-छपक आवाज बँ बढ़ि कऽ हमरा कोनो दोसर आवाज नीक लगितहि नहि अछि । तहिना धान काटऽ काल हँसूक जे खप-खप शब्द होइछै ओकरा आगू तान-तम्बूराक सूरो ने नीक लगइये । जौं ई खेत ई चास अपनहि रहैत त ई आवाज सौगूना मीठ लगैत ।

से हम ई पक्का केलहुँ जे ई अगहन गाँवे मे बिताबी । धनकटनी, गौना सम भऽ जाएत । घर-गृहस्थीक रस सेहो भेटत ।

महआक रोटी खाय मे केहन बढ़िआँ होइ छइ तहिना देखहु मे। रंग तऽ बैंगनी होइ छइ मुदा स्वाद केहन सोन्हगर, आ मधुर केहन? बनिहारक त ई लड्डू-पेड़ा हमरा सभ दिस छइक। जकरा गाय महीस छइक ओ दूधक संग खाइये। ओना नून सरिसों तेल आ हरियर मिरचाइक संग रोटी खाइये। साउन-भादव मे तिरहुत मे तरह-तरहक तरकारी होइ छइ। गरीब सँ गरीब आदमी अपना घरक पछुआरि मे झिमनी, रामझिमनी, ठढ़िया साग, भेलहारी, घीरो, घेरा, करैल, ओल, अरिकोंछ, सेकुना, छम्हाउर, हरदि, आद, मिरचाइ, भाँटा, कदीमा, कुम्हर, सजमनि रोपने रहैये। बाबू-भैयाक पोखरि सँ चोरा-चोरा कऽ माछ मारि अनैछ। हमरा सब दिस माछ बड़ पैघ वस्तु अछि। के अभागल ऐहन हैत जे भदवारि मे जलसीम भोग नहि लगाओत।

जलसीम! बुझला जोगर भेलह की नइ भैया? साधु-बैरागी के भरना-बक लेल बाबू-भइया जलसीम कहलखिन अर्थात् पाइन मे फरय वला सीम तहिए सँ जलसीम चालू भय गेलैं।

हमरा तिरहुत मे पानिक अकाल नइ होइ छइ। नदी, नाला, डबरा, पोखरि कतऽ नहि भेटत। गाँव-गाँव मे पोखरि, गली-गली मे डबरा, जगह-जगह पर धार, कहीं-कहीं समुद्र सन पोखरि देखबइ। एहन-एहन पोखरि के बैदक खूनल पोखरि कहैत छैक। दानव के खूनल एहिठाम कहबैत जे ओकरा खूनय वलाक पता ककरो नहि छैक। परंच हम राधा बाबूक मुहेँ सुनलिअन जे जहन राजा सबक मिजाजि सनकि जाइ तऽ समाजक लोक सँ डण्ड बेगारी मे लगाकऽ बड़का पोखरि खुनबैक। एहन पोखरिक नाम शिवसागर, गंगासागर, रऽ है। एहनो ई नाम सब छैहे। सुनऽ मे आएल जे सगर के साठि हजार बेटा खूनि-खूनि कऽ समुन्द्र तैआर केलकनि। से भैया! जहाँ कतहु बड़की पोखरि सब तैआर होइत देखाइ छइ से धरती मैयाक हजारो टा बेटा मिलि कऽ खूनने छैक। दोसर पोखरिक नाम राजय काल बाबू लोकनि अपना माय बापक नाम रखैत छथि। एहिना सेठ लोकनि चाउर, चीनी मिलक नाम अपना माइ बापक नाम पर रखैछ। जलसीम सँ तरकारीक कार्य चलैछ। भुंइयो मूसहर सेहो खत्ता उपैछ कऽ सेर आध सेर गईंचा-पोठी माछ डबरा सँ छानि अनै अछि। आगि मे भूजि कऽ बिना नूनक माँछ खाउ तइओ खराब नहि लागत। गरीब गुरबा सब महगी अकालक समय मे छओ मास माँछे पर गुजर करैत अछि। महंथ बैरागी कहैछक कंठ मे कंठी बान्हैत फिरत। कोठी बखारी मे धान चाउर भरल होऽ, बारी झारी बेर मे तर-तरकारी फल-फूल लागल होऽ तखने कंठीक इज्जत बाँचल रहत गरीब कंठ मे चारियो दिन ठीक सँ नहि बान्हल रहि सकैत अछि।

मतलब ई जे बाहर नोकरी करऽ वाला वर्ष मे छः महीना घरो पर बिता सकैत अछि। देह समांग ठीक रहैक तऽ सब ठीके छै। हम सोचलहुँ खौगनो एब किछु ने किछु करिते रहत खेत मे गोबर दऽ आएत, घरक काज-राज सेहो किछु-किछु करत। माइयो कें तखने सुख भेटतैक। दम्मो मारबाक कनिक-मनिक अवकाश भेटत। रेवनी क विलुड़न माय के अधिक नहि झुमेतैक छिएक तऽ पुतोहु लगे मे रहतैक। हम छः मास गाँव पर रहब आओर छः मास परदेश रहब।

आसीन-कातीक, अगहन, पूस आ माघ। एखन पाँच मास बाँकी छल। छः पञ्चे तीस। तीस रुपैया भेल। किछु ऊपर सँ मालिकी देबे करताह। किछु पहिलुका जमा अछि। समटा मिला-जुला कऽ काज चलिए जाएत।

बात एकदम ठीक भऽ गेल। दुरागमन देब्बे करत। मुदा अगहन मे नहि।

माघ मे। चारि मास खूब बढ़ियाँ सँ गामे रहब। चैत मे ओरहा खाकऽ गाम छोड़ब नहि तऽ इहो भऽ सकैये जे बैसाख मे मडुआ पटौनी कइए कऽ गाम छोड़ब।

अहिना सोचैत-सोचैत आश्रम चलि एलहुँ।

राधा बाबू जेल सँ छुटि आएल रहथि। गाँधी महात्माक आज्ञा सँ खद्दर आओर चरखाक प्रचार करथि फिरैथ। मधुबनी मे बाबू भइया सभहक गुड्ड चलैक। लग-पास के इलाका मे हजारो चरखा चलऽ लागल। सैकड़ों नवतुरिया जगह-जगह काटल सूतक लच्छीक हिसाब लैत छलाह। तकरा बदला मे काटऽ वाली स्त्रीगण पैसा सेहो पबैत छलीह तथा कपड़ोक बढ़ियाँ इन्तजाम छल। राधाबाबू इलाका सभ मे घूमि-घूमि कऽ काज देखैत छलाह।

जतऽ-जतऽ ओ जाथि हमहूँ जाइ पाछू-पाछू। हमर काज छल, बाबूक कपड़ा साफ केनाइ, कागज-पत्तर सरिया कऽ रखनाइ; ककरो ओतऽ पठबैथ तऽ ओतऽ सँ भऽ एनाई, कखनो पैदल चलल होइथ तऽ पैर-डाँड़ जाँति देनाई आओर चीज सभहक धियान रखनाई। काज कखनो-कखनो भारी भऽ जाइत छल। ई तखन होइत जखन की बाहर सँ कोनो मुखिया आयल रहैत छल। मुखिया के अयलाक पश्चात ओकरा लकऽ इलाका सभ मे घूमऽ पड़ैत छैक। कखनो टम-टम सँ कखनो रेलगाड़ी सँ। एकाध बेर राधाबाबू हवागाड़ीक जोगार सेहो कऽ लेत छलाह।

बहुतो सौराजी बाबू जमा भऽ जाइत छलाह। राधा बाबूक टहलुआ छलौं तैं सभ-खद्दरधारी बाबू हमरा अपन टहलू बुझैत छलाह। हमारो 'फरमाइश' हुनकर सभक पूरा करैत तंग भऽ जाइत छलहुँ। जे मुखिया जतेक, बड़का बूझ के होइ छलाह हुनका बाबब सँ ओतबे मलिकाना गन्ध अबैत-छलैन्ह। मुदा राधाबाबू जकाँ संत-महतमा तऽ छलाह नहि। ई हुनकर सभहक अपन-अपन

चाहैत रहैन। अपन अपन स्वभाव रहैन, रुचि छलैन्ह। किनको चुनिं धोती चाहिए तऽ किनको शरीर के घंटा भरि मालिश हेबाक चाहियैन। सुतऽकाल पैर जतएब कोनो बाबूक जेल जहरी छलन्हि तऽ किनको खाहीरक रतमनि चाहियन्ह। किया पानक पाछु बताह रहैत छथि तऽ किनको बढ़ियाँ सिगरेट चाहियैन।

किनको आँगूर फोरबाक शौख छलन्हि तऽ किनको माथ पर सादा कुसुम क तेल सुतऽकाल मलेबाक शौख रहैन। टूटा बाबू एहनो रहथि जे अपन चरखा रखने रहथि। वैह पेटीवाला चरखा जकरा यरबदा चक्र कहैत छै। ई चरखा हमरा राधा बाबूक संग मे सेहो छलैन्ह। परञ्च जखन अन्तह घूमक लेल निकलैत छलाह तखन चरखा संग मे नहि लैत छलाह। आसरम मे रहैत काल मे राधाबाबू चलबैत छलाह। कखनो-कखनो एहन होइत छल कि बाबू लोकनि अपने बड़का मुखिया संग हवा गाड़ी मे लटकि कऽ चलि जाइत छलाह आओर हुनक चरखा हमरा लऽ जाए पड़ैत छल। एक बेर एना भेलैक कि समस्तीपुर के कोना बाबूक चरखा एही धरफर मे पाछू छुटि गेलैन्ह। भिनसर साँझ बिनयक बाद ओ १५ मिनट चरखा चलबैत छलाह, मुदा ओहि दिन संयोग सँ हुनकर चरखा पाछू रहि गेल छलैन। बाबू रूसि कऽ बइस गेलाह जे पानि पीब आ ने खएबै करब। हमरा तऽ भैया बड़ नीक लगैत छल बाबूक एहि नाटक से। अंत मे नहुना कऽ बाबू के मनौल गेलैन आ समस्तीपुरा बेदाना लेबाक हेतु तैयार भेलाह। राधाबाबू हमरा डाँटऽ लगलाह। किएक श्रीपति बाबूक चरखा छोड़ि एलहुँन्ह?

एहि तरहें मुखिया सभहक गोष्ठी मे डर सँ हम थर-थर कँपैत रहिलहुँ कि किछु भूल चूक नहि भऽ जाए, बाबू तमसा नहि जाइथ। परञ्च चनैत छियैक भाई साहेब, राधा बाबू अपना क्षति क हेतु हमरा थोड़बे डँटैथि? नहि।

राधा बाबूक स्वभाव बड़ा अबरा छलैन लेकिन हमरा लेल नहि। ओतऽ हमरा बड़ मानैत छलाह। अस्गर मे कहियो कहियो सिनेह सँ हमरा कान नाक मलैथ। कहियो पीडतर दवा दैथ। सुतए काल मे हम जों हुनका लग बैसल रहितहु तऽ ओ अपन टांग हमरा गोदी मे की जाँघ पर राखि दैथ तथा घर गिरहस्थी क गप्प पूछैथ। ओ एकाएकी हमरा घरक सभ बात बुझैत छलाह। हमर दुःख सुखक खियाल रखैत छलाह। ओ नहि चाहैत छलाह जे हम मैल आ छोट कपड़ा पहिरी। एक बेर आसिन मे घर सँ विदा भऽकऽ जखन आस-रम मे पहुँचलहुँ तऽ धोती आ हमरा किनि देलैन, कमीज बनवा देलैन। चट्टी कीनि देलैन एक दिन राधा बाबू हमरा सँ कहलैन खवास क समान नहि, मनुक्खक समान रहऽ पड़तौक; टहलुआ बना कऽ नहि, संगी बना कऽ तोरा हम राखऽ चाहैत छियौक।

पहिने हम सभ गप मे जी सरकार ... सरकार कहैत छलिअन्हि मुदा बाबू एक दिन जोर सँ डंटलन्हि। तहिआ सँ खाली जी-जी कहऽ लगलिअन्हि ई तऽ भेलैन्ह राधाबाबूक बात। परञ्च दोसर सोराजी बाबू सभ मे सँ सैकड़े मे नब्बे एहने भेटैथ, जिनका 'जी सरकार' सुनबा मे बढ़ियाँ बुझाइत छन्हि। नहि कहिऔन तऽ गुररि-गुररि कऽ ताकैत रहताह। जिनगी भरि जिनकर कान 'मालिक-मालिक,' 'सरकार-सरकार', 'हुजूर-हुजूर' सुनैत अघलन्हि अछि हुनका लेल अहि बात सभक बड़ महातम छन्हि। बिना छौंकल दालिक समान बिना जी हुजूरीक गप हुनका निक नहि लगैत छलन्हि। पच्छिमक मुलुक छैक गुजरात राजपूताना, पंजाब। एक-आध बेर पच्छिम क सोराजी बाबू सँ हमर भेंट भेल हुनका दू-चारि बेर हम सरकार-सरकार, हुजूर-हुजूर कहलिअन्हि तऽ बड़ भड़कला भैया! कहऽलगलाह—केहन नर-जबान छौंड़ा अहि! आ-गप मे हुजूर-हुजूर, सरकार-सरकार करैत अछि।

बेटा, हुजूर आ सरकार सभहक विरुद्ध तऽ हमर झगड़ा कोटी चलि रहल अछि, तखन हमरा मारि दैत अछि। हम बड़ कठिनाई सँ हुनका बुझौलिअन्हि जे हमरा ओतऽ बाबू-भैया लोकनि 'हुजूर-सरकार' क बिना गप्पे नहि सुनैत छथि......ई जानि कऽ पच्छिमक सोराजी बाबूक आँखि दुगुन्ना भए गेलन्हि आओर जीह कंठ सँ निकालि लेलन्हि, एहन गप छै। धत् तोरा के! हम कहलिअन्हि—जी हुजूर, जी हुजूर, हमरा ओतऽ येह परथा छैक। दुखिया सभक गुट डेढ़-दू महीना धरि होइक। तखन हमर काज बढ़ि जाइत छल, कहिए देने छी। आओर मोजे छल। राधाबाबू कुरता-कमीज, गंजी, बनिआइन नहि पहिरैत छलाह। सिअल कोनो कपड़ा नहि। कखनो तीन गजक, कखनो चारि गजक धोती पहिरैत छलाह। देह पर छोट सन चद्दरि रहैथ छलन्हि। जाड़क दिन मे काश्मीरी लोई ओढ़ैत छलाह। एकाध गल्ला अंडी सेहो रहैत छलन्हि। माने ई की खींचऽ वाला कपड़ाक गिनती चारि सँ बेसी कहियो नहि भेलन्हि। देशी कपड़ा आ देशी साबुन ताहि पर सँ देशी हाथ। अतऽ चारि चोट मारैत छलखिन कि कपड़ा साफ भऽ जाइत छलैन। साफ खद्दर, सार मैलो नहदोए होइत छैक आओर साफी वहिदए होइत छैक। चारि-चारि दिन पर राधाबाबूक कपड़ा हम साफ करैत छलहुँ। सुनलहुँ कि पहिने अपन कपड़ा ओ अपने साफ करैत छलाह परन्तु बाद मे काज बहुत बढ़ि गेलासँ ई जिद हुनका छोड़ऽ पड़लैन्हि। खेनाई ओ ओहने खाइत छलाह जेहन आसरमक बाकी आदमी। महतमा जी क ओतऽ सँ टमाटर आओर पिआउज खेनाई सीख आयल छलाह आसरमक बगीचा मे खूब टमाटर लागल छलैक। पिआउज सेहो ओतऽ उपजैत छलैक। मौसम मे चारि टा पिआउज आ आठ टा टमाटर खाइत छलाह हमर राधा बाबू। पिआउज तऽ हमहुँ खाइत छलहुँ मुदा बनाओल टमाटार खेयाक ओरियान

केलौं कहियो खा ने सकलौं। पिआउल ततेक ने मड़ौ जे कुकुर मे अबैत जे सरकारी अस्पतालक कम्पोटरक घर होइक। तरकारी मे दऽ कऽ पच्चासो बेर टमाटर हम खेने हैब परञ्च आमक समान पाकल टमाटर चूसनाई हमरा कहियो नहि नीक बुझायल। आसरम मे माछ-मछरी खेनाई मना छलैक। हमरा मास मे एकाध बेर माछ भेटि जाइत छल। केना भेटैत छल? छट्टू भाई मलाह छलाह। हुनके चाचीक नैहरक लगहि एक गाम मे पड़ैत छलैक। छट्टू जाइते रहैत छल। पुरइनक पात मे लपेट कऽ हमरा लेल दू-चारि कुटिया अबैत छल। हम दोगी मे लऽ जा कऽ जलखैक भोग लगबैत छलहुँ। एक बेर राधाबाबू हमरा सँ कहलन्हि हरो, तोरा, मुंह सँ तऽ माछक गन्ध अबैत छौक। हम माथा झुका लेलहुं तऽ बाजल छलाह—कोनो बात नहि, हम वैष्णव छी तऽ अहि सँ की समूचा दुनियाँ कंठीये बान्हि लेत? ई कहि क मुसकुरै लगलाह। पाछू, कहलन्हि माछ खएबाक बाद एकाध टा पान खा लेबाक चाही। अहि सँ माछक महक मरि जाइत छैक।

हम तऽ सुच्चा गँवार छलहुँ। हमरा की बुझल जे केकर गन्ह केना मरैत छैक। तेयो हमर राधाबाबू बड़ नीक आदमी छलाह। खुलल मिजाजक। कहियो ओ हमरा मना नहि केलन्हि, हम बीड़ी पीबैत छलहुँ, माछ खाइत छलहुँ। कहियो ओ मना नहि केलन्हि।

अगहन मे हुनकर सार अएलखिन। संग मे आदमी छलखिन। धानक चूरा, पकवान, गुड़, अचार, आ भातरीक मुरब्बा। दू चंगेरा सनेस लऽ अनने छलखिन्ह। लोक सभ खूब खेलक। चारि दिन रहलाक उपरान्त वापस भेलाह तऽ ओ हमरो संग मे लेने गेलाह। पता लागल, मालिकिन आबऽ वाली छथि। मालिक के दू गोट बेटा छन्हि, ओहो अएथिन्ह। मोट् बोझ ढोअक लेल एक आदमी उमहर सँ सेहो अएतैक आ हमहूँ रहबइ।

एखन तक मालिकिनक हम नामो नहि सुनने छलहुँ, दरसन तऽ केने छलहुँ नहि। अहि सँ हमरा मोन मे हलंदली पैस गेल। अगर हमरा छोटकी मलिकाइनक समान इहो मालकिन भेलीह तऽ चारिये दिन मे आसरम छोड़िकऽ भागऽ पड़त नहि, अगर फूलबाबूक मायक समान हेतीह तऽ निरबाह होएत।

अहि प्रकारेँ सोचति-विचारति हम कुटुमक संग भऽ गेलहुँ। लहेरियासराय सँ समस्तीपुर। ओतऽ सँ—पहलेजा। पहलेजा सँ महेन्द्रू। फेर पटना जकसन।

आइ तक हम बड़की गाड़ी पर नहि चढ़ल छलहुँ। ताबेतक पटना जकसनक ई नवका-मकान नहि बनल छलैक। आब तऽ खैर बहुत बड़का मकान छैक पहिने अहि सँ छोट छलैक। बाहरो मे एतेक बढ़ियाँ सिलमिट बला चिक्कनी सड़क नहि छलैक। परञ्च गाड़ी तऽ बड़के ठहरल। हम पहिने सोचैत छलौं कि बड़का गाड़ीक टिकट (पास) सेहो बड़का होइत होएतैक, तामक समान। परञ्च नहि, टिकट मे किछु अंतर नहि। हँ, टिकट काटऽ मे ओहन धक्का-धुक्की नहि, जेहन कि हराही (दरभंगा जकसन) मे होइत छैक।

गया जाय वाला हम सभ तीन गोटे छलहुँ। कुटुम, हुनक नोकर आर हमर कुटुम ठहरला जमींदारक बेटा। गाड़ी के सगे कोना बेखतिऐन! सिकिन्ड किलासक टिकट लेलहुँ। बाँकी दू टिकट सेसर किलास छलैक।

गया लैनक गाड़ी तेसर पलेटफारम सँ खुजऽ वाला—छलैक। पहिल दोसर—पलेटफारमक बीच लैन छलैक। पूब दिश जेब तऽ तोके हबड़ा पहुँचब। पच्छिम दिश जाएब तऽ लखनऊ आओर दिल्ली, बड़का-बड़का इंजन बड़का-बड़का डिब्बा। आबए—जाएक हेतु खूब खुलफैल रास्ता। खूब पैंघ फाटक। सभ किछु पैंघ। कुलियो पक्की बोली बजैत छल। बीड़ीयो सिग-

रेट वेचए वाला काइ ठुहे मे चलैत छल। साहबी ठाट-बाट मे कोट-पैण्ट वाला पचासो आदमी। किदो जमशेदपुर जाइत छल तऽ किदो धनबाद। बड़की लैनक गाड़ी के आगा मे छोटकी लैन क मधुबनी, झंझारपुर वाली गाड़ी बकरीक समान लगैत छैक। पटना दिश रहबआ बात देशी अछि। उम्हर जकरा रखना चहैत तकरा हम लाव धरना कहबै। उम्हरका लोक साफ बात बजैत अछि। एहुना गाड़ी मे बाबू सभहक मुँह सँ किछिन-दिहिस' निकलैत छैन्ह, तऽ उम्हर हुनका सभहक मुँह सँ 'कियांयिया' सुनबैक। आकाश-पातालक फरक नहि जाइत छैक, भइया।

रातिक समय छलैक। गाड़ी पर बैसते हमरा नींद लागि गेल।

गया पहुँचला पर नींद खूजल। ओतऽ सँ दोसर गाड़ी पकड़ि कऽ नवादा पहुँचलहुँ। नवादा सँ आधा कोस पड़ैत छैक मोहनपुर। दूरे सँ कोठा चमकि उठल। कुटुम सभहक लेल टमटम आएल छलैक। ओ—ओही पर चढ़ि गेलाह। हम दुनू गोटा पाँव पैदल।

राधा बाबूक ससुर लखपती जमीनदार छलखिन्ह। दू पट्टी मे इस्टेट बाँटल गेल छलैक। उपजा आ आमदनीयेँ बटैत छलैक, जमीन जगह एकके ठाम छलैन। हाथियो छलैन। मटरो छलैन। टमटम सेहो छलैन। बग्गी सेहो छलैन। खरखरिया-पालकी सेहो छलैन। पक्का-बैसक छलैन्ह। कुरसी, आराम कुरसी, कोच, बेंच, टेबुल सभ किछु छलैन। नोकर सभहक लेल कच्ची ईंटाक दू-तीन घर ओहि दिश बनाएल गेल छलैक जाहि दिश माल-महींसक रहक जगह छलैक। हमरा रहक लेल कुटमक नोकर (आदमी) ओही कोठरी मे लऽ गेल।

दस नौरिक नाम छोड़ि। दुनू दिश बन्हल बीस भैंसा। भैंसाकें उम्हर वाला 'पाड़ा' कहैत छैक। ओही सँ इम्हर हर जोतल जाइत छैक परन्तु राधा बाबूक ससुरक एक्कोटा भैंसा नहि छलैन्ह जेकर पीठ आओर पाँजरक हड्डी झकझक नहि करैत होइक! बीस-बीस टा भैंस, ओकरा खुराकक कोनो निश्चय नहि। सभ कनैत रहैत छलैक। सभहक आँखि मे हम कीची देखलियैक। पेर आओर—रोआँ मे अठगोरवा, कीड़ा बजबज करैत छलैक। मन बुझि लियऽ भैंसा बहुत बड़का कुकरम केने हैत तँइ जमीदारक ओतऽ भैंसा जनम लेने हेताह—ओतम। नहि मरब, नहि जीयब, हुकहुक करब। हम एक आदमी सँ पुछलियैक—ई कमजोर भैंसा कोन प्रकार हर खिचैत अछि? ओ कहलक—खेतीक समय मे हिनका थोड़-बहुत खायक वास्ते देल जाइत छैन्ह, जखन खेती भऽ गेलै सहन सतराम। पोआर नार, खाली-भूसी के अमला लोक सभ चोरा-चोरा कऽ बेचैत रहैत छल। किराया पर मकान लगाव वला के' जतेक ममता अपना मकानक प्रति होइत छन्हि,ओहि सँ कमे ममता जमीन-दार के अपना माल-जाल दिस सँ होइत छन्हि। नोकर-चाकर अमला-फमला बहुत मामूली तनखा पबैत छलाह ओहि दिन मे कक्करो दरमाहा दू रुपैया महीना, किनको चारि आ किनको सात। दस सँ ऊपर किनकहु नहि।

भाई साहेब, आइ पुछब जे एतेक कम दरमाहा मे जमीनदार म नोकरक दुनियाँ—जहान कोना चलैत छल होइतैक?

जवाब कठिन नहि अछि, बिलकुल सोझ। नोकर सभ दरमाहाक कमी लूट-पाट सँ पूरा करए। रैयत के लूटऽ मे जमीनदारक नोकर चाकर कोनो बातक परवाह नहि करऽ। हरियर बगीचा सँ लऽकऽ सजमनि, कदीमा तक रैयतक एक-एक चीज पर मालिकक एक दम अधिकार होइक। एहि मे सरकार बहादुर अपन पुलिस, पलटन सँ जमीनदारक मदैत करैत छैक। नोकर-चाकर-लूटि-लूटि कऽ निर्वाह करैत अछि। जमीनदारक खजाना सेहो भरैछ तथा अपन घर भरैछ। जमीदारक नोकर के सभ ठाम इएह

हाल होई।

कुटुम दरवाजा पर ठाठ बाटक कमी नहि छलै। हालमे बूढ़ा आर्म कुरसी चारिगो मामूली कुरसी, एकटा गोल टेबुल पड़ल अछि। ओकरा गहींक एकटा भारी भरकम कोच पड़ल छलैक। माथ राखय जगह तेल सँ कारी आओर चीकन भऽ गेल छलैक। कोचक बाँहि पर जहाँ तहाँ चून आओर सुँघनीक दाग पड़ल छलैक। जहाँ बैठ वाला सुँघनीक शौकीन हेताह, पान खएबाक उपरान्त ऊपर सँ चून खाइत होएताह।

दोसर दिस बैठक मे बूढ़ा बड़का-बड़का तख्तपोश पड़ल छलैक। ओहि मे कतहु-कतहु काँटी उखारल छहल मुँहबउने छलैक। शतरंजक खाना चक्कू सँ खोदि कऽ काढ़यो कोनो आदमी बनौने छलैक, ई चेन्ह लेहो एखन तक छलैक। तख्तपोशक नीचा मकड़ा जाल बना कऽ रखने छल, जहर छाए छलैक। देखऽ त बा वेफीक आ आड़ी छल। बकलर हुनकेर दिलका क बूढ़ा घाहुन ठहरल छलाह।

राधाबाबूक सार के हमरा बारे मे बढ़ियाँ जकाँ बुझल छलैन्ह। अपन आँखि सँ देखि लेहो लेने छलाह। ओहि प्रकार हमरा संग मामूली मजदूरक समान बरताव नहि करैत छलाह। खास टहलुआ क समान हमरा भितरिया बुझल गेल।

मलिकिनी दूइटा भाई-बहीन छथीन्ह। नाम छलैन्ह लवंगलता। भाईक नाम बाबू कामेन्द्र प्रसाद नारायण सिंह छलैन्ह। सरकारी अफसर बाबू के० पी० एन० सिनहा कहैत छलैन्ह। हमर मलिकाइन दुलारक द्वारे बबुनी कहल जाइत छलीह। हुनकर रहनाई नैहरे होइत छलैन्ह। राधाबाबू मेलाह सीराजी, अपना घर बला सभ सँ मनमुटाव चलैत छलैन्ह। बाल-बच्चा सभ के ससुरारिये मे छोड़ने छलाह। एतहु कोनो वस्तु क कमी नहि छलैन्ह।

लाख सँ ऊपरक जमीन जायदाद छलैन्ह। पच्चीस-तीस हजार क लहना छलैन्ह। हजारों मोनक उपज छलैन्ह। पुश्त-पुश्ताहन सँ चाएल खानदानी इज्जत छलैन।

बाबू कामेन्द्र प्रसाद नारायण सिंह कोलेजक पढ़ाई समाप्त नहि कऽ सकल छलाह। बाप के आसामक जंगल सभ मे हाथी फँसाबक शोख छलैन्ह। ओहीशौखक कारण बेचाराक जान लेहो गेलैन। कहल जाइत छैक, एक बेर छोटका लाट साहेबक कोनो दोस्त विलायत सँ अएलखिन्ह। हुनका हाथीक बारे मे बड़ इच्छा छलैन्ह। केना आसामक जंगल मे हाथी पकड़ल जाइत छैक? कोना ओकरा पालतू बनाएल जाइत छैक? कोना फेर ओ बिकाएक लेल हरिहर क्षेत्र मे आनल जाइत छैक? ई सभ लाट बहादुरक दोस्त साहेब अपने आश्चर्य सँ बुझऽ चाहैत छलाह। एही सिलसिला मे राय बहादुर जानकी नाथ कुँवर के छोटका लाट साहेब आसाम पठौलखिन डिब्रुगढ़क लग भऽ कऽ जंगल मे डेरा खसाएल। हाथी पकरय बला क असावधानी सँ हाथी कएक टा गुट हमरा सभक डेरा पर टूटि परल। साहेब बहादुर एकटा गाछ पर चढ़ि कऽ अपन जान बचएलाह। परञ्च राय बहादुर एक टा तमसाह, खिसियाह हाथीक शिकारी भय गेलाह। हुनकर लाश घर तक नहि पहुँचि सकलनि।

तखने १६ वर्ष क बैस मे बाबू कामेन्द्र प्रसाद नारायण सिंह क कान्ह पर स्टेटक भार पड़लन्हि। बाबू के नहि रहला सँ चाचा क नीयत बदलऽ लगलन्हि परञ्च मायक चलाकीक कारण सँ हिनका नुकसान नहि उठाबऽ पड़लन्हि। बाबू साहेब क माय बड़ ज्ञानी मखोमात छलखिन्ह। हुनके ज्ञान क परताप कहू कि इ स्टेट तरक्की करैत गेलैक।

अपन नवकी मलिकाइन के ओहि सँ पहिने हम नहि देखने छलिअन्हि।

बड़का डील-डौल, चाकर-मुँह, बड़का कपार, पसरल आँखि, औसत दरजाक नाक, पातर ठोढ़, घैल क समान गरदनि। रंग गेहुँआ छलन्हि। हाथ-पैर बड़का-बड़का छलैन्ह। धानी रंगक तीन पड़िया साड़ी पहिरने छलखिन्ह। बाजऽ सँ पहिने आँखि चमारिकऽ माथा नचाबक आदत छलन्हि। मोन अछि, हमरा देख कऽ ओ गम्भिरता सँ माथा हिलौने छलीह आओर किछु समयक लेल हमरा दिस देखैत रहि गेल छलीह। पैर छू कऽ हम प्रणाम कएलिअन्हि तऽ मुस्कुरै लगली। दाड़िमक दानाक समान हुनकर दाँत पानक हल्लुक लाली क कारण सँ खूब बढ़ियाँ लगैत छलन्हि। किछु बाजल नहि छलीह। किछु काल हवेली मे बैसकऽ हम बाहर चलि एलहुँ।

मालिकक सार छलैक। नामक प्रावधान। ओर मे चाकर कबूला नून, हरिअरका मिरचाई ई भेल जलखै। ओकर बाद हम बाबू साहेब क धोती मे साबुन लगबैत रहलहुँ। फेर अपन मालिकक छोटका बच्चा सभ कें संग मे खेलिकऽ चिन्हा परिचय बढ़ड़लहुँ। बच्चा हुनका तीन छलन्हि। एक बेटी दू बेटा। बेटी नौ वर्षक बच्चा सभ गात आ पाँच सालक, बेटा सभहक मुँह बाप सँ मिलैत छलैक, बेटी क नहि। बड़का घरक बच्चा सभ लगुआर तऽ होइते छैक। छांड़, फरेब आओर झूठ—ई बड़ सुलभता सँ हुनका सभ के अंदर पैस जाइत छन्हि। मचलनाई, रूसनाई, बिधुकनाई, रंज भेनाई—ई सभ ओ माये-बापे सीखबैत छथिन्ह। बढ़ियाँ—जे किछु सीखैत छथि ओहि मे सँ बेसी हिस्सा नोकर-चाकर आर गरीब पड़ोसी सभहक देल रहैत छैक।

हमर मालिकक बच्चा सभ हमेशा नानिक गाम मे रहैत आएल छलखिन्ह। नानीक गामक बाप, चाचा क रोआब हुनका सभ कें नहि भेटल छलैन्ह। नानीक गामक नोकर-चाकर हुनका दिस एक विचित्र प्रकारक लापरवाही देखबैत छलैक। परिणाम ई भेलैक कि ओ नोकरक बच्चा सभ सँ हिल-मिल कऽ खेलाइत छलखिन्ह। अम्मा जी (राधा बाबूक सासु) अपन समय पूजा पाठ आओर कथा पुराण सुनऽ मे बितबैत छलखिन्ह। हवेली क काज के देखनाई-सुननाई बाबू साहेबकऽ माता कऽ भाई करैत छलखिन्ह हमरा मलिकाइन के किताब पढ़ऽक भारी आदत छलैन्ह। खिस्सा-कहानीक पोथी सभ खूब पढ़ैत छलखिन्ह बच्चा सभहक देखनाई सुननाई नोकरी करैत छलैक।

हमरा पता लागल जे मलिकाइन सेहो आब आश्रमे मे रहती। बच्चा सभ आब एतहि रहि कऽ पढ़थिन्ह। ई बुझि कऽ हमरा बड़ आनन्द भेल।

अहि मे खुशी देखाक कोन बात छलैक भइया, बुझलहुँ नहि? बात ई छलैक कि आश्रम पुरुष सभ सँ भरल छलैक। एकें देवी छलखिन्ह। कहियो रहैत, तऽ कहियो नहि रहैत छलखिन्ह। आओर आब राधाबाबूक परिवार बरोबरि आश्रम मे रहतन्हि। स्त्रीगण आर बच्चा सभहकबात सुनऽ लेल भेटत, हुनकर मुँह देखऽ लेल भेटत। आश्रम जहलखानाक समान नहि लगतैक। बुझऽ मे औतैक जे घर छइ।

खाए गेलहु तऽ थारी मे दू तरहक भात देखऽ मे आएल। बाबू सभक वास्ते मेहिका चाउरक गमकैत भात होइत छन्हि। अइठ मे बंगला-खुचला पर गमकैत मेहीका चाउरक भात नोकर-चाकरक कर्म मे जाइत छैक। हम देखिते बुझि गेलहुँ की राधाबाबूक सारक अइठ अछि। कहिये देने छी पहिने की ओहि दिन बाबू-भैयाक अइठ हम बड़ मोन सँ खाइत छलहुं। या एना कहियोक की बढ़ियाँ वस्तु जे खाइत छलहुँ ओ सभ अइंठ होइत छलैक। नोकर सभक वास्ते मोटका चाउरक जे भात नँ छलैक ओहि मे धानक भूसा आ अंकरी छलैक। वाह रे तिरहुत! की मजाल की तिरहुतिया चाउर मे एककोटा कंकड़ कन निकालेक। ई अंकरी-फकरी गंगा क उत्तर दिश जाए क साहस नहि करैत छैक। खैर खेनाइ कोनो खराब

नहि छल। सुदा देखनक सुजिया अहि बातक गवाह छेक की हवेली मे कंजूसीक राज अछि बूँद भरि देल पेथेक आ चाहवेक की बढ़ियाँ सुजिया बनि जाय तऽ ई केना होएत ? अचार अलबत्ते बढ़ियाँ छल। थारी देखऽ मे कठौतक जकाँ छल। हमरा दिशि का बड़का घर सभ मे थारी सभ बड़ बढ़ियाँ आओर बड़ मोट कान्ह बला होइत छैक। एहन नहि की देखला पर परात परए मोन।

खा लेला पर मलिकाइनक कनखी सँ बाबाजी कनी सन दही देलक। ई हुनकर दया छलन्हि। मालिक सभ के कहनाईक मुताबिक "नोकर, चाकर, टहलू आओर खवास के दही खएवाक हक नहि छैक" फेर जहन कोनीमनी दही भेटल ओहि सँ हमरा बड़ खुशी भेल। खुशी आइ लेल नइ की दही भेटल। खुशीक कारण छलैक की मलिकाइन के हमर ख्याल छलन्हि। मलिकाइनक मोन के कोनो कोन मे जरूर बैस गेल छलहुँ। अहि बात सँ ई साफ भऽ गेलैक कि आइ सेहो मलिकाइन हमर ख्याल रखलीह।

खेलाक बाद तऽ हाथ धो कऽ जखन हम लोटा राखऽ आँगन गेलहुँ तऽ सरौता सँ सुपारी कतरैत मलिकाइन बजलीह—पुरना स्वीटर छैक ओना पुरान नहि, दूसालक पुरान। तोरा देह मे अंटौ त पहिर ले।

ओ सरौता बला हाथ कें उठा कऽ अंदर ट्रंकक तरफ इशारा केलन्हि। ओहि पर कपड़ाक मोटरी पड़ल छलैक। ओहि मोटरी मे ओ स्वीटर सेहो छलैक। हम जा कऽ ओकरा उठा लेलियक। मलिकाइन आँखि नचा कऽ पहिरक इशारा केलन्हि तऽ हम ओकरा पहिर लेलहुँ। बिना बाँहिक ओ स्वीटर हमरा देह मे बैसि गेल। बैसल। मलिकाइन के देहक रहल हाइतैक, ई सोचि कऽ हमरा बड़ खुशी भेल।

एकटा कुर्ता सेहो लिया देबो ओ बजलीह। उपकारक बोझ सँ हमर

गरदनि झुकि गेल। मोन मे कहलहुँ जुग-जुग जिवैथि हमर ई मलिकाइन। सिनेह सँ भरल नजरिक एहन जादू होई छैक भइया। बाल बच्चा बलाक मोन बड़ नरम होइ छै। हमर छोटका मलिकाइनक कसाई सन हृदय पघीलन्हि। यदि ओ अहाँ के अमिरती देतीह तऽ ओहू मे करैले सन स्वाद लागत।

एतबा मारिकऽ बैस कऽ पानक डिब्बा खोलिकऽ बड़ कएदा सँ पान लगौती, दू बीड़ा मलिकाइन पहिने अपना मुँह मे धऽ लेतीह तखन पाहुन या ककरो अनका देतीन्ह। भाई बहिन हुनक ओतऽ रहितथिन्ह तऽ पहिने हुनके दीतऽथीन्ह। आखरी मे काते सँ एक टा छोटका पातक बीड़ा लगा कऽ हमरा दीतथि चानीक डीब्बा सँ बनारसी सुरती निकालितथि आओर अपना मुंह मे चुटकी भरि दऽ लीतथि। ओहि मे क्यो दोसर हिस्सेदार नहि छलन्हि। बाबू कामेन्द्र बाबूक ससुरारि छपराक देहात मे छलैन। ससुर नेता छलखिन्ह। सेहो के गाँधीजीक आश्रम मे रहि कऽ पढ़बै-लीखबैत छलाह। आगु चलिकऽ हुनका लीडरानी बनबाक छलन्हि हुनकर एक फोटो कामेन्द्रबाबू कें रहऽ बला घर मे छलैन्ह। सुखाएल चेहरा, धसल आँखि तथा पिचकल गाल खोंपा मे एकटा चरखा गड़ल छलैन्ह नाम रहैन्ह कनक किशोरी।

राधाबाबू आओर कामेन्द्र बाबूक शील स्वभाव मे बड़ अंतर देखऽ मे आएल छल हमरा। एक कें फकीरी बढ़ियाँ लगैत छलन्हि तऽ दोसर कें अमीरी। हमर मालकीनी सेहो भाईक समान छलीह। राधाबाबूक फकीरी हुनका पसंद नहि छलैन्ह। आश्रमक जीवन सेहो हुनका पसन्द नहि छलैन्ह। एहल कए साल सँ एक दोसर सँ अलग रहल छलाह। आब किछु दिन सँ संग रहक मोन भेलन्हि।

सम्बन्ध के एक भाईक संग हमर ई नवकी मलिकाइन बरहमपुरा आबि

गेलीह । हम तऽ खेर संगे छलहुँ । राधाबाबूक परिवार के आबि गेला सँ हमर खुशीक ठिकाना नहि छल । खुशी येह छल कि आश्रम हमर इरदम सुखाएल-सुखाएल सन लगैत छल । कहबाक लेल आबऽ हरियरी बहुत छलैक बाग-बगीचाक की कहू ! परञ्च खाली हरियरी सँ की यदि मोन उदास रहल ! आओर मोनक उदासी के भगाबक वास्ते मुसकुराइत मुँह सभहक आवश्यकता पड़ैत छैक । जरूरत पड़ैत छैक किलकारी भरैत बच्चा सभ के । मायक सिनेह, मौगीक हँसी-ठट्ठाक आनन्द, केहनो विपत्ति मे मोन खुशी करऽ बला संगी साथीक आनन्द जाहि घर मे नहि छइ ओ तऽ मात्र काठ-बाँस क पिजड़ा कहल जा सकैय ओकरा घर किछु ने कियो कहैत । ज ओकरा घर दाहयो करतै तऽ ओहन घरक कोन काज ।

आसरम एकदम उदास छलै ओइ ठाम कोनो आनन्द नइ छल । हमरा थोड़बे दिन मे मोन अकच्छ भऽ गेल । राधा बाबू के संगे छलौं एहगर केना चलि ऐब सँ कहुना दिन कटैत छलौं । आसरमक भीतर आरो एकटा टटौ छोट छिन घर छलै । अगोरा पर आफरी नामल छलै आ कात मे एकटा भरपतक टाट छलै । अंगनाक बीच मे एकटा बड़ पैघ गाछ छलै । सब मिला कऽ तीनटा छोट छोट कोठरी छलै । कहुना एकटा छोट-छिन परिवारक गुजर करऽ बला घर छलै । बाल-बच्चाक संग हमरो मोन कनी मनी लगैत छल । मलिकाइन के ऐहाँ घर खूब पसिन्न नइ छलैन तेयो की करतीह कहुना खुशी छली । ओ घर मे किछु चकमकी आइन देलखिन । एकटा खिड़की लगवा देलखिन । बेल राखऽ लै एकटा बेस पैघ बेलची बनवा लेलैन । पाइखाना, नहेबाक नीक इन्तजाम भऽ गेलै । अनेक दिन तऽ राधा बाबू कुआटर (क्वाटर) मे रहै छलाह, ई घरक झमेला आ आरमक चिन्ता सँ कोन मतलब छलैन । आब मुदा नून-तेल लकड़ीक चिन्ता लागि गेलैन ।

आश्रम मे चाह पीनाई मना छलैक, परंच मलिकाइन नहि मानैत छलथिन्ह । सभ दिन तऽ नहि, कहियो-कहियो बड़ प्रेम सँ चाह बनबैत छलथिन्ह । दूध आओर चीनी ओहि मे खूब दैत छलखिन्ह । पटना मे फूल बाबूक संग रहैत काल मे चाह बनाबऽ हम जानि गेल छलहुँ । ओहो चाह मे दूध चीनी खूब दैत छलथिन्ह । महेन बाबूक आबऽ जे चाह बनैत छलैक ओ हमरा कहियो पसंद नहि भेल । येनी मोठ भेला पर महेन बाबू चाह के ठोढ़ सँ लगबैत देरी छोड़ि दैत छलखिन्ह । कहैत छलखिन्ह--की शरबत् बनौलहुँ है । छी...! जनैत छोिए भैया, चाह पीब बाला असल पियक्कड़ केहन पसंद करैत अछि ? पानि के खूब इन्होर कऽ लीअऽ आ तकर बाद केटली मे चाहक पत्ती दऽ कऽ कनी काल ओहिना छोड़ि दिऔ । फेर कप वा गिलास मे छानि ली ओहि मे छोटकी चम्मच सँ डेढ़-दू चम्मच दूध आर ओतबे चीनी दिऔक । मिलएबाक पश्चात् गुल्लरिक रंग सन चाह लागत । बड़का-बड़का दिमाग बला बाबू सभ अही केदाक चाह पसंद करैत छथि । एतऽ हमर मलिकाइन जे चाह बनबैत छथि ओ तऽ भैया सोलहो आना शर्बत बूझू । पूसक भोर-साँझ कऽ जहन ठंढा हवा चलै छैक की धीया पुता के सर्दी लगी भऽ जाइ छैक तऽ चाह अवश्य बनबैत छलीह । हुनका दानीक बड़ शौख रहैन ।

आश्रम के बाहर, बस्ती (बरइमपुरा) के दिश स्कूल छलैक । अपर प्राइमरी स्कूल । राधा बाबूक बाप ई खोलबेने रहथीन्ह ओहिमे चारिटा मास्टर छलखिन्ह । पढ़ऽ बला धीया-पुताक कमी नहि छलैक । अगल-बगलक गाँव सभा कऽ करीब सत्तैर टा विद्यार्थी छलैक । खास अही गामक बीस टा विद्यार्थी बल होएतैक । स्कूलक मकान खपरैलक रहै, तीनटा कोठली रहैक । भीत मजगूत आओर मोट । टूटा बिना बाहिर कुर्सी ; एकटा स्टूल, एकटा छोटकी चोकी । सामने खूब पैघ फुलवारी ओकरे बीचो-

बीच स्कूल आबक मेहरावशाला रास्ता। मेनाक लाल-पीयर फूल ओतऽ एतेक अधिक फुलाएल छलैक की किछु नहि पूछू। स्कूल ऊँच जमीन पर छलैक, हमरा आश्रम सँ स्कूले टा नहि फुलवाड़ीयो देखाइत छलैक। मालिक अपना बच्चा सभ के नाम अही स्कूल मे लीखा देलखिन्ह, बेटीयोक। कन्या सभ तीनिये चारि अबैत छलैक। होरा सँ की मुकाबल छौक भैया, हमरा सभ दिश जनाना पढ़ल-लिखल नहि होइत छैक। आब दरभंगा-मधुबनी सन शहर मे मास्टरनी देखाइ दैत अछि। देहातो मे कतहु, कतहु कन्या समहक स्कूल देखबहक......मगर, भैया अहि सँ की होइत छैक, जहने कन्यो सभ लड़के जकाँ पढ़ल-लिखल होअ लगतैक तखने अहि देशक उद्धार हेतैक। एखन त बाबू भैया लड़की के अपना काजे भरि पढ़ा दैत छथिन्ह। पढ़ैत सुग्गा गाहक के अपन दिश खिचैत अछि। पढ़ल कन्या नीक बर कें अपना दिश आकर्षित करैत अछि। अहि सँ बादक कार्य हल्लुक भऽ जाइत छैक। बिवाह भेले की पढ़ब-लीखब खतम। बापो आँखि बन्द कऽ लैत छथि आओर ससुरो। कतहु-कतहु एना नहि होइत होएतैक। खैर, राधा कांग्रेसी छलाह। हुनका नजरि मे लड़की-लड़का दुनू बराबरे छलन्हि। बच्चा पढ़ैत नहि तऽ की करतै ? एक दिन मलिकाइन सँ ओ कहलखिन्ह अहाँ पढ़ल-लीखल रहितहुँ तऽ हम अहि सँ दुगुना काज कऽकऽ देखबितहुँ, मलिकाइन अहि पर आँखि नचा कऽ बजलीह भैयो बाबू ई काज अहीं के भोग हुअए ! हमर बनपक ठीके छी......लंगोटी लगाक आओर जटा बढ़ा कऽ, बाज अएलहुँ अहाँक अहि चरखा सँ ! अहाँ के तऽ माउग भऽ क जन्म लेबाक चाहैत छल। बड़ तामस होइए हमरा अहि विधाता पर—

मालिक हँसए लगलाह। थोड़ेक कालक बाद बजलाह, बुझबैक की ! जकरा खानदान मे हाथीक कारोबार होइत छैक—

अहि पर मलकिनी हाथ चमकाकऽ बजलीह रहऽ दीय, एनहु कऽ अहाँक बाप-पितामह दऽ अहिना कही तऽ अहाँ के कैहन लागत ? के मना करैए ? बेटी अहाँ के, स्कूल अहाँ के। जतेक मोन होए तेतेक पढ़ा देबैक, भऽ गेल ने ?

राधाबाबू-चुप भए गेला।

आब ओ हमरो सँ पढ़ऽलए कहए लगलाह। कहैत त पहिनो रहैथ मुदा हमहर जोर देबए लगलाह। मलिकाइन ई नहि चाहैत रहैथ जे हम अक्षर बाँची गिनती-पहाड़ा रटी। एक बेर हुनकर ननदि भेँट करऽ अएलन्हि तऽ ओ हमरा दऽ पुछलकन्हि। हम ओतहि अड़ मे बैसल सेसर पहर कनेक आराम करैत छलहुँ। मलिकाइन हमर प्रशंसा कएलाक पश्चात् कहलखिन्ह अहाँक भाई साहेब बलचनमाक दिमाग खराब कऽ देलखीन्ह ? बेवकूफ पतलखरी लऽ कऽ बैसैत अछि। आओर सबसे पहाड़ा सीखि लैत अछि। एहिपर ननदि कहलखिन्ह—हम भैया कें मना कऽ देबैन। नोकर-चाकर जतेक नासमझ रहए ततेक बढ़ियाँ रहत भौजी ! हमर अजिया ससुरक कहब छलन्हि जे छोट जाति मधा के एको आखरक ज्ञान दैत छथिन्ह तऽ हुनकर अपने तेज घटैत छन्हि आओर जे क्यो शूद्र के समूचा पोथी पढ़बैत छथिन्ह हुनकर पिता सभ स्वर्ग छोड़िकऽ नरके मे रहक हेतु लाचार भए जाइत छथिन्ह।

मलिकाइन अहि बात कें दुनियाँदारीक पहलु छुआ कऽ बजलीह—खैर ई तऽ ऊपर के चीज भेलो असल तऽ मुसीबत ई अछि जे नोकर-चाकर पढ़ि लिखि-कऽ अहाँक हंडी माजऽ नहि बैसत। आओर तखन एकरा पढ़ेला लिखेला ई फायदा ?

अच्छा !—हम अपना मोने-मोन बजलहुँ तऽ ई बात छैक ? तैं भरिसक अहाँ हमरा पतलखरी नहि कीनि दैत छी ? देखलेबै—भइतमानि हम कोना नहि पढ़ैत छी·········

हमरा बड़ अफसोच अछि, जे मलिकाइनक नियत एहन खराब छन्हि आओर ओ कहियो भोजन खराब नहि दैत छलीह। तऽ भैया ई चोला जतेक जल्दी बदलि जाइक छै ततेक जल्दी आदमीक विचार नहि बदलैक छै।

राधाबाबू कतेक ने कतेक बुझेलखिन्ह समझेलखिन्ह तखन जा कऽ ओ खद्दर पहिरक हेतु तैयार भेलीह। जे कपड़ा ओ पहिरथि ओ मेही सुतक बनल रहैक। छपुआ साड़ी, छींटक ब्लाउज। ब्लाउज बुझलिऐक की नहि? अरे वैह आँगी। नव फैशन के चोलीए बुझु। तीतली सन हुनकर गेहु सुरति पर हरियर छींटक ब्लाउज लाल फूल वा भुरा छापल वाला साड़ी हुनका ऊपर बड़ बढ़ियाँ लगैत छलन्हि। ओ धनीक बापक बेटी छलीह। मोट-सोट साड़ी हुनका कोना नीक लगितान्हि? मेहरी खद्दरो जे ओ पहिरथि से बूझू जे घरक लोकक हेतु ओ एकटा भारी काज करैथ। राधाबाबू ठहरला पैघ लीडर हुनकर आँगन वाली भला कोना ने खादी पहिरतथिन्ह। धीया-पुताक हेतु ओ एक दिन लड़ऽ लगलीह। एकरा सभ के हम कोनो हालत मे नहि मोटका कपड़ा पहिरऽ देबै। पैघ भऽ कऽ चाहे जे ओढ़ै पहिरए, एखने सँ किएक जोलहा सभहक ढाँचा धरत?

भरल सभा मे अंग्रेज सरकार के ललकारऽ वला हमर राधाबाबूक अपना घरवालीक तमशाएल मुँह देखिकऽ बड़ा खराब तरह सँ घबराथि। बाबूक बाहर के खूब चलती रहैत, घर के एक्को पाई ने गुदानल जाइथ। एतऽ मलिकिनेक कहला होइत छलन्हि, मालिक हरदम नहले रहैत छलाहैन। हुनका अपना मे जे चलैत होइन्ह, हमरा पर तमशाएल नहि छलाह; मलिकाइन के तऽ हमरा किताब पकड़लि देखि अलबा लगैन्ह। परञ्च ओ हमरा दोसर बात मे कहियो नहि टोकथि। मालिक त खैर हरदम भोलारहैथ।

दुरागमनक दिन नजदीक आबि गेल। राधाबाबू पचनास रुपया हमरा नगद देलन्हि। लहेरियासराय के एकटा बनियाँ सँ एकटा साड़ी जनानी आ ओर दूटा मरदानी धोती कीया देलन्हि। हम खुशी भऽ गेलहुँ। खुशी सँ हमर मुँह फुजले रहि गेल। आखिर मे मालिक-मलिकाइन के पैर छुबिकऽ धिया-पुता के दुलार कऽ क तीन दोन धुम घिललापर हम अपना घरक लेल चलहुँ।

९

धनकटनी अइ-तइ शुरु भऽ गेल छलैक। परञ्च आधा फसिल कटि चुकल छलैक। रोंगी धान सब धान सँ पहिले तैयार होइत छैक।

पाकल पीयर फसिल सभ सँ समूचा बाध एना बुझाइक छल जेना सोनहुला माटि सँ लेपल बड़का मैदान होइक। आड़िक चौचीर पाँती सभ धानक शीश सँ झाँपल पड़ल छलैक। बीचा-बीच मे रखवार सभहक खोपड़ी सभ दूरा पाल वाली नावक सन लगैत छलैक। सभ खेत पर अनपुर्ना (अन्नपूर्णा) भवानीक आसिरवाद (आशीर्वाद) पाकल फसिलक शकल मे परसल छलैक। लोक सभहक खुशीक नहि ओर छल नहि छोर। सभहक मुँह पर मुस्की, सभहक आँखि मे सफलताक झलक। जिनकर अपन फसल छलैन्ह ओ सेहो खुशी छलाह, जिनकर नहि छलन्हि ओहो खुशी छलाह। गिरहथ (गृहस्थ), बनिहार, जन-जनो, कङ्गर-भिखमंगा सभहक मुँह पर आशक चेन्ह छलैक। फसिल भेलैक अछि त मजरी सेहो भेटत, बनिहारी सेहो। भिखमंगा सभ कें भीख सेहो भेटतैक, ब्राह्मण देवता कें दान सेहो भेटतैन्ह। आओर गिरहस्त सभ के की कहनाई? मुंडन छेदन आओर सुन्नत सँ लऽ कऽ ब्याह आओर चलौना तक सभ काज अही फसलक भरोस सँ चलैत छैक। बढ़ियाँ फसिल देखि कऽ महाजन के सेहो कर्जा देबऽ मे उत्साह होइत छैक। पुजारी मंदिर मे सभ के भोन सँ घंटी बजबैत अछि आओर भोन सँ आरती

उतारैत छथि। फसिल बढ़ियाँ देखऽ मे आयल तऽ निहारा-गुहारा मे सेहो सुभीता होइत छैक। काली माई के छागर (बकरा) क जोड़ी, बरहम बाबा के फुल-अक्षत, पितर सभ के गयाक पिंड, बाबा कुसेसरनाथ के घी-दूध ई सभ अहाँ सभ तखने करब जखन की खेती बढ़ियाँ होएत। समय-समय पर पानि नहि बरसए आओर बाढ़ि नहि आबए तखन तऽ ठीक नहि खेती भेल चौपट आओर खेती भेल चौपट्ट तऽ लोक सभ के गाल चुकुड़ि जाएत, आँखि सभ धसि कए अनगढ़ दिया बनि जाएत।

अहि कमला मैयाक किरपा छलैन्ह, जहाँ देखू ओतहि लछमी महरानी धानक रंग-बिरंगक शीश (बालियाँ) सभ पसरल छल। हाट बाजार मे अही सँ अनाजक भाव बहुत नीचा उतरि आएल छलैक। दू रुपैया मोन धान आओर तीन रुपैया मोन चाउर छलैक। मदई रुपैया आओर महुआ डेढ़ रुपैया मोन छलैक।

हम पहिने पक्का कए लेने छलहुँ कि भरि पुस धन कटनी करब। धान काटक बनिहारी सँ एतेक अन्न भए जाएत की चारि महीनाक कटान चलत। मगर माय कातिक मे बीमार पड़ि गेल, पैतीस साँझ ओ किछु नहि खेने छल। बहुत कमजोर भए गेल चलैक। गाँवक बैरजी बुखार के आओर बढ़ा देने छलखिन्ह। ओ तऽ खैर भेल कि संयोग सँ फुलबाबू आबि गेलाह आओर छोटकी मलिकाइनक मेहरबानी भेल। एक बोतल अलबर टोनो (एकटा टानिक) ओ सभ मंगवा देने छलाह, थोड़ बहुत पथ-पानिक सेहो इन्तजाम कए देने छलाह।.........

रेवनी सँ हम पुछलिऐक—तोरा एतबो नहि फुरेलौक कि भैया के एकटो (एकटा) पोसकाड लिखवाकऽ पठा दितैं!

माय मना कए देने छलैं—ओ बाजल।

हमरा रेवनीक अकिल पर दया लागल। अहि मे भला अम्मा के पुछऽक की बात छलैक? चारि अच्छर केकरो सँ लिखबाबैत आओर टीसन पर डोल-डाँगल रहैत छैक ओहि मे खसाऽ अबैत पोसटकार्ड! ई तऽ ससुरारि मे अपन नैहरक नाम हँसाउत, हे भगवान!

परन्च कसूर रेवनीक नहि रहै। पाछू बुझलिऐक जे ओकरा कियो लिखऽवला नहि रहैक। छोटका मालिक सँ ओ लिखेबो करितै तऽ कोना। बड़ली बाबुक छोटका भाय पढ़ाई छोड़िकऽ घर बैसल छलाह हुनका सँ लिखबा सकैत छल परन्च रेवनीक हिम्मत ओतऽ जेबाक नहि भेलैक। ओ लड़का किछु बदनाम छल आओर ओकर समहक घर गाँव सँ कनिक हटिकऽ रहैक, बाँसक बड़का-बड़का बीटक अड़ मे रहैक। उम्हर जाए मे रेवनीए नहि गामक कोनो बेटी-पुतहु डेराइत छल। बाँसक ओ छोटका जंगल लुच्चा सभक खेल बागक बराबर छल। कतेको तरहक खिस्सा ओहि झुरमुट क बिषपुते सँ सुनैत अएलहुँ अछि। नीके भेल जे रेवनी उम्हर चिट्ठी लिखाबय देखु नहि गेल।

माय एखनहु तक कमजोर छल, तैओ ओ धनकटनी मे हमर हाथ बँटाबए चाहैत छलि। हम बुझेलिऐक—मरियजबे, बेटा-बेटी कि पुतहु किओ काज नहि अएतौक। अपन भला तऽ दुनियाँक भला! बड़ कठीन सँ ओ मानलक फूची भरि गायक दूध रोज ओ पीबय लागलि।

हम दूनू भाई बहिनी मोजिकऽ खेत मे जाकऽ धान काटी। रातक राखल नीज भोरे अन्हारे मे हाथ मुँह धोक खाइत छलहुँ। हम जाबे तक हुक्का चीलम पीबैत छलहुँ ताबे रेवनी बर्तन बासन माँजिक चुल्हा चुल्हा निपी लैत छल। फेर द्वार मे हाँढ़ू खोसिकऽ हम दूनू गोटे खेत दिस बिदाह होइतहुँ। दोसर दिन कोन खेतक फसिल कटतै से पछुलके साँझ बऽ गिरहथ कहि दैत

छलखिन्ह। मरद-औरत, जुवान-बूढ़ सभ ठीक समय पर खेत पहुँच जाइत छथि। एक कतार मे १५ कऽ बनिहार धान काटब शुरू कऽ दैत अछि। निचला खेत महक धान पाँच-पाँच छः-छः हाथ नाम होइत छैक। आओर खाली शीश छाँपि लेल जाइ छैक। हमरा दिश निचला खेत कम छल। एहऽ तऽ भैया हम जड़ि सँ कटैत छी। काटैत समय खप-खप, खुप-खुपक आवाज कान मे बड़ मिठ लगैत रहै छै।

पहर डेढ़ पहर तक हम सभ चौंज विहरि-विहरि कऽ धान कटैत रही। हँसी-खुशीक आवाज, गीतक आवाज आओर खेत सेन घूमि कऽ लाई-झुरही बलाक आवाज, सारंगी बलाक विलाप......केना दुपहरक बाद तेसर पहर अबैत छैक पता नहि चलैत छल। माय खेंक अनैत छल तऽ घड़ी भरिक लेल होए के आराम भेटैत छलैक। आरि पर नहि खेतहि मे बैस कऽ हम खाई। धानक खेत मे काटल फसिलक खुट्टी मुलायम होइत छैक। जहाँ समहक मुलुक मे गहूम, जौ, ज्वार, बाजरा होइत छैक, ओकर खुट्टी कड़ा रहैत छैक। ओहि पर एना मुलल की बैसल नहि जा सकैत छैक। बड़का बड़का मालिक अपने खेत मे नहि अबैत छथि। बराहिल, गुमस्ता आ की दोसरे नोकर-चाकर धन कटनीक देख-भाल करैछ। मझिला मालिक आ गिरस्त सभ अपने अबैत छथि। छोट-छोट गृहस्थ आओर मामूली खेतिहर बड़ा चलाकी सँ बनिहार सँ काज लैत छथि। खेत मजदूर के अपनहुँ तऽ खेत होइत छैक जकर फसिल ओ अपने कटैछ। हमरो चारि कट्ठा खेत छल जाहि मे धान छल। अपन फसिल हम अपनहि काटि लेलहुँ।

बत्तीस बोझ धानक मजूरी दू बोझ धान होइछ। खास जन के मालिक सभ किछु बेसी कऽ दैत छथिन। ओहि बरख हम बीस बाइस दिन फाजिल कटने रही। ओनि मे छ मन धान भेल रहय। ओ तीन मासक गुजर के

हेतु बहुत छल। यदि माय दुखित नहि परैत तऽ दू तीन मन आओर धान होइत। अपना जमीन मे छ मन धान भेल छल। दू तीन कट्ठा खेत मे रब्बीक फसल सेहो रहय, जौ बूट खेसारी।

खरिहान मालिक के बड़कीटा रहैन साधारण गीरहथक खरिहान साधारणे होइत छैक। तेसर पहरक बाद धानक बोझ खेत सँ खरिहान मे आबऽ लगैछ। पहर भरि तऽ खाली आनहि मे लागि जाइछ। खरिहान कहिओ खेतक लग रहैक तऽ कहिओ दूर। फसिलक बोझ एक पर एक रखैत जाउ तऽ टाल बनि जाएत। टाल पर खेप दिस ताकब तऽ गरदनि टूटि जाएत। हमरा बस्ती मे एहन गिरहस्थ चारिए टा छलाह जनिकर उपज हजार मन सं बेसी होइत छलन्हि—बड़का मालिक, मझिला मालिक, छोटका मालिक आओर बल्ली बाबू। मझिला मालिकक उपज ढाई हजार मोनक, बल्ली बाबू डेढ़ हजार मोनक। बाकी हजार मोन बला छलाह। ई भेल सिर्फ धानक उपजक बात, रब्बी आओर भदई क उपज अहि सँ फराक छल। सै-डेढ़ सै मोन ओहो भऽ जाइत छलैक।

खरिहान मे दाउनीक काज माघ-फागुन तक चलैत रहैत छलैक। फागुन मे रब्बीक फसल तैयार होअए लगैत छलैक। सरिसो, तीसी, खेसाड़ी, बूट ......चैत मे जौ, गहूम, मसुरी आदि।

हम अपन धान झाड़ि-पीट कऽ तैयार केलहुँ। बनिहार सभहक संग कहाँ खेत आओर कहाँ खरिहान, कहाँ बरद आओर कहाँ हर-फार ? मनियार कक्काक ओतऽ सँ बड़की उखड़ि लए अनलहुँ आओर ओकरे डाँड़ पर सभ धान हम झाड़ि लेलऊँ कहाँक दिस तऽ एना नहि होइत अछि ने ? उखरि कें ठाढ़ा दैत छिएक, शीशबला धानक डाँट सभ कें ओहि पर जोर-जोर सँ पटकैत छीऐक ; शीश सं झड़ि-झड़ि कें धानक दाना सभ नीचा खसैत

जाइत छैक। फाड़ल डाँट सभ के कात कऽ रखैत जाउ आओर दोसर लाइत फाड़ैत जाउ। परंच ओहि प्रकार सँ सो मोन धान नहि फाड़ल जाइत छैक, ई तऽ दू-चारि मोन धान बलाक ढंग छैक।

मिला-जुला कऽ देखू तऽ छः महीनाक खर्चा घर मे छल। चारि परानी खाइयो वाला तऽ रहल होएत। कोन, दस दिन तऽ रहि गेल छल गौना के।

माए जल्दी बढ़ियाँ भए गेल। लीप-पोति कऽ ओ घर के चिक्कन बना देलक। कात कँ सात हाथक चार चढ़वा लेलहुँ हम। ओकरो मुँह आँगने दिश छलैक। आँगनक बाहर घरक सामने दुभि छलैक, ओकरा छील-छालि कऽ साफ कए लेलहुँ।

ओर-सिंदूर आओर सगुन क चीज सभ लऽकऽ चुन्नी हमरा सासुर गेल आओर गौनाक लेल हुनका सभ के तैयार कए आएल। ई एक प्रकारक रसम-रिवाज छल।

हमरा सासु के मरना पाँच-सात बरख भेल होएतैन। ससुरक दिस सँ द्विरागमन इशारा पबके शाल भेटि चुकल छल। माघ सुदि पंचमीक दिन निश्चित भेल। चुन्नीक माय ओकर घरवाली, भाउज आओर भावुक अबरजावू बढ़ि गेलै। कियो……क हेतु बेसन पीसऽ बैसलि, तऽ कियो नीपल-पोतल घरक टाट मे घोरा हाथीक मूरत खिचैत अछि। सेज मे सिन्दूर घोरि कऽ ओहि सँ कतेको आगह गाछ-लाथिक चित्र खींचल गेल। आओर हम ई सब देखि कऽ हँसी। धनवन्ती काकी (चुन्नीक माय) हमरा देखि कऽ हँसैत कहलनि—तोरा किएक पतिस अएतौक बौआ! दरिभंगा पटना घूमल छह, हम सब तऽ जाहिल चपाट ठहरलहुँ। हम कि जानऽ गेलिऐक जे फूल पत्ती कोना बनौल जाइ छैक। अपना घर वाली के पटना लऽ जइहऽ, ओ सीखि लेतह…धनवन्ती काकी जखन हँसथि तऽ घर आँगन हुनकर ठहाका सँ गूंजि उठै। ओहि काल हमर लाज शरम हुनका ठहाकाक नीचा दबि जाए। चुन्नीक घरवाली मुसकी मारय। चुन्नी हमरा सँ चारिए मासक जेठ रहए। ओकर घरवाली बात-बात मे हमरा सगे शरारत करय। पछिला फगुआ मे एक लोटा रंग नबे बंडी पर ढारि देलक आ बड़ी काल तक हीही करैत रहल परंच हमही की छोरि देलिऐन? थोरेक कालक बाद अबीर लऽ अयलहुँ रानीजी मसाला पीसैत छलीह जल्दी सँ हुनका दबा देलहुँ आओर गालपर आधा पाव अबीर रगरि देलिऐन। थोड़ेक काल तक माय माय करैत रहली! बुझि गेली जे बालचन्द के संग बदमाशी करय मे की फल भेटै छै।

कोशी क किनार दिस ओकर नइहर रहैक। पिंडश्याम रंग क मुँह रहै आँखि नाक बढ़ियाँ रहए, चेहराक काट-छाँट खूब बढ़ियाँ होइ तऽ कि जनाना खूबसूरत कहाओत, नहि कहएतै? ओहि पर कऽ तन्दुरुस्ती बढ़िया रहलै तऽ ओकर सुरति की कहब! कोरा मे ओकरा एकटा अढ़ाई साल क बेटी रहैक। भगियार कक्काक मनोरथ ई रहैन जे पोताक मुँह देखकऽ मरी। रोज बेचारे नहाकऽ पीपर के जड़ि मे लोटा भरि अछिञ्जल चढ़ाबथि। परञ्च ई तऽ अपना बशक गप तऽ छलैक नहि!

दुरागमन सँ दू दिन पहिने ममा आबि गेला। तैयारी समटा भऽ चुकल रहैक। घर-आँगनक जिम्मेवारी माए पर रहैक। नगदीक इन्तजाम हम कए लेने रही। हँ, एक जोड़ साड़ी आओर मँगबाबऽ पड़ल।

हमरा मोन नहि अछि जे अकरा सँ कहियो विवाह भेल रहए ओकर शकल-सुरत केहन होएतैक।

बाढ़ि बला धार मे हेलैत काल जेना क्यो थाकि कऽ आँखि मुनि लैत अछि आओर थोड़क काल देह के ओहिना छोड़ि दैत अछि ओही तरहें हम

अपना जिल्ला के धार मे छोड़ि दी की चट द निकल आबि जाय......।

मामा, चुन्नी आ हम.........तीन गोटे सँ दुरागमन करऽ गेलहुं। पैदले जाए पड़ल, ओहि दिन मे रेल नहि रहैक। बहेरी सँ दू कोस आओर दक्षिण-पश्चिम, गाँव के नाम रहैक शीतलपट्टी। बस्ती कोनो पैघ नहि रहैक, एकदम मामूली। चारि छः घर राजपूत, पच्चीस-तीस घर ग्वार, पच्चास एक घर जुलहा। गाँव सँ कोस भरि पश्चिम जीबछ नदी क पटान रहैक, भदबारिक दिन मे ओही बाटे कमलाक पानि सँ फाजिल डूबि जाइ छैक। ओहि सँ खरापी नहि गिरहस्त के लाभे छैक। राजपूत बिचला दर्जाक काश्तकार छैक बाँकी छोट-छोट खेतिहार। जमींनदारी शुम्भा ड्योढ़ी राजपूत जमींदारक रहैक। बनिहार होइक या खेतिहर, साधारण गिरहस्थ रहै चाहे काश्तकार—शितलपट्टी बलाक जिन्दगी ओतेक कठोर नहि रहैक जतेक कि हमरा गाँव बलाक। ओकर दोसर वजह ई छइक जे ओतऽ के जोलहा खेतीक अलावा आओर समय अपन तानी भरनी आ करघाक सहारा गुजारैत अछि। ओहिटोल मे दस टा करघा चलैत छलैक। दरभंगा, समस्तीपुर सँ सूत लऽ कऽ चादर अँगोछा, नाहमद, लुंगी, चरखना आदि तैयार कऽकऽ पास-पड़ोसक हाट सभ पर मे बेच अबैत अछि। बीसो जुवान जुलाहा ढाका आर कलकत्ता रहिकऽ अपन गाँवक खुशहाल के बड़ा रहल छल। सत पुछू तऽ ओ जुलहा सभ ओहि बस्तीक ढाँचा बदलि देने छलैक।

ओतऽ हम एक दिन आओर एक राति भरि रहलहुँ। हमर आतिबला सभ ओतऽ एक साधु के पासि रखने छल। ओ अपर (दर्जा चारि) पास कऽकऽ पहिने काँग्रेसक मोलंटियर (सेवक) आओर बाद मे रमता जोगी बनि गेल छल। आब उमर तीसक लगभग रहल होएतैक। गाँधी

महात्माक प्रचार सेहो करैत छल। सितलपट्टी मे ओकर पीसी रहैत छलैक निपुत्री हेबाक कारणेँ माइनजनकेँ अपन डीह-डाबर सौंप गेल छलैक। वएह घर बाबा जगादासक आसरम बनि गेलैक जिनकर नाम पहिने कारीराउत छलैन्ह। ओ हमरा तीनू गोटे केँ ओहि मॉझकऽ भांग पिया देलैन्ह। हमरा किछुओ नहि बुझल अछि कि ओहि राति ससुरारिक स्त्रीगण सभ हमरा सँ की की रिवाज करबौलक!

भोरे मे गोनाक लगन छलैक। महफा आओर चारि कहार बेह सभ ठीक कऽ रखने छलाह। स्त्रीगण सभ कान-काल मोहरि करऽ लागल गोना-बालीक त मानू कंठे फूटि गेल छलैक। पीयर साड़ी आर लाल चोली पीठ दिस नूआ पर हाथक लाल-लाल थप्पा पड़ल छलैक। सरवा मे महाबरक नाम पर आलक रंग अपन गाढ़ लालीक शोभा दऽ रहल छलैक। आँचर मे धान-दूभि पानक पात आओर सौंस सुपारी आओर हरदि बान्हल छलैक। हाथ मेंहदीक चेन्ह देखाई पड़ैत छलैक।

रिवाजक तौर पर थोड़ेक दूर तक महफा मे हमरो रहऽ पड़ल। गाँमक बाहर मे उतरि गेलहुँ। दूआदमीक बोझ चारि गोटे केना दो सकैत? आओर लाजक मारे ओकर गर्दनि सेहो टूटि जइतैक! अरे हँसैत छी! नव-नवेलीक शील-संकोच सँ तोरो तऽ पाला पड़ले होएतऽ, आ की नाद पड़लऽ? झूठ नहि बाजू भैया!

कनियो के अपन आए नहि छलैक, पितिओत भाए संग मे गेल छलैक। दही, पकवान, केरा आओर समधिनक जेल साड़ी लहठी...एक आदमी सीक सभ पर ई सभ नेने छलैक, पटई क सहारा सँ। बीच मे दूबेर ओहार उठा क महफा मे हुलकी, एक बेर नजरि मिलते मुस्कुराए पड़ल आओर दोसर बेर नीन मे मग्न छल बेचारी। पहिने-पहिने येह हम ओकर झलक

पेलहुं। अरे देखने तऽ रानियो कऽ देबैक परञ्च सार सभ की पिया देने छलैक, सुधि-बुधि सभ बिसरि गेल छलहुं। एखन मगर होश मे छलहुं। आहा! बुच्चाक माएक ओ मुंह आइ तक नहि बिसरि सकलहुं भैया! ओहो की बिसरक वस्तु छैक? गोल-मुँह, बदामी आँखि, छोटकी नाक, पात सन कपार, कारीझेहर केश, पातर ठोढ़, कानक सन ठुड्डी, सुरेब गर्दनि—बड़ सुन्दर लागल ओ। पहिले दर्शन मे ओ अहि मोन मे धँसि गेल, सत कहइ छी भैया। सीथ मे सिंदूरक पनगर रेखा, कपार पर चकमक खुदिया दाना सभ सँ सिंगार कएल छलैक। गर्दनि मे सुन्दर हँसुली छलैक। बाँहि पर बाजूबन्द, कब्जा मे लाह चूड़ी। पैर मे गिलटक कड़ा। दहिना हाथक आङुर मे पीतरिक अँगूठी······माए नहि छलैक तँ की, बाप संसार मे कोनो कसरि नहि रखलकैक। मामूली खेती करऽ बाला छल बेचारा। हमही कोन नवाबक नाती छलहुं? सत पूछू तऽ हमरा सँ हमर ससुरक हालत कैऽ गुना बढ़ियाँ छलैक।

आइक दिन अहिना छोट होइत छैक। हम पहिनहि सँ थाकल-टेहिएल छलहुं, ओहि दिन तँ आओर चूर-चूर भऽ गेल छलहुं। कहार तऽ मानू दौड़ले चलैत छैक।

नव-नबेली बहु-बेटी अगर पालकी मे रहलैक तऽ पेर तऽ ओकरा सभ के पैर मे पाँखि लागि जाइत छैक। हम आओर चुन्नी कहार सभ के मना कए दिऐक—एतेक तेज नहि चल मामा तोरा सभहक संग कखन तक दौड़ सकताह?

एही पर अधेर वयसक एक टा कहरिया नमसाय कऽ बाजल—हम तऽ पहिनहि सँ इ जनैत रही तेँ चौठी भरिचढ़ा लपलहुं हैं·········हैं।···आब काछुक चालि चलू हम सभ? 'मामा डपटि कऽ कहलखिन्ह—बदमाश कहीं के! छोट जातिबलाक अकिलो छोटे होइत छैक। चल, एतेक तेजी सँ चलबाक छउ,·········छोड़ि दहक बालचन्द, दौड़थु ससुरे।

कहार—गे से जे सभसँ कम उमरि के रहै ओ काफी मस्त आदमी आओर खुश मिजाज रहए। कतेक कबाईं सँ बाजल गारि देब अहाँ?

बाँकी कहार हमरा दिश घुरि-घुरि कऽ ओकरा तामस पर आओर शान चढ़ा देलकै।

मामाक चेहरा पर पैर सँ लऽकऽ माथ तक बुढ़ौती आबि गेल रहैन्ह। केश बढ़ियाँ जकाँ उज्जर भए गेल रहैन्ह। एखन ओ तरहत्थी पर तामकुस मलैत छलाह। ब्वार सभ केँ एक तऽ कोध अबैत नहि छै जँ आबि जाइत छैक त प्रलय भऽ जाइत छैक भैया! से, मामा भभकि उठलाह; आगू बढ़ति बजलाह—तऽ की कऽ लेबेऽ हमर?

पहिने तऽ कहार सभ ओहि जवान के रोकि देलकै। चुन्नी एमहर मामा केँ बुझेलक। बीच-बचा करैत हम बजलहुं—अहि मे तमशाएक कोन बात छलैक? कहुना हम चलब तैयो साँझ तक घर चलिए जाएब······।

एतेक कहि कहार सभ दिश हम नजरि घुमेलहुं। मामा दिश देखिकऽ हम बजलहुं ई बेचारे कहाँ तेज चलैत छथि? अपन—अपना चालि जँ ई चलि कऽ देखाबथि तऽ अहाँ—उदलक घोड़ा सेहो हिनकर सभहक मुकाबला नहि करतन्हि!

दूनू दिशक कोध ठंडा भऽ गेल। हम गाछक अढ़ मे मामा सँ कातेऽ लऽ जाक बुझा देलिएक ओहि नव-जवान कहार के। तू सभ अपन चालि चलि सकैत छह परञ्च डेढ़-डेढ़, दू-दू कोसपर हमरा सँ भेंट कऽ लेल करबह, बस?

अहि पर ओ खुशी भऽ कऽ कहलक—हँ मालिक, कनहा पर भारी बोझ रहए तऽ फुरतीए फुरती चाही। ओहन हालतमे कनीको सुस्ती कोढ़-करेज

के' खखोरि-खखोरि कऽ खा जाइत छैक।

केहन बात कहलक ओ ! छौ ने लाख रुपयाक बात ! आधा रस्ता पार करएक पश्चात् हम घड़ी भरिक लेल खाएक हेतु रुकलहुँ। सड़क के कातहि मे इनार रहैक। कलमी आमक बड़का बगीचा। पीपर के भारी गाछ। देवीक मंडील। स्कूलक खपरैल मकान। इंजनक सीटी सुनाई पड़ल।

हम तीनू गोटे चूरा भिजबइत छलहुँ की फेर सीटी सुनाई पड़ल। अहि बेर मामा पात सँ हाथ उठाक पुछलन्हि कोन टीशन छैक बालचन ?

सकरी—हम कहलिअन्हि। चुन्नी सेहो अपन मुँह खोललक—जहाँ बैसल छऽ ममा ओ कोन गाँव छैक, से जनैछहक ? अपन बताबक हेतु ममा मुँह बाबि देलन्हि। चुन्नी उठि कऽ दही परसलक। मोटरी मे नून तकैत बाजल—ई दहौरा छैक ममा, कतेको बेर एमहर हम आएल छी; हम बड़का मालिकक कुट-मैती मे एही गाँव आएल रही। आओर पमोलीओ मे। एतक सरसुती (सरस्वती) लोक आओर मेहराक चउधरी लोक मुलुक भरि मे नामी छथि।

हम पहिला कर घोंटैत कहलिएक—हमहूँ एमहर सँ गेलहुँ हे चुन्नी। भाग ! तू कखन एमहर अएलैंह ? ओ डपटलक तऽ हम कहलिऐक—बाबा कुसेसरनाथक दरसन करऽ जे जाइत अछि ओ किमहर सँ जाइत अछि ? आब चुन्नी कें मानऽ पड़लैक—हँ, एम्हरे सँ कुसेस्सरधामक रास्ता गेलैक अछि।

हम चारू गोटे चूड़ा-दही खएलहुँ। कहार सभ सुखाएले चूड़ा फँकलक। हम मामाक अधीन छलहुँ, आओर ओ एकरा लेल कखनो तैयार नहि भेलाह कि थोड़े दही कहारो सब के देल जाइक।

सवार के सेहो ओतहि सुआएल गेलैक। हम नजरि बचा कऽ ओ थोड़ेक समयक वास्ते पालकी सँ निकलल सेहो। एमहर हम हुक्का गुड़-गुड़ाबति रहलहुँ। मामा हुनका संग लऽ लेने छलाह। खैनी हुनका एतेक पसंद नहि

छलैन्ह जतेक हुक्का पसंद छलैन्ह। कहैत छलखिन्ह—बाभन सभ केः संगति सँ तमाकुल खएबाक लति पड़ल; आर-सरिकऽ मुँह गन्हाइत छैक।

दहौरा सँ डोली उठल त एकदम पंडौल चलि गेल। कोनो, बेढ़े कोस तऽ पड़ैत छलैक। मामा सेहो टनमना गेल छलाह। राजक सकौलक नगीच सड़कक काते-काते बड़का-बड़का गाछ छलैक, मामा ओतहि लुढ़ सँ बैस गेलाह, तऽ हमरो बैसऽ पड़ल, नहितऽ हम कनी आगू बढ़ि कऽ हाटक गाछी मे बैसकऽ सुस्तैबला छलहुँ।

चुन्नी गेल, मामाक वास्ते ओतहि पानि लऽआएल। अहि बेर तमाकुलक संयर छलैक। तरहत्थी पर तम्बाकू चून ठोकल गेल। थोड़ेक समय मे चुनौटी तैयार भेल। चुन्नी आओर मामा ओकरा अपना-अपना ठोढ़क तर मे दबएलन्हि आओर चलि पड़लाह। हम बीड़ीक भक्क ठहरलहुँ, एकटा फूंकिकऽ आधा टुकड़ा दोसरक सेहो खतमकऽ चुकलहुँ, तखन उठि कऽ विदा भेलहुँ। रास्ता मे एक-दु-बेर ओहि जवान के तेहो हम बीड़ी देने छलिएक, बिलकुल स्वार्थ सेहो कोन काजक भैया ? सस्ता-महँग आओर खुलल तंगी हऽ जिनगी भरि चलतैक। जीनाई छैक संग्राम बन्धा, जीनाई छैक संग्राम। सुनने छी ने कहियो ?

एक ठाम सड़क विचित्र तरह सँ खराप छलैक। ओतऽ सवारी कें डोली सँ उतरि जाए पड़लैक। डिस्टिक बोर्डक पुल की जानि कहिया सँ टूटल पड़ल छलैक। ओहि सालक भदवारि मे ओहिठाम सड़क पर कईएक खाधि बनि गेल छलैक मगर अखन तक मरम्मति नहि भेल छलैक। ओतऽ अखिते सम के सवारी छोड़ए पड़ैत छैक। हम मोन मे विचारि लेलहुँ कि राधा बाबू सँ कहबन्हि बोर्डक चेयरमैन हुनकर दोस्त छन्हि........

राम-राम कऽक आगू बढ़लहुँ। रइमाक लग एकठाम आमक-मज्जर

एहन सुगन्ध आबए की मिजाज मस्त भऽ गेल। माघ बीस दिन बीत चुकल छलैक। आम कें मजरक समय आबि गेल छलैक। कहैत छैक, आमक बौर चूसि-चूसि कऽ कोइली अपन तान कें तेज बनबैत अछि। गन्हक ओ झोंक लगला सँ मामा तऽ अपन लाठी टेकिक ठाढ़ भए गेलाह। चुन्नी बाजल सार गाछ। मानू छिछियाकऽ बौराएल अछि, एहन मस्त सुगन्ध तऽ पार कतहु नहि भेटल छल आई तक।

लगक आड़ि पर एक आदमी ठाढ़ छल। एक हाथ मे दू टा कुसियार दोसर मे, टटके खोटल मटरक सागक मुट्ठी। ओ गुन-गुनाइत छल :

सखि हे मजरल आमक बाग।
कुहू-कुहू चिकरए कोइलिया,
झींगुर गाबए फाग।
कन्त हमर परदेश बसइ छथि,
बिसरि राग अनुराग।
खिधि भेल बाग, सील भेल बैरी,
फूटि गेला ई भाग।
सखि हे मजरल आमक बाग······

हम सभ गीत सुनि लेबए चाहैत छलहुँ। मगर चुन्नी सँ नहि रहल गेलैक, ओ बीच्चे मे टोकि देलकैक—खूब मजर छैक, कोन आम अछि बाबू? करपुरियाक दू गाछ छैक, ओ अहिबेर बौराएल छैक—उत्तर भेटलैक।

तखने तऽ—हम आओर चुन्नी संगहि बाजि उठलहुँ। मामा कन्ने जोर सँ कहलखिन्ह—करपुरिया आम खाए मे अहिना गमकैत छैक। बाबू, ककर कलम छैक?

शकल—सूरत तऽ नहि, परञ्च कपारक लाल-ठोप आओर छाती परक साफ डोरा कहैत छलैक कि ओ बराहमन अछि। ई सभ सोंको-साक्ष सब्द कें चिबा-चिबाकऽ बजैत छथि। ओ कहलक—बाबू छत्रमनि ठाकुरक।

मामा दोहरा देलखिन्ह—छतरमइन ठाकुर। बड़ अकबाली आदमी होएताह।

हँ—ओ बाजल—अपने तऽ ठाकुर परतापी छलाह मुदा बेटा सुनू अबूरयान निकललैन्ह···

हम कहलियैन्ह—छोड़यौं कह मामा, डोली बहुत आगू निकलि गेल। पाकऽ लगतैक तऽ अहि आमक आँठी लऽ जायब, चलू।

आँठी किएक, दू चाड़िगोट आमे भेट जाएत—बराहमन देवता बजलाह—जरूर अबिहऽ; असाढ़ मे···शू तभ कोन आश्रम छह?

जदुवंशी—चलैत चलैत चुन्नीक मुँह सँ निकललैक। ओमहर माए आओर रेबनी आओर टोल-पड़ोसक मर्द-मेहराऊ सब हमर बाट तकैत छल। दालि-भात, तरकारी, बड़ी, अचार, नेबो आओर आँड़ाक चटनी ''सभ किछु तैयार छलैक। दुलहिनक लेल खीर बनल छलैक।

डोली पर गुलाबी रंग साड़ी लपटल छलैक। छौंड़ा सभ दूरे सँ देखि लेलकैक। गाँम सँ बाहर पोखरिक मोड़ पर रेबनी आओर चुन्नीक आउर सभ सेहो ठाढ़ भेल छलैक।

हमरा लाज लागल। मामा सँ बजलहुँ—आँहा चलू मामा, हम दिला-फराकत सँ निबहिकऽ एखने अएलहुँ···

चुन्नी मुस्कराकऽ नजरि मारलक। खग जानए खगक भाखा। हम ओकरा इशारा सँ डाँटि देजिएक, लजाएल के आओर लजाकऽ की फएदा। मगर एहनो लोक होइत छथि जनिका भिजल पर पानि छींटऽ मे बड़ मोन

लगैत छन्हि। मामा आगू बढ़लाह त चुन्नी के कान मे हम कहलिएक—बड़ लाल लगैत अछि यार, किएक तू हमरा पाछू हाथ धोकऽ पड़ल छें ?

एहन मौका पर सभ कें इएह हाल होइत छैक। चुन्नी हँसिकऽ कहलक-हिस आओर अपन दहिना हाथ सँ हमरा बायाँ गाल पर एक चमेटा लगा देलक·········ओही गाँवक चलि गेल। मगर एहि, रिवाजक मुताबिक दुलहा आओर दुलहिन दूनू के एकहि डोली पर चढ़ि कऽ आँगन मे उपस्थित होएबाक चाही।

मालिक हवेली सँ दक्खिन कलम छलैक, ओहि सँ दक्खिन रास्ता। पच्छिमक दिस हमर घर छल। कलमक लग हमरा डोली पर चढ़ि कऽ आइ परल, ओ घुंघट चढ़ौने छल। ओकर हथेली पर अपन आँगुर सँ गोदि कऽ हम खिसिआबक कोशिश कयलहुं परंच ओ तऽ कनेको नहि लजबगायल, कठुआ गेल छल।

सभ स्त्रीक जनानी गीत गाबए लागल। मोट आओर मेहीं, शंख सन भोंपुक आवाज सभ मिलि कऽ अजीब रंग अनैत रहए।

आँगनक मुंह पर पालकी राखल गेलैक। तेल-बाती जरा कऽ काछुक खपरि मे राखि कऽ दीप बना लेने रहए। परिछन कें ओ चीज हमरा एखन तक मोन अछि। हमरा दूनूक माथ पर धान छींट कऽ मुंह, बाँहि, छाती ठेहुन सँ दही छुआ क चुमाओन कऽल गेल, बस !

देरी तक जनी जाइत जागल रहए। हमरो छुट्टी भेट गेल रहए। किछु खाऽ कऽ हमहुँ सभ सूति रहल रही, मामा भरिसक देरी तक जागल रहथि। कहारक लेल अपन चुन्नी अपन बथान दय देलकैक। ओ ओतहि अपन आसन जमेलक। ऊपर चार तऽ रहबे करैक। पाहुन दूनू नबका मरैया मे ठहराएल गेला। टिकिया, हुक्का आओर पीबाक तम्बाकूक इन्तजाम

रहबे करै। आब-भगतक भार चुन्नीक छोटका भाए पर रहै। गारजियनक काज मनियार कका करैत छलाह। एहन लगैत छल जेना की सौंसे बिरादरी हमरे काज मे जुटल अछि। जुवान भाई मेहमान के मोन बहटऽबैत छलाह—यार, तू दुलहाक बेटा छह ! ओहर नानी हमरा पड़ोसक रहथि···सुसहड़ हमर पड़ोसी रहए······

मेहमान तऽ बउके भऽ गेला, संगे जे आदमी आयल रहैन्ह ओ बजलाह है तऽ आहाँ सभहक देहो सँ ओकाक गन्ध अबैत अछि···

हुनकर सभहक ई चलिते रहैन्ह आओर एमहर हम खजूरक पटिया पर सूति रहलहुँ।

जनैछी, कतेक राति बितला पर रेबनी हमरा भकभोरि कए हमर निन्न तोरि देलक। शराबी जकाँ गुर्रा कऽ हम ओकर कब्जा पकड़ि कए कहलियैक —की छौ ? भीतर चलु भैया ! बाँहि पकड़ि कऽ रेबनी उठबैत बाजल—जल्दी चलु, उठू माय बजबैत अछि।

नीन्न झोंकि आएल तऽ हम फेर सूति रहलहुँ। रेबनी हारि कऽ घुरि चलि गेल। थोड़ेक काल बाद माए आएल आओर पीठ पर दुलार सँ एक थापड़ धीरे सँ मारलक आओर बाजल उठ बाओ, उठ, भीतर चल।

बिढुआ काटि कऽ, कान मे काठी भोंकि कऽ माय हमरा उठाइये देलक आकाश मे चन्द्रमा नहि छलखिन्ह। आई पंचमी छैक की नहि ? पाँचे घड़ी इजोरीया रहलैक।

कतेक राति बितल होएतैक ? माय सँ पुछलियैक आओर हाफी केलहुं। माय हमरा आगू धकेलैत बाजल—दुपहर राति बीति गेलैक बेटा। हमरा पछिलकाक राति सँ निन्न नहि आएल, पलक पर पसेरी पड़ल अछि तहिना बुझाए ; चल सूति रह। हमहुं सूति रहब······

घर मे धकेल देलक माए। पोआरक सेज पर बोरी ओछाओल रहैक। कनियाँ एक दिन दबकल रहय आओर सुतऽक बहाना केने छल। फाटक कें धकेलि कऽ अन्दर सँ घर के बन्द कऽ देलिऐक।

दीप आगा मे जरैत छलैक, बत्ती काफी तेज छलैक। किरासनक भभक सँ दिमाग भारी भऽ गेल। रानीजी सँ एतबो नहि भेलइन्ह जे बत्ती कम कऽ दितऽथिन्ह!

फेर बेचारी पर दया लागि गेल—फँसा कऽ लेल गेल चिड़ै थे तऽ अछि। दोसरक घर मे की छुबए, की नहि छुबए! केकरा सँ की कहैक किमहर कि देखैक! महीना दू महीना तऽ बेचारी कें अपन बथान पहचानइ मे लागि जएतैक...

खदने दीप आला सँ उतारि लेलहुँ आओर ओकर मुँह खोलइत। बत्ती पर आँगुर देते भुप! मिझा गेलइक साली, धत्त तेरी!

जे सुतऽक नाटक रचने छल ओकरा सँ नहि रहल गेलइक। खिल-खिला कऽ हँऽ लागल......

ढिबरी छोड़ि कऽ हम ओछाउनक दिश गेलहुँ, ठकिया कऽ ओकरा बाँहि मे कसि लेलहुँ तऽ हमर मुँह ओकरा कनपट्टी पर पड़ल। हड़बड़ी मे फुसफुसा कऽ हम बजलहुँ—उपाय तऽ तू इ बढ़ियाँ निकाललए मुदा एतेक जोर सँ हँसब ठीक नहि छलइक, माए आओर रेवनी की कहैत हएतैक अपना मोन मे?

हमरा अन्हार मे अनुभव भेल कि बेचारी लजा कऽ काठ भऽ गेल अछि। चुम्मा लइत हम कहलिऐक—खैर, कोनो बात नहि। कनी दियासलाई कहाँ छैक बता?

ओ उठल। सिरहाना सँ माचीस निकालि कऽ चुपचाप जरौलक, ढिबरीक बाती सँ तीली कें छुआ कऽ फेर ओकरा मिझा कऽ दोसर ठाम फेंक

देलकैक...रोशनी के कम कऽक ढिबरी कें आला पर रखइत छलइक तखन देखलिऐक, मुँह भारी भऽ गेल छलइक। माँटि सँ रगड़िकऽ जखन अपन आँगुर हम साफ कए लेलहुँ तखन उठिकऽ ओकरा अपना लग बैसेलहुँ।

फिकिर कथीक!—हम बजलहुँ—अपना घर मे ऐह दू परानी तऽ छइथ, बाकी हम छी आओर आब तू अएलौ है। तोहर खिलखिलाहटि सुनि कऽ माए बड़ा खुश भेल होएतीक, आई ओकरा मोन सँ चिन्ताक सिल उतरि गेल होएतैक। देखिहैं, बुढ़िया के आई सँ बढ़ियाँ नींद अएतैक। रहल रेवनी से ओ बड़ सुधा छैक। ओ तोहर अहि ढीठपनक कतहु फिकिर नहि करतीक।

आब ओकरा मुँहक स्वाभाविक सुरखी वापस भए गेल छलैक। बात-बातक फरक छैक भैया, एक बात आदमी कें कना दैत छैक आओर दोसर बात ओकरा हँसा दैत छैक। सोलह-सत्रहक बैस, मेहराक्क जाति आओर ससुरारिक पहिला राति—लाज आओर डर के भला की पूछनाई!

हम कहलिएक---घरक नाम तऽ बता। फेर लजा गेल। दोबारा पूछलिएक तऽ नहुँ सँ बाजल—सुगनी।

सुगा तऽ तू छैंहे—ठुड्डी उठा कऽ ओकर मुँह कें अपना दिश कएकऽ हम बजलहुँ—बड़ सुन्दर नाम छौक। हमहुँ अही नाम सँ तोरा कहबौक।

इनकारक तौर पर ओ माथा हिलौलक।

किएक?—हम पुछलिऐक।

कपड़ा कें एक खूँट कें अँगुठा मे लपेटैत बाजल—ई हमर नइहर नहि अछि, एतऽ ओहि नाम सँ बजाएब तऽ सभ हमरा खँउँझाउत।

तऽ असगरे मे सुगनी कहिकऽ बजएबौक, तौंऽ ने मंजूर?

अहि बेर ओ मुस्कुराइत ठोढ़ आओर नचबैत नजरि सँ मंजूरक कएलक।

अहि बीच कएवेर हाफी लए सुफल छल। हम कहलिएक—सुति रहऽ आओर, हँ......ई रहलहु तोहर मुँह......बजावन......

पाँच रुपया जेब सँ निकालि कए ओकरा हाथ पर हम धए देलिएक। जे रिवाज नैहर मे नहि पूरा भेलैक, ओ —आखिर एतए पूरा भेलैक। ओहिराति बाबा जोगदास भांग पिया कए मति गति हमर हरिलेने छलाह। अहि लेल ई रुपया माए हमरा देने छल।

बाप सुगनी के रजाई देने छलइक, हम बेह ओढ़ि कए सुति रहलहुं। बेचारी के अउँघीयो लगैत छलैक आओर बात-बात मे लजा जाइत छल से काल। हम ओकरा सुति रहए देलिऐक। हमर सारी जीवनक ई पहिल मौका छल। ओ हमरा बहुत सजकोटरि आओर शान्त बुझाए पड़ल। बिना माए के पाँच-सात साल बेचारी नहि जानी कोना कटने छल!

०

७

द्विरागमनक बाद हम निश्चय कएलहुं कि गाँव नहि छोरब आओर दूर-वहाम जाऽ क नोकरीओ नहि करब। अहाँ कहब, नब कनियाँक मोह लगैत अछि। हँ, भैया, से तऽ छलैक। झूठ किए कहू जनानी हमरा बड़ गुनमन्ती भेटल।

जहिआ सँ ओ आएल, केना समय बीतऽ लागल, किछु पते नहि चलय। अगिला बैसाख मे हम रेबनी कें बिदा कऽ देलिऐक, माय के दुःख जरूर भेलैक मगर रास्तो तऽ दोसर नहि छलैक। आदमी हमरा बहीन के सेहो बढ़ियाँ भेटल छलैक। ओ पटना मे एक होटल मे काज करैत छलैक पूरान आओर बढ़ियाँ नोकरी छलैक। खाऽ पीबकऽ पाँच रु० महीना बँचैए होइक, रेबनी बहुत कानल छल, माय सेहो। धन्नी काकी बुझेलथिन—जखने बेटी भऽ कऽ जनमलह तखने आब अनका कर्मक संगक नसीब जोरेलह। कैदिन नैहर रहबऽ?

सुगनी माए के एहेन आराम पहुँचावलगलैक जे पूछी नहि। घरक काम कोनो टा ओ बुढ़िया केनहि करऽ देत छलैक। दुपहर मे खाए के पश्चात् आओर रातिकऽ सुतए काल सुगनी मजसी मे तेल लऽकऽ माए के पैर लग बैस जाइ छल, आओर जांतऽ लगैत छलैक। इनार, पर जा कऽ नहा लैत छलैक। घास-गोबर खेत मे देबाक रहितै तऽ अपने दऽअबितै। माए

के काज छलैक मलिकाइनक ओहिठाम जाय गिरहस्थीक छोट-छोट कायकऽ लेब। दुकान सँ सौदा लऽ आनब, खेत सँ साग छिम्मी तोरि आनब, हमरा मजदूरी करैत काल खाएक पहुँचेब।

ओहो सुगनी के बड़ दुलार करए लगलैक। पाई—रुपैया अपने नहि राखए। मलिकाइनक ओहिठाम कोनो बढ़ियो वस्तु हाथ लगइ तऽ असगरे नहि खाए। कनियाँ समय पर खाए, समय पर सुतए। माय के एकर बड़ ध्यान रहैत छलइक।

अपने खेत मे हम सभ काज करऽ जाई छलहुँ। पहिने किछु दिन तक माय सुगनी के खेत मे नहि जाए दैत छलइक। परञ्च पाछु ओ मानि गेल। गरीब के ओहिठाम भइया नखरा-बाजी घूँघट पर प्रथा नहि चलइत छइक। पुतोहु होअए वा बेटी, खेत मे काज करऽ जाइऐ पड़तै; माल चराबय पड़तै। सिंगार पटार मे बरबाद करऽक हेतु समय गरीब घरक स्त्री कें कहाँ भेटतइक भइया? एइथ जातिवला चाहे केहनो गरीब होथु, मुदा हुनका घरक स्त्री रोजी-धंधाक काज मे पुरुषक हाथ नहि बटा सकइत छथि। हुनका ओहिठामक स्त्रीगणक बेकाज बइसल रहैत छइक। जतेक एइथ खानदान होएतइक, ततेक बेसी बेकाज पएतइक। हमर स्त्रीगण सभ मेहनत मजदूरीक दाना खाइत अछि। की हम फूसि कहैत छी भइया?

रेबनी सासुर रहए लागल तऽ अपन तीनू बकरी बेच लेलक, दस रुपइया भेटलइक। चरवाह नहि अछि तऽ आन माल-मवेशीक खातीर नाक पर रहैत अछि। बकरी सब सासो आओर परेशान कए दैत छैक। माझिला मालिकक मारि सुनऽ पड़ल छल एक बेर आब की रेबनी रहए से ओकरा पर नजरि रखैत? दू बकरी रहए, से भइयाँ महराज कें बलि पड़लन्हि। मानल रहैन्ह।

ओहि साल रबीक फसिल खूब बढ़ियाँ भेल। आमो खूब बढ़ियाँ

फड़ल छल। बड़ी बाबू कतेको बगीचाक मालिक छलाह। हुनकर एकटा छोट गाछीक रखवारीक काज हमरा भेट गेल। बिनकऽ माय अंगरैत छल। पच्चीस तीस टा गाछ रहैक, ओहि मे आम्मत गाछ दूइये-तीनटा रहैक बाँकी सभ गाछ क आम बड़ मिट्ठ, रसदार, गुदगर खूब। हँ खूब खेलहुं, बेचबो खूब कएलहुँ। तेसर हिस्सा भेटैत छल। पाँच हजार सँ कम आम हमरा हिस्सा मे नहि पड़ल हाएत, लगभग एक मास रातिकए गाछिए मे सुतलहुँ, लग-पास गाछिये गाछी रहए जाहि मे हमरे जकाँ पच्चीसो रखबार राति-दिन ओगरैत छलो। सद्गोपीक मोन कहियो कहियो डबि जाइत छलैक परञ्च छल तऽ आओर कमाउ जनानी, दिन भरि काज करैति आओर रातिकए खूब तानिकए सुति रहए। एक राति हम रामखेलावन के अपना बदला गाछी मे राखि देलिएक, आओर अपने घर आबि कए सुतलहुं।

हम दुनु परानी मीलि अपना खेत मे मरुआ अढ़ाइ तीन मोन अन्दाज उपजएलहुँ।

धानरोपक समय आबि गेल रहै। हम दू जनक काज करऽ लगलहुँ। मतलब जतेक दू तीन जन करितैक ओतेक हम असगरे करैत छलहुँ। आठ सेर धान बोनि भेटैत छल एक साँझक भोजन सेहो घर पर अबैत छल। चालीस दिन मे अस्सी आदमीक काज कएलहुँ। माए मना करैत रहै दुःखीत परबेह! किएक एतेक खटैत छें बेटा?

जबाब मे हम कनेक हँसि दैत छलहुँ आओर बीड़ी धूकैत अंगना सँ बहरा जइतहुँ।

भादब, आसिन, कातिक आओर आधा अगहन साढ़े तीन मास पहिने ओतऽ कोनो कार्य नहि छलैक। अइ दिन मे किओ पुब भर चलि अबैछ, सिलीगुड़ी, दिनाजपूर, तथा ढाका दिस। किओ कलकत्ता दिस चलि जाइत

तऽ किओ घरे पर अबैत अछि पढ़ल लोक मोथीक पटिआ बुनैछ, सन-साबे की मूलकडोरी बँटैत अछि आने तऽ मांछ मारय बला टापी, गाँज वगैरह तैयार करैछ।

लेकिन हम कतहु नहि जाइत छलहुं बीरी पीबैत छलहुं तथा बाघ गोटी खेलाइत छलहुं। ईमानदार तथा मजबूत काठी छलहुं, एहि सं मास पाछू पाँच-सात जनक बोनि हमरा भेट जाइत छल। हमरा कऽ इ सोरहो छलैक जे बलचनमा खूब मन सं काज करैत अछि। एक जनक तथा अन अछि ओ। कतेक लोक कहइन दीत—गधा अछि, अछिलक छुति नहि छैक। ओहि जन्म तेलीक बरद छल होएत! अच्छा भाइ, हम बरद रही, गधा रही। परंच होरामनक बेइमान तऽ नहि ने छी, काम चोर तऽ नहिने छी, कोढ़ी तऽ नहि ने छी······असल बात ई छै मँथाजे काज करैत काल हम केहनो काज कऽ राखि दैत छलिऐक। जाइ तरहे अपन कार्य करैत छलहुं तहिना दोसरक।

दोसर दिस सं जँ खराब अन्न देल जाइत छल तऽ हम फेरि दैत छलिऐक। मारि तऽ हमरा सं एकदमे नहि सहल जाइत। फुरुफुरुक जो इजुरी हमरा हेतु जहर माहुर अछि।

परंच कहबो-कहिओ झुकइ परैत। आब ओ जमाना नहि जे खाली ईमानदारी सं काज निकलि जाइत। चालाक आर चाँइ समक चालबाजी सँ बचक हेतु चलाक रहब जरूरी भऽ जाइ छैक भैया।

भात, रोटी आ' एक मुट्ठी बथान फाँकि कऽ कोनो तरहेँ गुजर करैत छलइ। माइयो खुशी छल, सुगनी सेहो खुसिये छलै आ' हम तऽ खुशी छलोहेँ एहि तरहेँ गिरहस्तीक तीन बरीख बीति गेल। बीच मे एक बेर बड़ बाढ़ि देल छलै मुदा हमरा लोकनिक खेत नहि दहैल, उपजो जतबा पहिने होइ छल ततबा भेल कएल। मुदा एक बेर बड़ जोर भूकम्प भेलै। ओहि बेर महतमा

गांधी सेहो एलाह, राधा बाबू सोसलिस्ट भऽ गेलाह। हम तखन ई सब किछु नइ बुझिऐ। ई भूइकम्प जे भेलइ से एखनो ओहिना मोन अइ आ' ओकर मोन पड़िते रोइयाँ ठाढ़ भऽ जाइये। माघक मास छलइ। करीब २ बजेक समय। बड़ आसमर्द हुअ लगलइ। हमरा घरक चार हिलऽ लागल। हम पुआर लग बइसल रही हमरे लग चुन्नी ओंघठल छल। हम दूनू गोटे गप्प-सप्प करइत रही। हम तऽ किछु नइ बुझलिऐ मुदा चुन्नी बाप-बाप चिचिआय लागल। इमहर सं मनियार कका चिचिआइत अंगना दिस भागऽ लगलाह।

हम चुन्नी सँ पुछलियै की बात छइ? ओ हमरा मुँह दूसइत कहलक, देखइ नइ छिहिन घर केना हिलइ छइ! जल्दी सं घर सं निकलि जो तहूँ बड़ बुरिबक छें। ई सुनितहि हमर हं ओ हाथ हेरा गेल। चुन्नी अपना घर दिस भागि गेल आ हम अपना घर दिस।

सुगनी भीतर सुतल छल, माए ओकरा जा कऽ बाहर निकालि नेने छलइक। पन्द्रह-बीस मिनट तक घर ओहि प्रकार डोलइत रहलइक। हाथी पर चढ़ने छी कहियो? नहि? अरे, रेलगाड़ी पर तऽ खूब चढ़ने छैने? सोनपुर सँ जे रेलगाड़ी पहलेजा घाट तक जाइत छइक ओ कोन प्रकार डोलइत हिलइत चलइत छइक? बस, सैह बुझि लियऽ। ओहि सँ किछु अधिके भैया।

माय आओर सुगनीक दिल सं बीफिकिर भऽ कऽ हम फेर मनियार काकाक मकानक दिस दौगलहुँ। हुनकर दू घर भीत वाला छलन्हि, दू ठाम भीत मे हल्लुक दरार पड़ि गेल छलैन्ह। बरेरी थोड़ेक अलग भय गेल छलन्हि। भीत के माथे पर सँ। बस, मनियार काकाक एतबे नोकसान भेल छलइन।

खैर, भगवान मालिक छथिन्ह सबहक। हमरा मुँह सं निकलल—कि ओम्हर सँ रामखेलावनक छोटका भाई सुखबा दौड़ल आयल। हाँफैत-हाँफैत ओ बाजल बाबू भाई, मझिला मालिकक इनार पानि फेंक रहल छैक, चलुआ

पानि। आओर मालिक सभ कें कएटा मकान खसि पड़ल रहैन्हि, मरिसक किवी दवियो गेलन्हि······

हम आ सुन्नी दौरलहुँ मालिकक हवेली दिस पहिला बेर पहिने बड़का दिस गेलहुँ एतऽ हाहाकार मचल छल। डिप्टी साहबक नवकी घर वाली ओसर महलक नीचा मे सुतल रहथि। ओही वर्ष हुनकर दुरागमन भेल रहन्हि। निन्न टूटलन्हि तऽ जयमंगलाक मामा कें पैरक आहट सुनि कऽ घरे मे रहि गेलीह। ईटक पुरान दिवाल रहैक भरभराक़ऽ खसलइ से ओकरा नीचा मे पीचा कऽ मरि गेलैक। लोक कहुना ईंटा बाहर हटा कऽ ओकर अचेत देह के बाहर निकाललक। तुलसी चौड़ा लग उत्तर सिरहना मे सुता देल गेलइक। जयमंगला आओर ओकर माय भोकारि पाड़ि कऽ चिचियाय लागल। सब कें ठकमुरिया लागि गेलइ।

महपुराक खान बहादुर कें मकान सेहो खसि पड़ल रहन्हि। बड़ी बाबूक मोटिया घोड़ा दबि कऽ मरि गेल रहैक। गोसाईं पोखरिक उत्तर थोड़ेक दूर हटि कऽ जे मैदान रहैक ओहि मे खाधि भए गेलैक ओहि मे सौरी अमातक बाछी धँसि कऽ मरि गेल रहैक।

हमरा जवार मे बहुत हर्ज भेलइक। दश कोस पश्चिम, सीतामढ़ीक दिस तऽ एक तरहे प्रलये मचि गेल। सैकड़ो जान माल नुकसान भेल, पक्काक मकानक बस्ती पर पहपट पड़ि गेलइक। सरकारी बंगला, पोस्ट आफिस थाना, कचहरी, जहल, अस्पताल, इस्कूल (स्कूल) बेकार भऽ गेलइक। सड़क फाटि गेलइक, सरकारक मानू नाड़िए टूटि गेलइक। जे जहाँ रहए से सभ ओतहि कैद भए गेल। देवी-देवताक मंडिल (मन्दिर) तक साबित नहि बचलइक भैया। आओर की कहू। एमहर सीतामढ़ी ओमहर मुंगेर तक बेसी धक्का पड़लइक।

राजू सरकारो समहरि गेल। सभ दौड़लाह। राजिन्दर बाबूक छिड़ाई भेलन्हि। जवाहरलाल तक भोलन्टियर बनि कऽ सीतामढ़ी आबि गेलाह। बम्बईक सेठ खैराती होटल आबि कऽ खोलि देलकैक। कांग्रेस चन्दाक लेल अपील निकाललक तऽ करीब तीस चालिस हजार रुपैया जमा भए गेलइक।

पानि पीबऽ वाला पानीक स्वाद, सैकड़ो जगह खराप भए गेल रहैक। अजीबे गन्ह अबैत रहैक। पहिने छोट डोड़ सँ माछी नाके जवाब देत छल। जंगली खाधि मे भरि चौमासा घास-फूस, लत्ती-पत्ती नहि जानि की की सड़ैत छल, ओकरा लग सँ आयब तऽ नाक मूँन्दि लेबए पड़त। जूट आओर सोनक पोथा कें पानि मे राखि देत छै। किछु दिनक बाद निकालति छिऐक तऽ ओतहु बड़ विकट गन्ध उठैत छैक···भूचाल (भूकम्प) जहि इनार कें खराप कऽ देने छलइक ओकरो पानि किछु ओहने गन्हाइत छलइक। हाय-हाय मचि गेलइक। सभ सँ जरूरी काज इनार सुखोनाई भए गेलइक।

कांग्रेस जे रिलीफ फण्ड खोललकैक ओकरा तरफ सँ इनार खुनएबाक लेल लाखोक रकम बाँटल गेलइक। हमरा इलाका मे रकम बाँटबाक काज फूल बाबू के हाथ सँ भेलन्हि। एमहर के गाँमक लेल हुनके अफसर बना कऽ पठाल गेल छलन्हि। रामपुर भारी आओर नामवर गाम ठहरल। बाल-बच्चा, स्त्रीगण पुरुख, धनिकगरीब, कुल मिला कऽ दू हजार आदमी करीब छलैक। परंच भूकम्प सँ अहि बस्तीक एको इनार खराब नहि भेल छलैक। कुल बीस इनार छलैक। सुनलहुँ जे कि रिपोट मांगल गेल छलैक, छोटका मालिक आओर बड़ी बाबू, मुन्शी विपिनबिहारीलाल दास सँ राय बात कऽक जिला कांग्रेस कमेटी के लिख देने छलखिन्ह। चारि इनार खराब भए गेलइ आओर बीस एक परिवार एहनो छल रहल होएतैक जेकरा थोड़ बहुत मदैत भेटक चाही।

किएक अपने खसि पड़लैक मकान सभ कें फेर ठाढ़ करक तागत बेचारा सभ के नइ छैक''''''

फुल बाबू मधुबनी सँ टमटम पर अएलाह, सोझे जाकऽ अपन फूकाक घर बतरलाह। कहि देने छी, हमर छोटका मालिक हुनकर फूफा लगैत छथिन्ह।

एक्के दिन ओ हमरा बस्ती मे रहल छलाह, हम जानि-बुझिकऽ हुनका सँ नहि भेटल। मालिक समक बीतए आओर बमनटोली मे एक चक्कर लगौलने छलाह ओ, संग मे ई मोलंटियर रहैन्ह।

जनैत छी, ओहि दिन फुल बाबू हमरा बस्ती मे किछ कए आएल छलाह ?

रिलीफ फन्ड दिस सँ भगवान जानी कतेक रकम अहि गाँमक लेल हुनका भेटल छलैन्ह परञ्च किछु दिनक बाद मुन्शी जीक बेटा सँ जे हमरा पता लागल बेइ आहाँ के बुझा देत छी। अहि सँ अहाँ के एतेक अन्दाज जरूर होयत कि लाखोक ओ रकम लोक सभ मे कोन प्रकार बाँटल गेल होएतैक। लीअ सुनि लिअ भैया :—

१—बधुअन पाठकक नाम पर		६०।	क रकम लिखल छलैक	२०)	भेटलैक।	
२—दामो ठाकुर	,,	४०)	,,	२०)	,,	,,
३—मोसम्मात जानकी	,,	३०)	,,	१५)	,,	,,
४—ताराजनन्द झा	,,	३०)	,,	१५)	,,	,,
५—खोखाई मिसर	,,	२५)	,,	१०)	,,	,,
६—चतुरानन चौधरी	,,	४०)	,,	२०)	,,	,,
७—पचकौड़ी झा	,,	२५)	,,	१०)	,,	,,

			क रकम लिखल छलैक	३)	मिललैक	
८—कैबल्लभ मल्लिक	,,	२५)	,,	१०)	,,	,,
९—धंमीलं झा	,,	२५)	,,	१०)	,,	,,
१० —बचबे मिसर	,,	२५)	,,	१०)	,,	,,
११—मनियार गोप	,,	२५)	,,	८)	,,	,,
१२—छकौड़ी गोप	,,	२५)	,,	८)	,,	,,
१३—कपिलेसर मण्डर	,,	२५)	,,	८)	,,	,,
१४—तीरी अमात	,,	२०)	,,	६)	,,	,,
१५—कझार केवट	,,	२०)	,,	६)	,,	,,
१६—मोसोमात कुरबी	,,	१५)	,,	३)	,,	,,
१७—बुद्धु चमारक नाम पर		१५)	,,	,,	,,	,,
१८—शेख अब्दुल	,,	२५)	,,	८)	,,	,,
१९—करीम बख्श	,,	१५)	,,	३)	,,	,,
२०—मसमात हमीदा	,,	१५)	,,	३)	,,	,,

बुझलहुँ भैया, बीस आदमीक नाम सवा पाँच सौ रुपयाक खैरात लिखल गेलैक परञ्च लोक सभ के भेटलैक सिरिफ दू सौ छ रुपया। ईनार-सुधारक नाम पर एक हजार रुपैया भेटलैक। एक-एक के अलग-अलग बजा कए बाबू आओर दास जी रुपया बंटलन्हि। लोक सभ अकासी आमदनी बूझि कए दसखत कए देलखिन्ह, अँगूठाक छाप दए देल कैक। जेकर जेहन मुँह, जेकर जेहन आवाज, ओकरा ओहिना रकम भेटलैक। हमर मनियार काका चुपचाप लेने छलाह, चुन्नी खैराती रकम लेबक खिलाफ अपन राय प्रगट कए चुकल छल। मालिक हमरा नाए के सेहो पाँच रुपया देबए चाहैत छलाह। पूछऽआएल त हम डाँटि देलिएक। मोसम्मात चुन्नी जुगल कामतिक विधवा स्त्री छलैक, ओकरो खैरात भेटल छलैक। पूछला पर

बाजल बबुआ चाचो, मुदा कप ई की भेलैक, बड़का लोकक वास्ते आमदनीक एक टा आओर रास्ता निकलि गेलैक···

हबुआ छल हाथ मे; घास काटऽ जा रहल छलहुँ। नगीच आबि कए हमरा कानक दिस मुँह कए कऽ फुसफुसाएबऽ ई सभ जुलुम करैत छथि बेटा, देत छथिन्ह दू और कागज पर चढ़बैत छथिन्ह दस। इमान-धरम हिनका सभ के डूबि गेलैन्ह, तेल जरैक तेलीक आओर कटैक मशालचीक। छोटका मालिकक सरबेटा आएल छल अफसर बनिकए कैरात बाँटए। हुअए नहि हुअए, हजार पाँच सौ ओ जरूर मारि लेने होएतैक···पता लगबिहें बेटा हमरा नाम के रुपया चढ़ल अछि।

चाची कहाँके भेटल बतैक? हबुके हाथ सँ छाती ठोकि कए कुन्ती बाजल—हाय गोसंइयाँ तीने तऽ भेटल अछि।

हमरा ताबे तक कोनो खास बात सोभाक बारे मे कहीं पता लागि सकल छल। मुड़ी हिलबैत हम ओहि अनाथक दिस आँखि फाड़ि-फाड़िक देखए लगलहुँ। छन भरिक बाद बजलहुँ— जाए दीऔक चाची, की होअएत आब पता लगा कए? राकसक पेट मे जे गेल से गेल।

फूल बाबू के एहि बात सँ हमरा आओर घृणा भऽ गेल। कांग्रेसक विषय मे सोचऽ लगलहुँ जे स्वराज भेलाक पश्चात् बाबू-भैया सब अपना मे दही-माछ बंटताह, जे सब एखन मालिक बनल छथि सेह सब ने मिसरिया माल उरौताह। हमरा सबहक हिस्सा मे तऽ सिट्ठी परतैक।

राधा बाबू पर श्रद्धा बढ़ि गेल किएक तऽ ओ सोसलिस्ट भय गेलाह। बरहमपूरा मे जाइतऽ चारि दिन हम हुनका संगे लेहो एहि बीच रहि आएल छलहुँ। ओतेक पैघ लीडर सँ बातचीत मला हम की करितहुँ, परञ्च देखलहुँ जे आब ओ धोती-कमीज पहिरए लगलाह अछि, दाढ़ी सेहर दिन पर बढ़ऽ

लगलथि अछि। सूनलिऐक जे आसरम छोरिक शहरे मे डेरा जमओताह। एकलाल किछु समझदार छल; आब बरह राधा बाबूक संग रहैछ। ओकरहिं सँ पता चलल जे कांग्रेसक अन्दरे हीनका समक गुट छैन। एहि दल मे बूढ़ लीडर नहि छैक, सभ युबके छैक। गाँधी महात्मा सँ कोन बात मे सोसलिस्ट मेल नहि रखैछ? अंग्रेजराज ने कांग्रेसे चाहैछ ने सोसलिस्टे। परंच गाँधी महात्मा कल कारखानाक विरुद्ध छथि। ओ एकरो खिलाफ छथि जे सेठ जमीनदार, राजामहराजाक जमीन-जयदाद, धन-संपत्ति के छीन कऽ अन्य लोक मे बाँटि देल जाइ। बूंद भरि लहू नहि ओ बहबऽ चाहैथ। मारि खाएब ठीक मारब नहि ठीक अछि। दबिकऽ-झुकिकऽ जेना होए तेना अपन बात बनाबी। सचाइ पर रहब तथा अपना मांग पर तऽ एक दिन जालिमक मोन अवश्य पिघल तैक···गाँधी महतमा नुकसान ककरो नहि चाहैत छथाह ने गरीबे के ने धनीकहिक। ओ अंग्रेज सँ सेहो कराइ बातो नहि करथिन। हुनकर कहब छलैन जे एक दिन अंग्रेजक मति फिरि जओतैक, तखन ओ अपनहि ई देश छोड़ि चल जएताह, हुनका अधिक परेशान नहि करिअउन।

एहि, पर भैया सोसलिस्टक की कहब? हुनकर कहब ई रहैन जे दू चारिटा साधू महतमा के कलपला सँ अंग्रेजक हृदय कथमपि नहि घमतैक। सभ सँ जनता जखन भेद भाव छोरिकऽ ठार होएतैक तखने अंग्रेज हटत। पांच जनता आपसी भेद भाव कोना छोरत कोना कऽ एक होएत? लोक के जखन विश्वास भऽ जएतैक जे जमींदार महाजनक फाजिल धन ओकरहि भेटतैक तखन रोटीक प्रश्न तऽ रहिनइ जएतैक। बालबच्चाक पढ़ाइ-लिखाइ······ पढ़ाबक फिकिर···खान पान तथा रहन सहनक ठौर ठिकाना···दवाइदारु पथ पानिक इंतिजाम···एहि सभक हेतु सबटा हल्लुक भऽ जएतैक, दरभंगाक महराज होथि या पटनाक लाट साहेब—मुफ्त मे अन्न किनकहु नहि

भेटतैन...सभ काज करब आओर सभ दाम पाओत...तुलह अपछु, बुइ बेकार सभक जिम्मेवारी सरकार के उठबऽ परतैक, पाइक बल पर कियो ककरो खरिदुआ गुलाम नहि बनतैक—सोसलिस्ट भाई, जकर हर-फार तकर धरती ! जकर हुनर जकर हाथ तकर कल-कारखाना !

रूपलाल कहलक—हँ बालचन्द कमाय वाला खाएत...एकर चलते जे होब !

सोसलिस्टक विषय मे ओहि दिन जे किछु हम बुझलिऐक एखन ओतबहि सँ हमर हृदय उछलऽ लागल ! कहू ने भैया केहन बढ़ियाँ गप छलै। फूल बाबू पटना मे एक बेर नून बनाबऽ काल खूब पिटाएल रहथि, तैओ गाँधी महतमाक पंथक गप हमरा बूझऽ मे नहि आएल। एहि तरहे अहूँ पिटाइते बेदम भऽ जाएब, परञ्च एको बात बुझऽ मे नहि आएत।

राधा बाबूक एहन सभ, बात विचार मे जे फेर फार भेलैन अछि ओहि सँ ओ हुनकर स्त्रीओ खुशी बूझि पड़ैत छलीह। घर आबऽ लगलहुँ तऽ बाबू कहलनि—की करैत छें गाँव मे बैसि क ?

बामा हाथ सँ ओ हमरा दहिना कान कें नहू नहू मलऽ लगलाह। हम लजाकऽ ठाढ़ भऽ गेलहुँ। छन भरिक बाद ओ कहला—दू मासक पश्चात हम महपुरा आयबाक खबरि देबौक तऽ जरूर भेंट करिहें। हमरा सँ हम हुनका कहि चलि अयलहुँ।

ओही मास गाँधी महतमाक अबाइ रहनि। हम चुन्नी तथा रामखेलावन हुनकर दरशन करऽ मधुबनी पहुँचलहुँ। भारी मेला छल पचास हजार लोक आयल रहथि महतमा के देखऽ। फूल-फल, केरा, अररनेबा (पपीता), हाथक काटल सूत, सुगन्धित धानक गाछ, सजमनि, भंटा······चढ़ाबक हेतु नइ कहि कोन-कोन किसीमक चीज वस्तु लोक लायल रहऽ। खद्दर भंडारक

लगक मैदान मे ऊँच जगह बनाएल गेल रहैक, ओही पर गांधीजी बैसल रहथि। हम सीसोक गाछ पर चढ़लहुँ तखने हुनका भरि आँखि देखलहुँ। रमखेलौना गाछ पर नहि चढ़य जनैत छल तेँ ओ उचकि-उचकि कऽ हुनका देखनि आओर अपनहि पर तमसाए। परञ्च एहि मे हमर कोन कसूर छल पलथा मारि कऽ बैसल छलाह महतमा हुनकर बोली हमरा कान तक नहि पहुँचैत छल। दहिना हाथ उठा-उठाकऽ अवश्ये किछु बेर-बेर बुझबैत छलाखिन, से साफ देखाइ दैत रहै।

घर अबैत अबैत राति भऽ गेल रहै। माय खाऽकऽ सुति रहल छल, सुगनी हमर बाट तकैत छल। एहिना होइ छल। लाखो समझाबी बुझाबी पर ओ एहि बात हेतु राजी कहाँ रहय जे खाय पीबाक हेतु हमर बाट नहि ताकै जरकाला तऽ खोंहे भात ठिठुरिक चाउर भऽ गेल रहै।

खाऽपीकऽ निचेन भेलहुँ तऽ सुगनी के सेहो गाँधी महतमाक विषय मे बुझौलिऐक। ओकरे ने ठहरल। ओरी भरि यदि कोनो नव विषय बुझाए तऽ ओहि मे सँ खोंटि कऽ बेचारीक कान मे जरूर खोंटि कऽ प देबाक चाहिऐक, की विचार अहाँ कें ?

पछिला बैसाख मे छोटकी मलिकाइनक बेटा कें उपनयन भेल रहैन। खूब भोज भात खूब रमन चमन। हम और कक्षर दुनू गोटे मिलि कऽ आमक एकटा गाछ कटलहुँ ओहि मे दू तीनटा डारि एलैक फारि कऽ हम ढेरी लगा देलहुँ बीस पचीस मन सँ कम नहि छल होएतै। मालिकक घराना रहैक। काज परोजनक दिन छलइ। मालिक असगर मे हमरा सँ माफी मांगि लेलनि। ओहि वर्ष हमरा बहीनक संग ओहन व्यवहार कएलनि ओहि सँ हमर मोन फारि देने रहथि। कोन मुँह सँ अपराधी हमरा सँ क्षमा मँगलक से तऽ दंग रहि गेलहुँ। मलिकाइन पर हमरा ओतेक क्रोध नहि आएल जतेक

एहि पलिंग पर······उपनैनक दिन हमरा गुलाबी रंग सँ रंगल दूटा धोती हमरा मलिकाइनक हाथ सँ प्राप्त भेल। माय कें बारह हाथक साड़ी भेटलैक सोलह टा तऽ खागरे मरल रहैक। चारिटा खत्मी पीटल गेल रहै। चारि दिन तक ओ हवेली महुआइने महकइत रहै। भगवतीक पिंडक सामने देवाल पर खूनक फुहाराक चिह्न तो एखनो तक देखबहक। हमर सिरहुतिया ब्राह्मण के जे उपाय रहैन्ह तऽ बेटाक उपनयन खूब धुन-धाम सँ करै छथि। ढोल डाक, रसनचौकी, नटुआ, रंडीक नाच, कीर्तन, थियटर, भेंड़ाक लड़ाइ अर्थो पंडित सभहक साश्तरार्थ (शास्त्रार्थ) ''की नहि होइत छैक? सभ होइत छइक भैया। सभ सम्बन्धी बजाओल जाइत छथिन्ह, सम्बन्धक स्त्री सभ के सेहो लिआउन होइत छइक। गामक दिस कहियो-कहियो पड़ोसी गाम सभहक बिरादरी के मँगाओल जाइत छैक। छोटका जातिवालाक कर्म मे हुनकर बड़ऽ आओर वांचल खुचल या अंसिये पड़इत छनिह। एसो बएह भेलैक अछि भैया।

फूल बाबू आब भाड़ी लिडर भऽ गेल छलाह, साइकिल सँ अएलाह, मँड़वा पर थोड़ेक काल बैस कऽ जनेउक (उपनयनक) रसम रिवाज देखेत रहलाह आओर उठलाह तऽ घेर-घेर कऽ मलिकाइन असखें करएलखिन्ह।

फेर ओ लगले चलि गेलाह। हुनकर माय के लिआवन भेल छलन्हि। ओ पाँच छः दिन रहल छलखिन्ह।

किछु आओर खेत हम बँटाई पर लेने छलहुँ। फूदन मिसरक विधवा जानकी अपन उपजाऊ जमीनक एक भाग हमरा बँटाई पर दऽ देलन्हि। ई चारि कट्ठा जमीन छलैक। जहिया सँ मिसर मरलाह तहिये सँ छकौरी चाचा अहि खेत कें उपजबैत आयल छलाह। सूखल होइक चाहे महीनो भरि मेघ बरसैक, ई जमीन कहियो धोखा नहि दैत छलैक। कट्ठा मोन धान होइते छलैक, समय साल अगर बढ़िया भेलैक त फेर पूछु नै, तखन तँ आठ मोन सँ कम उपजिते नहि छलैक। मगर दू-तीन बरख सँ ई छकौड़ी चाचा सँ सम्हरि नहि रहल छलैन्ह। दू जवान लड़का बंगाल मे नौकरी पर छलन्हि। काज चलबक जोग रुपया पठबैत रहैत छलन्हि। अपन उमर सत्तर पार कए गेल छलन्हि बेचारे कए बेर रास्ता छेंकि कऽ हमरा कहलन्हि तऽ हम तैयार भए गेलहुँ बात ई छलैक कि हमर बाप गाढ़ समय पर छकौड़ी के काज आयल छलखिन्ह। गाय बाँधल छलैक। सावनक मास, राढ़क समय। करैत आबि कए बेचारी के डसि गेलैक। जहर नस-नसमे पसरऽ लगलैक, गाय रहि-रहि उठैत छलइक। छकौड़ी ताड़ी पीकए ओहि दिन बेहोश पड़ल छल। स्त्री बाल-बच्चा लए कए नइहर गेल छलैक, माएक सराध मे······ भोर होइते-होइते अभागल जीवक प्रान छूटि गेलैक। छकौड़ी के गौवधक परासचित लगलैक। बेह पण्डित बबुअन का पचास-रुपया लेलखिन्ह तखन जाए कए पतिया लिखल गेलैक। सिमरिया घाट (गंगा) जाए पड़लैक, मथ टीक केश कटबऽ पड़लैक, बालु-गोबर खाए पड़लैक, दान-दछिना करबए पड़लैक, घर लौट कए सतनरायण भगवानक कथा सुनलैन्ह। बिरादरी आओर समाज के तखन जाए कऽ छकौड़ीक छुअल पान-परसाद गरहाज (ग्राह्य) भेलैक। आओर भैया, हमर बाप एहन समय पर सँ टाका नहि देने होयतैक तऽ छकौड़ी चाचा रामपुर छोड़ि-छाड़ि कऽ भागि गेल रहितथि। बाबू हमर ढाका सँ दू साल पर आएल छलाह। छकौड़ी आबि कऽ हुनका पैर पर खसि पड़लैन्ह आओर कनैत बजलन्हि—लालचन, जे चाहऽ से लिखबा लिहऽ। नहि तँ करीहऽ नहि तऽ कपार फोड़ि लेब आओर मरि जाएब, तोरे सामने। चलिकऽ अहि पाप सँ हमर उद्धार कए देहु।... बाबू चुपचाप भीतर अएलखिन्ह, सैय टा रुपैया लए कऽ ओकरा हाथ पर

देलखिन्ह—दादीक मुँह सँ ई सभ हम सुनने छी। से छओड़ी आब ओही उपकारक बदला चुका कऽ अपन माथा के हल्लुक कए लेलन्हि। ओना ई कर्जा ओ हमरा बाबू के जीबिते जी चुकता कए देने छलखिन्ह।

पाँच कट्ठा खेत वामी ठाकुरक हमरा पास ओहिना आबि गेल छल। बटाइयो लोक ओही खेतिहरके देबए पसन्द करैत अछि जे मेहनती आओर ईमानदार होइक। ठाकुर गाँम मे आ ल पाछू छ ओ महीना नहि रहैत छथि। घर वाली नइहर गेल छलैन्ह, ओतऽ हैजा फैललैक तऽ ओकरे लपेट मे आबि गेलैक बेचारी। दस सालक एक बेटा छलैन्ह ओकरा कतऽ-कतऽ लेत फिरतथिन्ह? हारिकऽ ओकरो ममिहाल मे छोड़ि एलखिन्ह। जमीन जाल मानूलिए छलैन्ह। इएह पाँच कट्ठा मिड्डा खेत, घर-आँगन-बाड़ी, बंसबारि, कलकतिया के छ-सात गाछ, बस। लोक कहैत छन्हि, ठाकुर दारूओ पीबैत छलाह। हम कहियो नहि देखलिअन्हि, हँ भांग ओ जरूर पीबैत छलाह। एकबेर की दिन मे दू-दू बेर।

हमरा घर खूब खुशी छलाह। पाछू चालिकए अपन घर-आँगनक रख-बारीक भार हमरे देलखिन्ह। बाहर सँ अबितथि तऽ हमरा लेल कमीज-कुर्ता या बनियानि जरूर लबितथि। एक बेर हम कहलिअन्हि—ई की देत छी मालिक, धोती दीअ।

पहिरल के छुबि कऽ बजलाह—गाढ़ रंगक ई तऽ हमरा पसन्द आयत नहि तक फेर सादा निकालि कए राखब, तऽ लीहऽ काल्हि।

अगिला दिन फस्ट किलासक एक धोती ठाकुर देलन्हि तऽ हमर बाँहि फुलि गेल, मोने-मोन बजलहुँ—एँ एहन बढ़िआँ धोती पहिर कऽ तू निकलबेँ?

ओ हमरा छूट दए देने छलाह—चाहे जेतेक बाँस काटि लिऔक मुदा अपने मतलब के दोसरक लेल नहि, आओर ने बेचए बलाक लेल! हमहूँ साल

भरि मे मुश्किल सँ चारि-पाँच सँ बेसी बाँस कटैत रहल होएबैक।

उपजक अपन हिस्सा ओ नगदे लेनाइ पसन्द करैत छलाह।

राधाबाबूक खबरि लए कऽ एक दिन महपुरा सँ एक बूढ़ पासी आएल तऽ हम ओतए गेलहुँ। ओहि बस्तीक डाक्टर रहमान इलाका भरि मे मशहूर छलाह। राधाबाबू हुनके ओतए ठहरल छलाह।

जमींदार खान बहादुर साहुल्ला खाँ छलाह। रैयत हिंदू-मुसलमान सभ जातिक छलैक। आठ-दस मौजेक मालगुजारी अबैत छलैक। ओ खुद ढाई तीन सौ बीघा रखने छलाह, बाकी हजारो बीघा जमीन मनखप लागल छलैन्ह। मनखप बुझलिएक भैया? नहि? अरे भाई, उपजक सोलहम-बीसम या दसम हिस्सा मालिक वसूल करैत छथिन्ह।

महपुरा के छोट औकातक तीन सैय खेतिहर खान बहादुरक हजार बीघा जमीन पुस्त-दर पुस्त सँ हुंडा जोतैत आएल छलाह। आब काँग्रेसी अमल (शासन) आबए बला छलैक। तरह-तरहक अफवाह फैलैत छलै। खान बहादुर पहिने सँ चौकन्ना भए गेल छलाह। ओ अइ कोशिश मे लगलथि कि एकक ओतक खेत दोसरक नाम सँ बन्दोबस्त होइत चलि जाई। गुपचुप चारि छ बन्दोबस्त भइयो गेल छलैक।

खेतिहर सभ मे कुनमुनाहट आएलैक। हुनके दिस सँ डा० रहमान जिलाक काँग्रेसी लीडर सभ के पास पहुँचलाह। मुदा महतमा जीक चेला लोक उनटे रहमान साहेब केँ शांति आर संतोषक शर्बत पिया कऽ चुप बैस रहलाह। एम्हर खान बहादुर नहि बैसल रहलाह, भीतरे-भीतर जमींदारी दाँव-पेंच इनकर बढ़ि गेलन्हि। गरीब-किसानक ई जमीन अपना-अपना नाम चुप-चाप लिखा लै छलाह? बड़का-मझिला किसान जे अकसर हमरा दिश के बाभन भूमिहार, शेख आओर धूंजी महाजन होइत छलाह—येह इहएए

चाहैत चलखिन्ह गरीब समहक मुट्ठी दू मुट्ठी भात कें। डाक्टर रहमान कहाँ
तक बेलल रहितथि, गरीब लोक हुनका केना छोड़ऽ दितैन्ह राधा बाबूक संग हुन-
कर पटना कम्प जहलक दोस्त छलेन्ह। पहुँचलाह सीधे हुनका पास! आहि
दिन सोसलिस्ट सभ मे बड़ गर्मी छलैक मैया। ओ जे किछु कहैत छलखिन्ह
ओकरा करक कोशिश हुनका दिस सँ होइत छलैन्ह। मजदूरक हड़ताल
होइक चाहे किसान सभहक आन्दोलन—सोसलिस्ट भाई ओहि मे आगू बढ़ि
कऽ हिस्सा लैत छलाह। से, राधा बाबू डाक्टर रहमानक बात मोन लगाकऽ
सुनलखिन्ह आ खान बहादुरक खिलाफ लड़ाई शुरु करक रास्ता बता देल-
खिन्ह। किसान सभहक संगठन अखबारे मे जमींदारक जाली कागज
प्रचार, कम सँ कम पच्चास मोर्लीडियर सभहक बहाली; बीस-पच्चीस मोन
अनाज आओर तेंय टा रुपैया, इलाका भरिक किसानक एक भारी मीटिंग···
डाक्टर रहमान महदूरा घूमि अयलाह आओर किसान सभ के सभ किछु
बुझा देलखिन्ह। लोक सगले राजी भए गेलैक! ओहि जालिम जमींदारक
मुकाबला असगरे तऽ कियो कए नहि सकैत छलैक? ओकरा पीठ पर
थानाक दरोगा साहेब छलखिन्ह, दरभंगाक कलक्टर साहेब छलखिन्ह, इलाका
भरि के जमींदार, पण्डित आओर मौलवी सभ—खान बहादुरक पच्छ मे छल-
खिन्ह। पच्छिमक दस लठैत जवान, नेपालक पाँच खुखरी बहादुर······
एक ताकतवर छल—खान बहादुर। असगरे कें ओकरा सँ भिड़िवैक!
परञ्च तेंय टा लाठी एक ठाम भऽ जाइक तऽ ओकर एक भारी बोझ बनि
जाइत छैक। अपन-अपन घरदीक हिफाजतक लेल किसान एक होअए
लगलाह। पहिने हुनका दिस सँ रहमान साहेब जमींदार के कए बेर बुझा
चुकल छलखिन्ह, आब कोनो रास्ता नहि छलैक। रैयत समतयकऽ लेलकैक
कि लाश खसए तऽ खसए, मगर अपन खेत दोसरक दखल मे नहि जाए देबैक।

किसान क दिस सँ बहुत अधिक बेआरी भऽ चुकल रहैत ओ इलाका
भरि मे नोटिस बाँटि गेल रहैक। राधाबाबू मिटिंग सँ दुइ दिन पहिनहि
आबि गेलाह।

हमरा देखितहि बजलाह—एहि बेर हमरो बहुतक खिचड़ि खाय परत।

एतेक कहि राधा बाबू मुस्कुरेलाह आओर नजरि मारि कऽ एक टा मौह
गर आदमी दिस हमर ध्यान खिचलनि। फेर कहलखिन—ई रहल
बलचनमा रहमान साहेब एकर नाम लीखि लिऔक स्वयंसेवक मे।

खादी क उज्जर पैजामा, चरिखाना कमीज। मोंछ रहैक परंच दाढ़ी
साफ। केश औंठिया रहैक। ओहि समय हुनका हाथ मे कनेखाक रहै,
पैखाना जाइ छलाह होएत। खूब हँसिकऽ आस-पास मे सोरमचा कऽ कहलनि
की लीखि दिऔक नाम?

कहि तऽ देलहुँ एक बेर—चश्मा खोजैत राधाबाबू हाथ मे लैत बजलाह
जाव पोखरि दिस सँ भऽ आउ तखन। धोतीक कोंछ सँ ओ चश्मा साफ
कएलनि, ओकरा नाक पर बैसबैत बजलाह—तीन दिन तक तोरा हम अपनहि
संगे रखबौक, फेर छुट्टी। जो आश्रम देखि आ।

तऽ की एतहु आश्रम छैक? हम चौंकिके एम्हर-ओम्हर देखऽ लगलहुँ।
पास परोस मे साफ सुथरा मकान रहैक। छोट-छोट। रास्ता पर दुइ तीन
जगह मुर्गी देखाइ देलक, दू एक मुर्गीओ छलैक। कनीक हटिकऽ भीतक
ओहि कात कारी कुतिया पीयर हड्डी चिबबैत छल। बथान पर नादि मे
चारि टा मस्त बरद मुँह लगौने भूसा सानी खाइ छल। दोसर दिस गोला
रंगक घोड़ी बान्हल छल। भूसीक ढेरी दू एक टा हर। बैसक मे दुइ गोट
कुर्सी। एक टा साधारण अलमीरा बन्द। तख्ता पर दबाइक गोली भरल
किछु शीशी, रबरक नाली (आला) आओर उज्जर डिब्बा खूँटी मे टाँगल छलैक

भैया आखिर डाक्टरक बैठकखाना छलैक कीने ? अपन-अपन ओजार ककराघर नहि रहै छैक ?

जे हमरा घर सं बजाय अनने छल, वएह लऽ अनलक अछि आसरम दिस। गाँवक एकदम बाहर, बगीचाक लग।

दूरे सँ देखलिऐक जे बाँसक छोर पर झंडा फहराइत रहैक। लग जाकऽ नजरि ऊपर कऽ कऽ देखलहुँ तऽ लालझंडा पर दूइ हथिआरक चिन्ह देखाइ परै लागल— एकटा निशान छलै हँसू आओर दोसर हथौरीक...हँसुआक सूल पेट पर हथौरीक माथा।

आश्रम की छलै, फूस घासक टेम्परेरी झोपड़ी रहैक! खाकी जंधिया आओर लाल हाफ कमीज पहिरने दूइ टा नवजवान बैसल रहै। ईटक चुल्हा माँटिक हाड़ी मानेस बनैत छलै खुद-बुद खद्-बद खुदबुद, खदबद। बूढ़ ब्राह्मण बापक बिना बेटी जंगा आमक सुखाएल डारि, फाटल सुखाएल बाँसक संग जरैत रहै ओकर धुआँ सेहो ओहने कड़ा रहैक।

स्वयंसेवक भइया सं बरी कालतक बात करैत छलहुँ। हुनका संगे हम जहिवए हिलि मिली गेलहुँ। बो रोजी रोटीक लड़ाई मे बहादुर छलाह। सोसलिस्ट पार्टी हुनका दरभंगा पठओने रहइन। हमरे जेंका ओहो सब गरीब माय-बापक पूत छलैक। एकटा ब्राह्मण दोसर गोआर। अवस्थी पतैक हमर ओहिसँ कम ओकर सभक नहि छलै। ओकरा मे ओतऽ जाति-पाँतिक भेद-भाव नहि छलै। एकक नाम दिनेश छलै दोसर के सूरजा। दिनेश हमरा चूरा फाँकऽ क हेतु देलक आ कहलक—भूख लागल होएतौक कामरेड! धऽ ले ताबे तक पेट मे किछु।

कामरेड—ई शब्द तऽ हम कहियो सुननहुँ नहि छलिऐक। ताजक खातिर ओहि दिन ओकर मतलब हम बुझि नहि सकलहुँ, परंच दू दिनक बाद पता चलल जे कामरेडक मतलब छइक लड़ाइक साथी। एके मोर्चाक दू फौजी जवान एक दोसर के कामरेड कहिक शोर करैए। अपना इलकक हेतु लड़ऽ बला हमरा गरीबक लेल कामरेड सं बेशी कोनो लबज (लफ्ज) नहि अछि।

थोड़ेक कालक बाद हम राधा बाबू लग घूरि चलि अएलहुं। हुनकर धोती कमीज के साबून लगाकऽ खींच देलिऐन। बाहर कपड़ा पसारिते रही कि इम्हर भोजन हाजिर भऽ गेल। बरहमपुरा आश्रम मे केवेको मास रहि चुकल रही, मुसलमानक संगखाइ मे परहेज तऽ नहि रहै मुदा डर रहै जे कोनो बेरादरी देखि लेलक आओर इ खबरि गाँव घर मे पहुँचि जाएत, आओर एकटा बखेरा बेकारे उठि जाएत। दँ–थारी पठाकऽ बैठकखानाक अन्दर बला कोठली मे चलि गेलहुँ, ओतहि खएलहुं खेसारीक दालि आओर भात रहैक, तरकारी छलैक रामझिमनी (तोरइ) क। भइया मुसलमानक ओहि ठाम जेहन मानस होइ छइक तेहन कतहु ने।

माय के खबरि देबक हेतु छुट्टी मंगलहुं तऽ बाबू कहलथि :—हँ ! हम जनैत छी जे तू ककरा खबरि करऽ लेल छुट्टी मंगै छे। हम लजा गेलहुँ आओर आँखि नीचा कऽकऽ बिदा भऽ गेलहुँ अपना गाँव दिस।

८

मीटिंग मे चारि सौ के करीब लोक आएल रहथि। आजुक सन बला मैदान मे सभा भइये नहि सकै छए, बगीचो मे नहि। खान बहादुरक मनेजर ओतऽ एहन सभा पर अपना कटैत सभके जमा कऽ देलकैक। आब की छलऽ की आब मीटिंग नहि होएतैक। नहि, भेलइ। आओर शानदार मिटिंग भेलैक।

अधेड़ उमरक एकटा आदमी लोक के ललकारि कँ कहलकैक—ओ अछि हमर खेत, पाँच कट्ठाक टुकरा छैक। ओहि मे मड़ुआक गाछ लहलहा रहल छैक...आउ भइया, ओतहि मिटिंग होयत। आउ मड़ुआक काटिकऽ ओतहि बैस-बाक जगह बना लइत छी...बिजलीक फुर्ती सँ ओ आगू बढ़ल। देखिते-देखिते पचीस-तीस टा हँसुओ आबि गेल आओर लोक गाछ काटए लगलैक। किसान मे भारी जोश उमरि गेलै। आध घंटाक अन्दर समूचा खेत साफ भऽ गेलै। बीचोबीच तख्तपोश धऽकऽ लीडरक लेल जगह बनाएल गेलै आओर मिटिंग के कार्य शुरू भऽ गेल।

भैआ ओ कोन आदमी रहै जे अपन हरियरे फसिल बरबाद कऽकऽ मिटिंग हेतु जगह बनौलक?

ओकर नाम लतीफ छलै। मेहनती, गरीब आओर ईमानदार। कुल डेढ़ बीघा जमीन ओ जोतै। पैघ-पैघ नेताक त्याग तपस्याक खिस्सा तँ सुनने होएबह, परंच मड़ुआक गरीब किसान के एहि त्याग के भला कोन चर्चा देबहक? हरिअर फसिल कटबाक समय हमर तऽ आँखि छल-छला गेल भैया! हम तऽ सपनो मे एहि तरीकाक गप नहि सोचि सकै छलहुँ।

लीडर पाँच गोटे आएल रहथि। पटना सँ स्वामी जी, गया सँ शर्माजी, मुजफ्फरपुर सँ मिसिरजी, कतहु के एक टा आओर बाबू छलाह, समस्तीपुरक गंगा बाबू आओर राधा बाबू। स्वामीजी खूब कद के कनीक पिंडश्याम रंगक आदमी छलाह। कपड़ा गेरुआ रंगक रंगल। बा तऽ लाल एना बुझाइत मानू जापड़ मे मकइक लावा फुटि रहल हो।

भोजन फल, दूध बस। हुनका लेल पाँच सेर दूध पाकल केरा एक घौर आओर पथिआ भरि संतोला-नेबू आएल रहैक। खाइतो खूब रहथि भोगिदर बुझिलिअ। खाय बेसला तऽ एके बेर पतेक संतोला खाऽ गेलाह जे सामने मे सीठी और छीलकाक ढेरी भरि छाती लागि गेल। मुदा, मीटिंग मे स्वामी जी चिचियला सेहो खूब। मय खान बहादुर, मय दरोगा जी, मय एस॰ डी॰ ओ॰, मय कलट्टर जी सभ के ललकारलखिन्ह। महाराज बहादुर के एहन रगड़लकन्हि, की बताउ। सरकार के सेहो खूब छीछालेदर केलखीन्ह स्वामीजी। पटना सँ दूटा अफसर रिपोर्ट लेबए आएल छलैक, ओ स्वामीजी के लेकचरक एक-एक अच्छर लिखैत छलाह—खान बहादुरक बैठकी सँ हुनकालेल टेबुल आएल छलैन्ह। हुनके लेल किएक, दू कुर्सी आओर एक टूल (स्टूल) आओर सेहो मंगवाओल गेल छलैक। कुरसी सभ पर एस॰ डी॰ ओ॰ आओर डिप्टी मजिस्ट्रेट बैसल छलाह, टूल पर खलोलीक दरोगा जी।

स्वामी जी किसान सभ सँ कहलखिन्ह—"बाहरी लीडर सभ के भरोसे नहि रहू, अपन नेता अपने खुद बनू। मंगनी आओर उधार के बाहरी नेता

बहुत देखलहुँ, मगर किछु भेलइ-सेलइ नहि। मानलहुँ कि नेता पढ़ल-लिखल होइत छथि आओर अहाँ अपढ़-अनजान छी, परन्च गहुम-चाउर, दूध-घी, तिलहन-तूर सभ किछु अपने उपजबैत छी, लीडर लोक तऽ अहाँक कमाइक हलुआ खाए कऽ लेक्चर देबऽ आबैत छथि आओर अपन दिमाग व पेटक बदहजमी मेटबैत छथि। अहाँ अपन अकिल सँ एतेक तऽ जनिते छीएक कि लेक्चर चाहे लाख देल जाइक, हुनका सँ ने एक दाना चाउर उपजाओल होइत छन्हि, ने गहुँम आओर ने घीये दूध। लेक्चर सुनि कऽ भूख-प्यास नहि मिटैत छैक। अहाँ सभ लीडर सभ सँ लाख गुना बढ़ियाँ छी। अहाँ सभ किछु उपजबैत छी तऽ अपन लीडर सेहो अपने ओहिठाम पैदा करू। जे अहाँक आदमी होएत सैह अहाँक तकलीफ के बूझत, जाके पैर न फटी बिवाई से की जाने पीर पराई।.........काँग्रेस अहाँक दुःख दर्द की बूझत? ओ खादी पहिर कऽ आओर गर मे माला पहिर कऽ जमींदार सभ के जहल पठए-बाक नाटक करैत अछि। पाछू जहल सँ निकलल सैह जमींदार काँग्रेसी अहाँ सभ के शांति आओर संतोषक पाठ सिखबैत फिरैत छथि......खबर्दार! भाइ, एहन लीडर सभके फेर मे कहियो नहि पड़ब.........अहाँ असगरे नहि छी, करोड़ोक तादाद अछि अहाँक। अहाँ जखन ठाढ़ भए जाएब आओर एक कंठ भए हुंकार करबैक तऽ जालिम जमींदार सभ के कलेजा दहलै लगतैक। ओ छथिए कतेक, दालि मे नून के बराबर। ओ अपन बल नहि, सरकारी अफसरक बल पर जुलुम करैत छथि। अहाँ सिर्फ तीन काज करू—संगठित भए कऽ एक भए जाउ, प्रान जाय तऽ जाय मगर जमीन नहि छोड़, आओर अदालति—कचहरीक दर्द गिर्द कहियो नहि जाउ.........किसान सभा अहाँक मदैत करत, बाहरक किसान लीडर अहाँक बीच अबैत जाइत रहताह। किसान भाइ, आब अहाँ जागि गेल होएब। खान बहादुर होअए

चाहे महराज बहादुर कियो अहाँक हक नहि छीन पाओत। अहाँ अपन ताकत के चिन्हू, आब सभ मिलि कए इन्किलाब—"

जिन्दाबाद!—लोक सभ मिलि कऽ अवाज लगलकैक। सभ के मुँह पर तेज बरसमान छलैक, आँखि चमकि रहल छलैक। खासी देर तक बाजल छलाह, किसान सभ दम साधि कऽ सुनलन्हि।

खानबहादुरक मनेजर लोक सभ के बीच चारि छः बदमाश सभ के बैसा देने छलैक। शुरू-शुरू मे ओ सभ 'महत्मा गाँधी की जय,' 'भारत माता की जय' आओर 'स्वामी जी बैस जाउ' वगैरह किछु अवाज लगलकैक तऽ किसान सभ के बड़ तामस भेलन्हि, बाँहि पकड़ि-पकड़ि कऽ ओ सभ गुन्डा सभ के बैसा देलन्हि। लोक सभ के नराजी आओर कड़ा रुख देखि कऽ फेर हुनकर हिम्मते नहि भेलन्हि।

स्वामीजीक बाद शर्माजी उठलाह, गया वला। लम्बा कद, पिरसियाम सूरत। बेतरतीब केश। देह पर कमीज, कुर्ता या गंजी किछु नहि छलन्हि। अढ़ाई तीन गज कपड़ा, डाँड़ सँ लपटल गेल छलन्हि। ओ कहलखिन्ह—

रहिमन चाक कुम्हार के माँगे दिया न देय
छिल मे डंडा डालि के जो चाहे गढ़ि लेय

"किसान भाई, मंगला सँ किछु नहि भेटत। अपने ताकत सँ अहाँ अपन हक पाबि सकैत छी। अहाँक ताकत की अछि? एके अछि अहाँक ताकत, संगठन। घर मे कनैत-कनैत असगरे हाय हाय करैत करैत हजारो साल बीति गेल। सरकार के अहाँक रत्तियो भरि परवाह नहि छैक। ओ अहाँ सभ सँ नहि, चोर डाकू सभ सँ घबराइत अछि। हुनका पक्का मकान (जहल) मे हिफाजत सँ रखैत छैन्ह। खेनाई पीनाईक, पहिरब-ओढ़ब, दवाई दारूक हुनका सेहो सभ इन्तजाम सरकार करैत छैक। मगर गहुँम बासमती उपजा कऽ

दोसर सभ के लुटबऽ वाला अपने खुद मरैत छथि। सरकार के आहाँक कनिको फिक नहि छैक। ओ मानू खुद इशारा करैत छैक किसान सभ, चोरी कर आओर डाका दै वखने लीडर सुभर होयतौक"……

शर्माजी बुझबैत कहलखिन्ह—"जमीन्दार बड़ प्रपंची, बड़ जालिम होइत छैक। अव्वल (अव्वल) तऽ पहिने तोरा अन्दर अपने मे फूट करबाक कोशिश करैत होयतौक, नहि, तू सभ अपन जमीन पर डटल रहि गेलें तऽ ओ पैसा बला कें संग करतैक। अफसर सभ सँ मिलि कऽ ओ तोरा सभ कें नहकं नेअक कोशिश करतौक…सम्मन, नोटिस, वारंट सभाय सभ भऽ सकैत छैक आर खबरदार, अपना खेत सँ नहि हटब। भुलाया मे नहि पड़ब आओर कचहरी जा कऽ गलती नहि करब। पुलिस आओर हाकिम सभ सँ साफ कहि देबैक कि अही खेत सभ कें महल बना दियौक, हम पड़ल रहब, भागब नहि। ओहि महल मे तऽ जेबाक अछि तऽ सभके लऽ जयियौक…बाल बच्चा, जवान बूढ़, मर्द औरत, गाय-बरद, भेड़-बकरी, कुकुर-बिलाड़ि, चूल्हा-चक्की,…हमर सभ वस्तु सभे जायत। तखने हम महल मा सकैत छी नहि तऽ टस-सँ-मस नहि होयब…जे करबाक हो, करहि कर। आओर अगर पुलिस बला खामखा पकड़ह चाहए तऽ बूढ़, बच्चा मर्द औरत एक दोसर के बहिया जकाँ पकड़ि कऽ पड़ि जाय पड़त। सैंयो आदमी के लऽ जेबाक हेतु हजारो सिपाही आओर पचीसों लारी (बस, ट्रक) गाड़ी…फेर देखबैक के अहाँ सभ कें केना कतए लऽ जाइत अछि। आर आहाँ हमर ई बात मानि ली आओर डटल रहक निश्चय कऽ ली त फेर आहाँक खेत पर सँ आहाँ कें हटबए वाला ताकत अहि दुनियाँ मे नहि छैक। जमींदार, सरकार, पुलिस गुन्डा…सभ थाकि कऽ बैठ जायत।"

एकर बाद नारा लगलैक—कमाए बला खायत…एकरा चलते जे किछु

होइक। इन्किलाब…जिन्दाबाद। जमीन केकर…जोतए बोअए ओकर। अंग्रेजी राज्य…नाश हो। जमींदारी पर्था…नाश हो। किसान सभा जिन्दाबाद। लाल झंडा…जिन्दाबाद। इन्किलाब…जिन्दाबाद।

फेर बाँकी लीडर बजलाह। अन्त मे डाक्टर रहमान मधुपुरा जमींदार खानबहादुर लतुल्ला खाँ के अगाह करैत कहलखिन्ह कि ओ अकन जालिमामा चालि सँ बाज नहि अबोताह तऽ इलाकाक एक एक किसान आगू बढ़तैक आओर हुनकर होश ठीक कए देतैन्ह…दरोगा आओर एस० डी० ओ० सँ सेहो डाक्टर रहमान साहब कहलखिन्ह—एको बून्द खुनिक (खून) खसतैक तऽ ओकर जिम्मेवारी अहाँ पर होयत। किसान के धमकाबए सँ पहिने आहाँ खान बहादुरक लठैत सभ कें रोकिऔक जे खुलेआम गारि बकैत घूमैत अछि।

राधा बाबू रहमान साहब सँ पहिने जिला के अफसर सभ कें फटकारि चुकल छलखिन्ह। तीन घंटा तक सभा चलइत रहलैक। खतम होअए सँ पहिने एक नौजवान गीत गओलक—

> दुर्दिनमा केलक हरान रे, किकिरिया मारलक जान।
> करजा करिकैं खेती केलूं भरि गेलई सभ धान—रे किकि०
> बरद बेचि रजबा के देलूं, छोड़ए नहि बइमान
> जमींदार के जुलुम रोकऽ, चेतऽ भाई किसान—रे किकि०

गाँव के गरमा कऽ लीडर लोक अगिले दिन चलि गेलाह।

हमरो बस्तीक पन्द्रह-बीस किसान सभा देखऽ आयल छलाह। किसान सभाक गामी रामपुरक लोक सभ मे सेहो किछु आवए लगलैक। मुन्शीजीक बेटा थोड़-बहुत अंग्रेजी पढ़ि लिखि कऽ बेकार बैसल छलइक। ओहो लीडर रामक भाषण सुनि आयल छल। आओर राधा बाबू सँ किछु बात सेहो ओ कएने छल।

महपुराक किसान सभ भितरे-भितर निश्चय कएने छल जे अपना नाम सँ खेत लिखा लेने अछि ओ खेत सभ के आबाद करए तऽ करय दियौक, परंच फसल हमही काटब। परंच जमींदारक तरफ सँ कोनो किसानक खेत आबाद नहि कएल गेलैक। लोग बूझि गेलैक जे फसले पर धावा मारऽ चाहैत छथि।

हमरा बस्ती के मालिक के सेहो कान ठाढ़ भए गेलैन्ह। एक-दू-क एतहुँ हेर-फेर शुरू भेलैक। सर्वे के समय मालिक के परदादा आओर बड़ी बाबूक दादा किसान सभ के ओतेक हजारो बीघा जमीन के बकाश्त के तौर पर दर्ज करा देने छलखिन्ह। बुढ़ऽ बाबा किसान दसे पाँच छलाह जनिका काश्तकारी हक सर्वे मे कायम रहल छलैन्ह। आम किसानक लगान देल आयल छलखिन्ह परञ्च रसीद लेबक जरूरत ओ कहियो नै बुझलखिन्ह। बात उठैत छलैक त कहितथिन्ह—मालिक बेईमानी थोड़े करताह।

पाँच-एक सै बीघा जमीन छोट जात बला के संग छहनो छलैक जेकर दर मानहुंडा छलैक। फी बीघा धान दू मोन, रबी खरीफ एक मोन। रसीद एकरो नहि भेटैत छलइक। अलावा एकर किसान हजारो बीघा बँटाई सेहो जोतैत आयल छलाह।

मालिक सब सूद दर सूद मे बेचारा किसान सबहक खूब लूटैत छल छन्ह। अनाजाक ड्योढ़ा रुपैया जमराजक समान असूलैत छलखिन्ह। मगर आब किसान महपुराक दिश नजरि लगौने छल आओर मालिक सभ के नजरि सेहो उम्हरे छलन्हि।

अगिला अगहन मे फसलक जे छीना-झपटी भेलैक ओहिमे एक किसानक लाश खसल छलैक। बंड्डास जे मारने छलैक ओ खान-बहादुरक कोचवानहि छलैन्ह। पुलिस टुकुर-टुकुर ताकैत रहलकैक आओर हत्यारा लापता भए गेलैक। उल्टे दफा १४४ के तोड़क नाम पर दू-तीन दर्जन किसान सभ

के गिरफ्तारी भेलैक। हुनका सभ पर कए प्रकार के मुकदमा चलाओल गेलैन्ह। फसल परंच किसान क घर पहुँच गेल छलैक।

धान काटक दिन छलैक, अही सँ हम महोषि कए रहि गेलहुँ। नहि तऽ चारि छः दिन महपुरा रहि कऽ किसान के संग दितिऐक। आओर संयोग देखू भैया कि ओही माघ मे सुगनी के बच्ची पैदा भेलैक।

चमाइन आओर नाउन के इनाम-तिनाम देबए मे, छट्ठी आओर पड़ोसिन सभ के तेल सिंदूर देबए मे पन्द्रह-एक रुपैया लागल होएत। बेसी खर्च करक हमर ओकाति कहाँ छल?

बच्चीक जन्म लेला सँ माय कनिक उदास भय गेलैक परंच मनियार काका कहलखिन्ह—हमर बिरादरी बराहमन क, भूँइहार, रजपूतक नहि अछि कि लड़की क माँग मे सिंदूर पड़नाई मुश्किल भए जाएत। कथिक सोच, कथिक फिकिर? एक रेवनी गेल तऽ दोसर रेवनी आबि गेल!

ई बजैत काका आँगन अएलाह। सुगनी गोद मे बैसल छल चिलका के लेने। खखास सुनिते ओ घोघ के कनिक सरकाऽ लेलक। बुढ़ऽ बाबू आबि कए बजलाह—दुर्गा भवानीक दरसन करए अयलहुँ अछि।

माय ओसारा पर धान उसनैत छल। चट दऽ ओ सुगनीक नगीच उठि अएलैक आओर बच्ची के अपना हाथ मे लए कऽ मनियार काका के सामने कए देलकैन्ह, अपन मुंह फेरने रहल किएक तऽ बाबू हमर जनम मे मनियार काका सँ सालभरि छोट छलखिन्ह।

बच्ची क कपार पर अठन्नी साटि देलखिन्ह काका आओर कहलखिन्ह—चेहरा-मुहरा बिलकुल बालोक सन छैक।

माएक सामने ओकरा हम भरि आँखि कहियो नहि देखलिऐक। लाज लगैत छल। परंच असगर मे देरी तक ओकरा देखैत रहितिऐक। केहन

बढ़ियाँ लगैत छल। तखा गुलाबी अमलक समान लगैत छल, ओकरा हम अपना ठोढ़ सँ, नाक सँ, पपनी सँ कपार सँ हलुके दबाएल करैत छलिऐक—ओहि सँ भारी संतोष होइत छल। छाती मे वा कि कपार मे कहियो कानन धसि कऽ लगैने छी अहाँ ? हँ, तऽ बस बुझिऔक ओही प्रकारक तरावट—ओहि सँ किछ बेसीए कहियौक बच्ची के छूबए सँ भेटैत छैक। संतान कोनो मामूली चीज नहि होइत छैक भैया !

किओ बता देने होएतैक, एक बेर पैंबारा गामए वला पैंवरिया आएल, दू आदमी छल। हुनकर ढोलक सुराहीनुमा छलन्हि। पहर भरि ओ सोहर गबैत रहलाह। डेढ़ रुपैया आओर दू सेर धान लेलन्हि तखने उठलाह, बड़ लगार होइत छथि ई हो सब। बाबू लोकक हवेली तऽ नहि मानी बतेक समान उठा लए जाइ छथि।

हम किछ नहि बुझि सकलहुँ। पुछलिऐक—की छोक रे ?

अरे बुझुन भऽ गेल ! कहबो तऽ करै किछु ! हम खउँका कऽ बजलहुँ तऽ ओ फुसा-फुसा कऽ कान मे कहलक—जमंगला (जयमंगला) के लहेरिया-गंजवला दरजीबा उराकऽ लऽ गेलै।

आश्चर्य सँ हम ओकर मुँह देखऽ लगलिऐक। इएह चारि पाँच दिन पहिने हम ओकरा पोखरि पर ठाढ़ देखने रहिऐक आखिर ई भेलै कोना ?

चल, रस्ता मे कहबौक—रामखेलावन कहलक।

कमीज पहीरी कऽ ओहरे देह पर धऽ लेलहुँ आओर घर सँ बाहर निकललहुँ—हाथ मे लाठी छल। पता चलल जे पहिले लहेरियागंज, फेर मधुबनी दरभंगा आओर जयनगर (जनकपुर) तक जाय पड़त·········

रास्ता मे रामखेलावन सँ जे किछु पता चलल, से बता दिअ ? त लिअ, सुनू—

हमर बड़का मालिक बाबू गौरीशंकर चौधरी के बेटी, बेटा इएह जयमंगला। बूढ़ा मालिक के कतेको वर्ष पहिने स्वर्गवास भऽ गेलैन। जेठका बेटा वकील आओर छोटका डिप्टी मजिस्ट्रेट। बेटी जहिआ सँ मतोमात भेलैन तहिआ सँ बापे लग मे रहऽ लगलैक। श्याम सूरति, बड़की आँखि, गोल-मटोल मुँह। देखऽ मे बहुते सुन्दर छलैक। अवस्था छल हेतैक चौब्बीस-पच्चीस के।

लहेरियागंजक एकटा नवजवान दर्जी हवेलीक सबटा कपड़ा सीबैत छलैक। खूब सूरत मुसलमान। ओकरा मामा के मधुबनी मे सिलाइक दोकान छलैक। बूढ़ा मालिक ओकरहि सँ अपन कपड़ा सियबैत छलाह। ओकरा सँ सीख कऽ ओकर भागिन जखन तैआर भेलै तऽ नाप लेबाक हेतु जनानी कपड़ाक हवेलीक अन्दर आबऽ जाए लगलैक। इम्हर इ दू तीन वर्ष सँ मशीन लऽ कऽ ओ लहेरियागंज मे रहऽ लागल। बीच मे दू तीन बेर एना भेलैक जे कपड़ा कतेको तरहक आओर बहुत सियाबक छलैक, किछु कपड़ा किमतीओ छलैक। नवका दर्जी बड़ बढ़ियाँ सियाइ करै छलै, बच्चे रहै तहिए सँ मलिकाइन ओकरा जनैत छलखिन। त, बैसक मे बलगे एकटा कोठली तऽ अन्दरे सियाइ करबाक हुकुम भेटलै। चारि चारि, छः छः दिन दू-तीन बेर ओ मालिकक ओहिठाम रहि चुकल छैक। मशीन अपन आओर जाइ। दर्जी के मजूरी भेटै छलै भोजनो भेटैत छलइक आओर नास्ता पानी सेहो... एहि बीच दुनूक नजरि चारि भऽ गेलैक, दुनू दिल अपन रास्ता सेहो निकालि लेलक। बाहर ककरो बुझल नहि छलैक आओर भीतर लोहिया मे गूर पकैत छल। एहिबेर दर्जी आएल तऽ साल रफू करय बहिना आइल, मशीन अनबाक तखन काजे कोन रहै ? दू तीन दिन रहलाक पश्चात् ओ राति के गेब भऽ गेल, जयमंगला सेहो गेब रहै ! खानदानक नाक कटि गेलै भैया ! हम लाठी लऽ कऽ लैला मजनू के ताकक हेतु नीकललहुँ। लहेरियागंज मे जे

कोठली जहाँ नेने रहए किराया पर तकरा ओ दू मास पहिनहि छोड़ि देने रहैक। मधुबनी मे ओकरा मामा सँ पुछलिऐक तऽ बुढ़वा अपना छोट, छोट दाढ़ी पर हाथ फेरऽ लागल, फेर कान छूलक आओर बाजल......दी... वा ! ती .....वा। ई की सुनवऽ आएल अछि हमरा ? वा ई लाही।

किछु रुकि कऽ ओ एकटा जूता निकालि लेलक आओर ओकरा घुमावऽ लागल एहन सन् कम जेना ककरो पीटऽ चला होइ। फेर क्रोध मे आबि कऽ बाजल—सारक खाल खींची लेबैन, आवारा कहीं के। दू तीन मास सँ गेल अछि, मशीन बेचि कऽ खाऽ गेल।

हम ओतऽ सँ हटि गेलहुँ। मिलैतनमे घूमैत-घूमैत टीसन पर अएलहुँ। सेर तीन-एक चूड़ा देने छलखिन मलिकाइन, रामखेलावन, ओकरा खोलिकऽ खाय लागल आओर हमहूँ। बड़ीजोर सँ भूख लागल रहै। थोड़ेक-थोड़ेक खाय लेलाक पश्चात् नून हरियर मिरचाइ मोन परल। खाय कऽ टीसनक बाहर सँ पानि पीबि अएलहुँ।

थोड़ेक कालक पश्चात् गाड़ी एलइक। हमसब एखन तक टिकट नहि कटएने छलहुँ। एकाएक हमरा सूझल बेकारे हम सब भटकब। जयमंगला अहिना नहि भीबलल रहै, पाँच हजारक गहना सेहो अपना संगे बड़ाक लऽ गेल रहै। ककरा मुँह मे धान या गहुँमक दाइल हैतैक ओहि उरति ओराक पैरि भला के पाओत ? छोरि दैह।

समूचा दिन आओर समूचा राति हम मधुबनी मे काटि देलहुँ, भोर गाम गेलहुँ। रामखेलावन जाकए बड़की मालिकाइन के ताकऽ हेरक नतीजा कहि देलकनि।

झूठ किएक कहू, हमरा कोनो खास तकलीफ नहि रहै। देह मे लागलि छल, कसिकऽ काज करै छलहुँ। पन्द्रह कट्ठा के लगभग जमीन हाथ पर

दाबि गेल छल, पाँच कट्ठा अपन अलगे छल। संतोषी भाय छल, फरमाइस करावऽ वाली घरवाली भेटल छल, हिलति डोलति, थलति-थूकति सोनाक मूर्ति सन बच्ची भेटल छल ! आओर की चाही ? पांच-एक टा बासक जरूरत छल भइया। कहिओ-कहिओ टाका कैंचाक तंगी जरूरी बुझाइत छल। पाँच दस महीना मे कतहु सँ आबि जाइत तइओ बालचन्द राउत चटेसर भऽगइतथि। झूठ किएक कहू भइआ ? समांग नीके रहय काम-काज भेटइत रहय, परिवार छोट रहै, नीयत खराब नहि होइ। मोन मे दस-बीसक लेल जगह होइ·· आओर की चाहीऐक ? तऽ पाइक तंगी कोना भेटा सकइत छलइ भइया ?

एक तऽ हम ठीक केलहुं एहि बेर कुसियारक खेती अवश्य करब। दोसर बात जे सोचि सोचि कए पक्का कएलहुं से छलैक जे बड़का पत्ता वला तमाकूक खेती करक विषय। हमरा घर सं दक्षिण पचकौड़ी बाबूक थोड़ेक जमीन परइत छलइक, ओकरा ओ बे—आबाद छोड़ि देने छलखीन। खाइत—पिबइत आदमी छलाह, बेटा राज मे तहसीलदार छलखीन। सतरंज खेलऽबाक भारी सौखीन छलाह। एहि मे पंडितजी हुनकर जोड़ीदार छलखिन, दएह पंडित बौअन पाठक ?

पूछलाक पश्चात् पचकौड़ी बाबू कहलन्हि तम्बाकू नहि, आलू उपजा सकइत छऽ तऽ ठीक ; नहि त नहि।

अच्छा सरकार—! हम वापस अएलहुं। कतेक दिन तक सोचइत छलहुं जे जमीन लीअए या नहि। घरक बिल्कुल लगमे छल। हमरालेल इयह भारी गुण छल। भांग आओर चकोड़क गाछ छलइक ओहि मे, दू एक-भार धतूर सेहो छलइक हैत। खैर, भइया तम्बाकू वला बात तऽ रहि गेल। कुसिआरक खेती करबाक जरूरी छल ! वामे ठाकुर वला खेत सेहो भीकरे भेंग।

पछिला साल एक बरद हाथ लागल छल।

फूलन मिसिरक घर वाली के एकटा पुरान गाय छलैन्ह। सात बेर तऽ ओकरा हमरे सोंझा मे बच्चा भेल रहैक आओर मरल रहैक। आब ओकर चिन्ह बस यैह बरद मिसिरानिक घर मे छलन्हि। दुमहरक कतेको बरख तऽ बेचारी अस्वस्थ छल। बरदक सेवा ओकरा सँ पार नहि लगैत छलैक। भेलै ई जे चारि दाँतक जवान बरद बेहद कमजोर पड़ि गेल छलैक। चरायबला तऽ कियो रहैक नहि, दिन-राति बेचारा खुट्टा मे बान्हल रहैत छल! मसोमात एक बेर दिन मे ओकरा खोलैत छलैक, सेहो एहि लेल जे लगक पोखरि मे सँ पानि पीआबए दू मुट्ठी पुआर भरि आओर दू मुट्ठी साँफ कऽ ओकरा आगू धऽ देल जाइत छलैक। ई पुआर खाइत-खाइत बेचाराक मुँह भोथ भऽ जाइत छलैक......आँखि मे कीची, कनपट्टी लग नीचाक दिश नोइक चिन्ह। हाड़ पाँजर पर रोआदार चमड़ी मढ़ि कऽ कोनो हमशायल देवता मानू एहि जीव के दुःखित घरकबेडौल आओर बदसुरत शकल देने होइ। खुट्टाक चारु कात थोड़ेक जगह छलैक जे मूत गोबर सँ हरदम गील रहैत छलैक। दूरे सँ सड़ल सुखायल, गील पुआरक अजीब गंध तोरा नाक के छेदैत अंदर चलि जइतऽ। तीन दिश फूस के भीतीदार टाट छलैक। अपन थुथुन सँ ओ बेचारा नहि जानि कियेक टाट के सामने छेद कए देने रहैक। ठीक ओतबे जहेक ओकर माथ निकलक हेतु काफी छलैक। गलाक रस्सी भरिसक गाय के आओर आगु जाय सँ रोकैत छलैक। से भैया मिसरानि के दुःखित बरद टाटक ओहि छेद सँ माथ निकालि आबए जाय बला दिश एक टक तकैत रहैत छल—लाचारी तथा शून्य निगाह सँ! ओहन नजारा हम कहियो नहि देखने छलहुँ......महिनो भरि बेचाराक विषय मे सोचैत रहैत छलहुँ। बीच-बिच मे जाकऽ देखि अबैत छलिएक—ओ जबरदस्ती जीब रहल छल। देहाती

दुनियाँक लाचारीक एक डेराउन साइन बोर्ड जकाँ हमरा लगैत छल। आखिर एक दिन एना बुझाएल जे आब जँ ओहि बरद सँ आँखि चारि होयत तऽ माथ फाटि जायत......पथिया भरि घास लऽकऽ साँफ खन हम बरद लग पहुँचलहुँ, घास सामने दऽ कऽ ओकरा हम कहलिऐक नहि बेटा हम तोरा एहि तरहे नहि मरऽ देबौक। बस, बहुत भऽ चुकल! आई तँ हम तोहर आओर की हमर......

ओ धिरे-धिरे घास खाय लागल, बिनमाय बछोओने खाइत छल। हम मिसरानि के नगीच पहुँचलहुँ। ओ आंगन मे सिलवाटी ओछा कए गेरूआक सहारा सँ सुतल छलीह। भादवक गर्मी छल। बाँसक खपची सँ बनल बिअनि हाथ मे छलैक। आहट पाबि कए उठि बैसलीह आओर आवाज चिन्ह कऽ बजलीह—की छौ रे बलचनमा?

किछु नहि मालिकिन, घास अनने छलिएक थोड़े—हम कहलिएक।

दऽ देलहिक बरद के आगाँ कऽ?

हँ मलिकिनी, दऽ देलिऐक।

अच्छा......

अच्छा नहि मलिकिनी—निसास लऽ कऽ हम बजलहुँ—ई बरद आई सँ हमर भेल......

मसोमात हँसऽ लगलीह। हिनका लग मे जे बलचनमा दिन भरिक थाकल अछि, हँसी-ठठ्ाक गप दऽ कऽ मोन बहलाबए आएल अछि। किछु नहि फुरलेक तऽ बरदेक बात उठा लेलक। बिअनि के मुँह सँ पीठ नोचैत बजलीह दूर छुरहा! मासो देढ़ मास की ई बरद आब काटि सकतै? मरतैक तऽ अगिला जन्म मे तोरे हर बहतौक! घास खुअने छहीक, मोन नहि रखतौक? ही-ही-ही-ही-ही, हू हू हू हू हू हू होइ......

ठहक्का मारि कए हसलीह मिसराइनि हम मुदा घुम-सुम छलहुँ। ओही की हँसैक बात छलैक भइया ?

हँसि-हँसि कऽ जखन हल्लुक भेलीह तऽ पुछलीह—के लऽ जायत अहि बरद के ? चारि रुपयाक खाल तऽ निकलत, हम बुधुआ (बूढ़ चमार) के बजबहि वाली छी। ओ आबिकए खोलि कऽ लऽ जाए एकरा, जाबे तक ओकर ताबे तक सबूर रखए पाछु......

नहि मलिकीनी, हम एकरा एखने खोलि कऽ लऽ जाइत छी—एतेक कहि कऽ हम उठलहुँ तऽ ओ मुँह लटकाबऽ लगलीह—किछु भए गेलैक एकरा तऽ नाहक मे तोरा गऊवधक परासचित नहि लागि जाउक। बाबू, हमरा तऽ बड़ डर लगैत अछि।

डर कथिक मलिकिनी ? हम कहलिएक—भगवान करताह तऽ चारि महीना मे एकर ढाँचा बदलि जयतैक। अहाँ किछु फिकिर नहि करब... ओ हमरा धोखा दइए, नहि सकैत अछि।

अहि पर ओ कहलीह—से तूँ जान ! किछु काल कऽ कहलकैक—काल्हि सबेरे लऽ जाइहे, एखन राति कऽ ठीक नहि होयतैक।

हम कहलिऐक—अच्छा मलिकिनी। ओहि राति कऽ खुशीक मारे हमरा नीद नहि आयल छल। एहन लगैत छल कि बहुत बड़का काज कए अएलहुँ अछि......

सबेरे अगिला दिन बरद के अपना ओहिठाम लए आयल छलहुँ। महीना भरिक सेवा बेचाराक सूरत...शकल बदलि गेलैक ! दू महीनाक बाद तऽ ओ मैदान मे दौड़ऽ लागल। भादो, आसीन, कातिक आर अगहन......चारिमासक बाद ओकर एकदमे काया पलटि गेलैक। ब्राह्मणी के कतेको आदमी दुसेलकैक वापस कए लीअ अपन बरद, की ओ बलचनमाक बापक छैक ? चालीस-

पचास रुपया सँ कम नहि लेब, हँ.........

मिसराइनि ककरो बातक ध्यान नहि देलखिन्ह, हमरा सँ एक दिन कहलन्हि—बालो, आब ई काज लेबए लायक भऽ गेलह। छकौरी हमरा खेत के तोरा जिम्मा कए देने छह, ई बरदो तूँही राखऽ बाबू—हमरा ओहिठाम जाएत तऽ फेर एकर उएह दशा होएतैक।

ई मलोमान जानकीएक दया छलैक जे तोहर दोस्त बालचन्द राउत बरद बला कहाए लगलाह।

एकटा बरद रामखेलावन के सेहो छलैक। हम ओकरे सँ अपन भाँज मिलौलहु। हर ओकरे छलैक। एक दिन ओ जोतैक छल, दोसर दिन हम। हमरा संग अपन जमीन तऽ मामूली छल। अक्सर हमर हर-बरद दोसरक जमीन मे काज अबैत छलैक, एकरा लेल चारि आना रोज बतौर भाड़ाक भेटैत छल।

कुसियारक खेतीक लेल हमरा चुन्नीक समान शाथी भेटि गेल। चुन्नी सन-बर्ष चारि-छः कट्ठा कुसियार जरूर रोपैत छल। किछु मिल मे पठबैत रैयाम आओर किछुक गुड़ बनाबैत छल। डेढ़ दू सौ नगद भेटिए जाइत छलैक।

रामो ठाकुर वाला जमीन डुड़िया पोखरिक करीब पड़ैत छलैक। आठ दस बेर जोति कऽ हम खेत तैयार केलहुँ। दू बेर पोखरि सँ पानि लाबए पड़ल करीन लगा कऽ। सूखला पर फेर जोतलिएक। ढेप सभ के भुरभुरा देलिएक। तखन जाए कऽ सोझ रेखा मे खंडी-खंडी कए कऽ कुसियार रोपैत गेलहुँ। हम छलहुँ, रामखेलावन आओर चुन्नी छलैक।

माइट देबक बाद, डाड़िक बीच-बीच थोड़ेक-थोड़ेक पानि आओर देल गेलैक।

महीना भरिक बाद पैंच निकललैक तऽ खुशीक मारें हम नाचि गेलहुँ। घर आबि कऽ बहुत देरी तक बच्ची सं खेलाइत रहलहुँ। कुसियारक खेती ई जे हम शुरू केलहुँ, अहि सँ मुनमी सेहो फूलि नहि समाएल। ओ ठेठ गृहस्थक बेटी छल। ओकर नैहर हमरा घरक जकाँ निपट्ट उजड्ड नहि छलैक। भूलो सं अहिया कहियो हम बाहर जाकऽ नोकरी करक बात उठऽबैत छलिएक तऽ ओकर मोंह मुर्झेलीक समान बनि जाइत छलैक। आओर जखन कहियो हमरा मुँह सं खेती-बाड़ी मे कोनो नव बात निकलै तऽ मुनमीक मुँह कमलफूलक समान खिल उठैत छलैक।

ढौलाख अबैत-अबैत कुसियारक गाछ डाँर तक लहराए लगलैक। अहि बर्ष समठाम कुसियारक खेती बढ़ियाँ छलैक, कोनो रोग नहि, ने कोनो कीड़ा।

मुन्शीजीक बेटा मधुबनी-दरभंगा आइते रहैत छलैक। एहिबेर साबन मे ओ एक नव समाचार लओलक कि अगिला साल कांग्रेसी लोक मिनिस्टर बनि जएताह, अंग्रेजक अमलदारी उठि जएतैक आओर जमींदारी सेहो नहि रहि पओतैक............

व्रजबिहारी छलैक ओकर नाम, परन्तु दुलार सं लोक बच्चू करैत छलैक। जाहि दिन ओ दरभंगा सँ आएल छल ओहि सांझकऽ हम ओकरा सं भेंट केलहुँ आओर पुछलिएक—बच्चू, मलिस्टर, कलक्टर तऽ सभ के बूझऽ मे अबैत छइक, ई मलिस्टर की होइत छैक?

मलिस्टर नहि, मिनिस्टर! ओ हँसि कऽ बाजल कानून कायदा के अमल मे लाबएक लेल मामूली हाकिम सभ के देखभालक लेल आओर मुलुकऽक सरकार के चलाबए के लेल मेम्बर लोक अपनो मे सँ ओहि दस पाँच आदमी सभ मे मुखिया चुनैत छथिन्ह सेह मिनिस्टर कहबैत छथि। सभ मुलुक भोट दऽ

कऽ लाखो करोड़ो मे सं सैकड़ो कें मेम्बर चुनैत छैक। सैयो मेम्बर अपना मे सं दस-बीस पर सभ काज चलाबक जिम्मेदारी सौंप दैत छथिन्ह फेर इनके राइरक मुताबिक लोक सभ किछु करैत छथि।

आब हमरा समझि मे आबि गेल कि मिनिस्टरक की मतलब होइत छैक स्वामी जी कहने छलाह कि जमींदार लोक कांग्रेसी बनि कऽ किसान सभ के ठकैत फिरैत छथिन्ह। हमर माथा ठनकऽ लागल की सेह जखन मिनिस्टर भए जयताह तऽ गरीब सभ के भलाई रैतैक अहि सँ वा बड़का बड़का बाबू लोक सभ के?

बच्चू सं इहो पता लागल की फूल बाबू सेहो मेम्बरीक लेल ठाढ़ होएताह, कांग्रेसी अही इलाकाक लोक सभ सं भोट दिया कए फूल बाबू कें असेम्बलीक मेम्बर बनाबए चाहैत छन्हि।

हम सोचए लगलहुँ, भए सकैत अछि कि मेम्बर बनि चुकला पर हमर छोटकी मलिकाइन के सेह भतीजा बाबू मिनिस्टर सेहो भऽ जाइथ; तखन तऽ भेल। भुइडोलक बाद रिलिफ फण्डक रुपया लए कऽ ई बाबू साहेब हमरा बस्ती मे सेहन खेरात बाँटल गेल छल तेसर साल, से आइयों के बताए चुकल छी भैया। एहन मेम्बर सं तऽ हमरा ईलाकाक बंटबारा भऽ जाएत, तऽ पानि मे आगि लागि जायत......

गाँव मे रोज दू एक टा अखबार आबऽ लागल। पटना सं सात-सात दिन पर निकलऽबला अखबार 'क्रांति' किसान आओर मजदूरक विषय मे खुलि कऽ लिखैछलै। ओकरा पाँती-पाँती सं असन्तोषक चीनगारी नीकलइ छलइ। दू रुपैया पठाक ओ अखबार पहिले बच्चूए मंगवाएब शुरू कएलक। ओ कहलकैक जे मधुपुराक किसानक विषय मे क्रांति मे कइयो बेरि छपि गेल छैक। कांग्रेसी अखबार या सेठ जमींदारक अखबार एहन खबरि कें बिल-

रिओ कऽ नहि छपबबैत छथि।

'क्रांति' मंगल कऽ नीकलैत छैक। हमरा बस्ती मे बिरहस्पति आओर सांनक दू समयऽ रहै डाकप्युन कँ अएबाक। बच्चू कैं ई अखबार बिरहस्पतिक भेटि जाइछलै। ओइदिन साँझकऽ ओकरा बैठक मे मेला जुटैत छलैक। लालटेन जरा कऽ बच्चू हमरा सभकैं क्रान्ति के विषय मे सुनबैत छलाह। सुनऽ वलामे पाँच छ गोटे तऽ छला तारानन्द बाबू, बंमोल झा, रमखेलौना, तीरी अमात, कपिलेसर मड़ड़ आओर हम। कहिओ कहिओ चुन्नीओ शामिल भऽ जाइत छल। तारानन्द मामूली गृहस्थ छलाह, कर्ज-वर्ज नहि छलै। बंमोश झा कैं छलनि पहलमानिक शौख··मानस बढ़ियां करै छलाह, खाएकऽ गोस आओर माछक। घरक गरीब छलाह, दरभंगा—मुजफ्फरपुर रहि रहि कैं बीच-बीच मे होटलक नोकरी आओर जमींदारक ओहिठाम कुस्तीक दाबपेंच देखबैत छलाह। तीरी, कपिलेसर आओर रामखेलान हमरहिजँका आधा खेतमजुर आओर आधा किसान छल। बच्चूक बाप मुन्शी बिपिन बिहारी लालदास मधुबनी इस्टेट मे एकाउन्टैंट छलाह। बढ़ियाँ आमदनी छलैन। तऽ हमर ई मंडली मन लगाकऽ बच्चूक मुँह सँ एखबारक एक-एक पाँति सुनल करै छल.........।

किछु दिनक बाद बच्चू कतहु मरिलक रहमान साहेब क पास सँ, किसान सभाक रसीद वहाऽ अनलक.इकनी दय अधकटी लैह, बस आइ सँ हौं किसानक मेम्बर बनि गेलह।

अपना टोल मुहल्ला मे हम दस आदमी मेम्बर बनेलिऐक। मलोमात कुन्दी सुनलेन्हि अपने आबि कऽ इकनी दऽ गेलीह आओर.रसीद लऽ गेलीह। कहलनि बाली देवताक प्रसादक हेतु ई चुटकी भरि चिक्कस हमरो गरीबीनी के।

समूचा गाँव मे पचास-एक मेम्बर छलाह होएत। मजूराक किसान कैं लड़ाईक इएह अवसर छलै। मालिक आओर पैद-पैद किसान कैं छोड़ि कऽ बाँकी सभक दिलचस्पी पड़ोसीक रलाकाक आन्दोलनक तरफ रहैक। मनियार काका सँ शेखअब्दुल तक, तारानन्द बाबू सँ लऽ कऽ तीरी अमातक आओर कुदर मिसीरक मलोमात सँ मैमीन मलोमात हमीदा तक···सब मेम्बरी रसीद लेलनि आओर एक-एक आना देलखिन।

महिला मालिक तथा बड़ी बाबू अपना खिलाफत आन्दोलन कैं औना-मासी धंग बुझलाह। छलैहो बात ठीके। हीनका सभक सूद दर सूद पर जनता तबाह भऽ गेल छल। एक टाका वर्ष भरि मे डेढ़-पौने दूइ टाका आओर एक मन धान मास-दूइ मास मे डेढ़ मन भऽ जाइत छलन्हि।

छोटका जमींदार तँ आओर कसाइ होइत छैक, एक तऽ करैलि फेर ओहि पर नीम चढ़ल। किछु नहि पूछू भैया! मझिला मालिक भारी कंजूस छलाह। तौं देखतहुन तऽ कहि उठितह हायराम, भैस चोरी पीयर-चौंस...इएह डेढ़लाख टाकाक आदमी छथि?

हँ भैया, इएह डेढ़ लाखहुक मालिक छथि बाबू जसोधर चौधरी··· आओर बिछिओ बाबू कैं जगानी मीरानी लगभग पच्चास हजार टाकाक छुरा होएतैक। मझिला मालिक कैं अपन खेत छलैन चारि सै बीघा।

मालिकक चाऽ पट्टीक डेढ़ हजार बिघा काश्त जमीन बेनीपट्टीक नजदीक छलदन, जकरा औतैक किसान सुशोभित कएने छल, आओर हिनका सभकैं मालगुजारी भेटैत छलैन। एहऽ अपना ओहि ठाम डेढ़ सैए बीघा जमीन रैयत जोतैत छल, मनहुंडा। दोसर दिस जाल फरेब सँ छोट किसानक मरौसी जमीनक अधिक हिस्सा मझिला मालिक पहिनहि हरपि नेने रहथिन। बिल्लू बाबू कैं जमीनक सेसरे चौथाइ हिस्सा बेइमानीक प्रसाद छलइन। हूनकर परदादा भारी पंडीत छलखिन, पच्छिम सँ खूब कमा कऽ अनने छलखिन। दादाक

पाँच हजारक सम्पति पोताक अनल मे डाबि कऽ एक लाखक भऽ गेलइन। दस एक हजारक वस्तु सासुरहु मे हाथ लागल छलैन बिल्ली बाबू कें। स्त्री एहन भागमंती जे बाप-बाप कें एके सन्तान।

ओ एहि विषय कें सोचिओ नहि सकै छथाह जे कि मालिकक मुकाबला केल जाय सकैछ। महपुराक किसानक लड़ाइ सँ हमर आँखि खुजि गेल हम इ तऽ कऽ लेलहुँ जे बित्तो भरि जमीन आब मालिक कें हरपऽनहि देबै।

गाँवक पश्चिम, एकदम करीब, खेतक एक टा बढ़ियाँ टुकड़ा छलइक नब्बे बीघा के। एहि जमीन मे सभ किछु उपजैत छलइक। धननी, मरुआ, सरिसोओ, कुसिआरी, तिसीओ, राहड़िओ, अब गहूम सेहो, ऊखीद सेहो, कुर्थी सेहो। इ जमीन तीस-एक मुसलमान ग्वार आओर मलाह समक अधिकार मे रहैक परंच चलाकी सँ मालिकक परदादा एकरा अपना नामे चढ़वा लेलखिन।

ओहि तीनो किसानक नाम एक दिन एकाएक अदालतक सम्मन अएलइक तऽ गाँव भरि मे बिजली दौड़ि गेलइ। कागज देखला सँ पता चललइक जे चारि वर्ष पहिले बैसी मालगुजारीक नालीस कऽ देलकइक मालिक।

परेशान करबाक ई एक टा बढ़िया बहाना छलैक, किसान मालगुजारी सालक साल देत आयल रहैक।

हमर विचार भेल जे सम्मन लऽ लौ परञ्च कचहरी कियो नहि जाइ।

दोसर दिन बरहम स्थान मे लोक जमा भेल। हम महपुरा जाय डाक्टर रहमान कें बजा अनलियनि'''पचास-एक किसान मिलि कऽ सपथ खयलहुँ जमीन नहि छोड़ब, चाहे किछु भऽ जाय। बच्चू कें सिकरेटरी बनाएल गेलैक हम बनलहुँ स्वयंसेवकक मुखिया—फौज सँ पहिनहि सरदारे चुनल गेलाह।

मालिक सब कें रुपयाक बल रहैक, दरोगा, एस० डी० ओ० आओर कलक्टरक बल छलइन। ओ सुरुहे मे एहन चालि चललाह जाहि सँ किसान

हिम्मत हारि कऽ बैसि जाथि।

फसिल तैयार भेलइक तऽ ओहि पर दफा १४४ लागि गेलइक। दू लोरी मिलेटरी आएल। जमीन नजदीक वला बगीचा पर तम्बू तानि गेलइक। खेत पर पहड़ा पड़इ।

एहन मौका पर मर्सोमात हमोदा बड़ बहादुरी देखलकैक। जकर ई जमीन रहैक ओहि किसानक ओहि ठाम सँ दस-पन्द्रह टा जनाना कें बजा कऽ लऽ गेलैक आओर चारि कट्ठा तैयार फसिल धान काटि लेलक। जारक' राति शयकड़ जरि रहल छल। ड्यूटी वला दूनू सिपाही गाछ पर औंठगल सूतल रहय।

महपुराक किसान खुलेआम दिन दहारे फसिल काटय चाहलकैक, जाहिमे एक आदमीक खून सेहो भऽ गेलैक। अपना ओहि ठाम हम सभ बदलि गेलहुँ। जमींदार ओर सरकारी अफसर दुर्योधन ठहरलाह हुनका युधिष्ठिर, परास्त नहि कय सकै छलखिन भैया। पिटाइ पर पिटाइ खायब आओर भेड़ बकरी जँका जेल चलि जाएब बहादुरी नहि। एहन सीधाई सँ पूजा होऽ तँ जमीन खूड्योक नोक भरि भेटबाक नहि रहै।

दरोगा पड़ोलक मुसहर के फसल काटयक हेतु तैयार कएलक त हम, बच्चू तीरी बगैरह हाथ जोरि कऽ समझौलिअइ। बड़ सोझ सोध आओर ईमानदार होइत छथि। हमर गप्प मानि गेलाह—बजलाह हमरा मुखिया सँ कहिह मालिक कहलकैक दूई बीघा हम तोरा, आओर बाँकी आदमी के घर पिछू दस कट्ठा क खेत लिखि देत छिऐक, कतेक घर छौं तौ सब इ''''''मुखिया साफ कहलकनि नहि सरकार दोसरक पेट काटि कऽ देब तऽ नहि दिय। हं, अपना खेत मे तं देयए चाहैत छी तऽ ठीक छैक'''ले हम तोहर फसिल कीना कऽ कटबह।

मुसहरक मुँह सँ सहानुभूतिक बात सुनि कऽ हमर सीना आरो चौड़ा

भऽ गेल मैया।

अफसर सभ सोच विचार मे परि गेलाह। किसान कें एकटा डोरबाक चालि सेहो चलल गेल रहैक। मालिक दिस सँ आओर बिज्जी बाबू सन पैघ विद्वान दिस सँ सेहो किसान सभ पर दबाव डालल गेल रहैक। मजिस्टर आओर एस० डी० ओ तऽ बीच बीच मे अबितहि छलाह। मालिक अपना मुन्शी वला हिसाब भीरैनहि छलाह। मिलेटरी वाला फसिल कटया कऽ कैम्पक लग ढेरी कैल गेलइक।

माय कें आओर सुगनी कें मलिकाइन अलग-अलग सँ बजा कऽ हुथल-खिन आओर कहलखिन यदि बालचन अपना हरकत कें नहि छोड़त तऽ घर फुंकवा देबैक······

एकदिन नोड़ायल आँखि सँ माय आबिकऽ बैसल। हम ओसारी मे हुक्का पीबि रहल छलहुं। पूछलिऐक—की छैक माय?

ओ कहलक—मलिकाइन तोरा पर बड़ तमसायल छथुन कहलखुन जे जं संघ मंच सँ नहि रहत तऽ घर फुकवा देबैक।

घर फूकवा देती—हम कड़कि कऽ बजलहुँ—हुनकर बापक घर छैन्ह? जो बैस···मेल की कर छलैहैं।

कोरा मे गरमा कऽ मुंगरिया सूति रहल छल, मूंगिया हमर सुन्नी। अठारह मासक बेटी। हमर कड़कल आवाज सुनितहि ओ जागि गेल आओर कानऽ लागल। हुक्काक खोली हम टिका देलिऐक। माय अन्दर जादिस चलि गेल तऽ बाजल—पागल कहीं कें। घर ककरो फूकि देब सौक बात छैक? हमरे की जमीदारक बाप चलत जे ओ सभक घर फूकि देथिन।

मुंगिया कें लऽ जा कऽ हम सुगनी लग दऽ अयलिऐक। लाठी उठएलहुँ आओर चलि परलहुँ आसरमक दिस। सुगनी चलैत काल मना कयलक तऽ हम

कहलिऐक दत् एतेक डेराई किएक छैं।

आसरम बरहम स्थानक लग सिसवोनी मे छलइ। शेख अब्दुलक अपन दादा आओर ससुर शेख मकदमक विरासत मे ई जमीन भेटल छलइ पन्द्रह कट्ठा। आसरमक हेतु समूचा सीसवोनी शेख दऽ देलकैक। बदनू आओर ...अमोल झा बाँस देलखिन्ह। चूली बाप के हमसाएक बर सँ दुइ बोझ नार देलकैक। हम लाथेक सेर भरि जोर।

हम ओतऽ पारी पारी सँ सूतैत छलहुं। ओहि राति हमर पारी, बदनू ...अमोल झा आओर शेख डेढ़ पहर राति तक रहलाह—बीच मे अलाव छलैक। एकान्त मे चारू दीस बैसकऽ रोज राति तक विचार कयल जाइ छलइक। ओहि राति एकटा नव खबरि सुनाएल—रैयाम कोठीक चीनी मिलक मैनेजर पर अपन पीसा (छोटका मालिक) कें कहला पर फूल बाबू दबाब देलखिन अछि जे कि रामपुरक फला-फला किसानक कुसियार नहि लेब···

हमरा सभक हेतु भारी मुसीबत आबि गेल छल। हमरे गाम बीसोक कुसियारक फसल तैयार रहै—बड़ निमन फसिल। वर्ष भरि सँ एहि फसिल पर आश लगौने छलहुं। एक-एक किसान अपन मोनो भरि करीब पसीना सुखेने होयत तहन आकऽ कहीं ई रस भरि घर तैयार भेल। ककरो सय, ककरो दूइ सय, ककरो पाँचसय तक भेटऽ वाला छलैक, एही पैसाक बल पर जालिम जमीन्दार कें सेहो हम सभ एखने सँ अँगठा देखबैत छलिऐक।

धानक सैकड़ो मन फसिल मिलेटरीक कब्जा मे छले आओर कुसिआरक एहि खेत पर एहि तरहक संकट मड़रा रहल छलैक···ओ सभ चलि गेल छलाह। हमरा बड़ी काल तक निन्न नहि भेल। दुई स्वयंसेवक—कहिओ-कहिओ तीन, चारि, पाँच तक—ओतऽ दिन राति लोक रहै छलैक परंच हमरा सेहो एक-कें पार सँ बेराबेरीक ओतऽ सूतब जरूरी रहैक। ई दुनू स्वयंसेवक भाइ

देकुलि सँ पठाएल गेल छलाह। ओत् जमींदारक खिलाफ किसानक मोर्चा बड़ मजबूत रहै। एतहु जोरदार अंदोलन होयबा हेतु छलैक, एहि हेतु किसान सभाक जिलाक-कौन्सिल शुरुहे मे दुइ नवजवान कैं हमरा बीच पठौलक। सीधा-सामीग्री, साग, सब्जी, नून, तेल, लकड़ी, फड़ा, घी, हाड़ी घड़ा सभ इंतजाम आसरम मे हमरा सभदिस सँ छलै। ओ भोर साँझ हमरा नवजवानक आगू-आगू मारा लगबैत फिरैत छलाह—गाँवके अन्दरो आओर ककरा बाछी जमीन क चौगिर्द मे हो। कहिओ-कहिओ पास परोसक बस्ती मे जाक ओलोक एखुका हाल कहि अबितथिन, आ सभे हुट्ठीया अनाज सेहो असुलैत अबितथि। इप्ता मे दुइए बेर परोसक गाँव मे नीकलितथि। तैओ खूब प्रचार भऽ गेल छलैन।

भोलटियर भाइ सूति रहल छलाह आओर हम चिन्ता सँ सूति नहि सकै छलहुँ। पोआरक मेजावट पर परल जहर रही। महपूराक एक किसान जान सँ मरल छल, एतहु ककरो लास खसि सकै छलैक—हम सोचैत छलहुँ—ककरो किएक कतेको के लास खसि सकैत छइक। आहि मे हमहुँ भऽ सकै छी! हैजा-प्लेग पकरैत छैक तऽ ओहि मे आदमी तरपि तरपि कऽ मरि जाइत अछि, विषधर साँप कटै छइक; नाबी हमेशाक हेतु डूबि जाइत छइक, चौमासा मे कोसी महरानी कि कजला मे राताराती कतेको के अपना पेट मे समा लइत छथिन, बिजलका लै के छइ आओर बजर (वज्र) खसैत एइक तऽ ओहि मे ककरो आनो चलि जाइ छइक''बचीक गोल-हँसीक चेहरा नजरि पर नाचय लागल''सुगनीक खिलखिलाहट कान मे गूंजि उठल--मायक हाथ तरहत्थी गाल पर फिरैति बुझाएल! सोचैत-सोचैत माथा झन-झन करय लागल तऽ हम उठि गेलहुँ। गंजीक उपरका जेबी मे बीरी परल छल ओकरा निकाललहुँ आओर बाहर पलानी मे आबि कऽ बैसलहुँ आँगुर सँ उठा कऽ देखलहुँ तऽ अन्दर

आगि छलइ।

दुइ सुट्टी पुआर ओछाओन मे सँ खींच अनलहुँ घूर सँ चीनगारी निकालि फुकि-फुकि कऽ पुआर धधकयलहुँ आओर बीरी सुलगेलहुँ।

आब ऊपर आकाश दिस मुँह कएलहुँ. एकटा बड़का बुढ़ शीशीक माथ झुकि आयल रहैक ठीक हमरे माथ पर। इजोरियाक तेरस रातिक दुपहर छलइक। गाँव-घर, खेत बाग, बड़, पीपड़, तार सब झक-झक! सभ धोल सभ उज्जर, सभ साफ,! थक-थका कऽ बेसुध पड़ल धरती पर चन्द्रमा भरि-भरि सूप दूध उझिलइत छलथिन। बड़ी बाबूक बैसक बला नबका खपरैल मकान हाले मे चूनेटल गेल छलइ, ओ तऽ सभ सँ अधिक उज्जर लगइत छलइक। ऊपर मामूली खपरा एक पाँति छलैक तऽ दोसर उज्जर खपराक। ओह मकानक चार एक तऽ घाने नजरि खीचैत छलैक परंच एखन बड़ा गजब करै छलैक। पास-परोस मे चारि छ कोस तक ओहन खूबसूरत मकान आओर कोनो नहि छलैक। अपन मड़ैया भला कोना देखाइत।...मकिता मालिक आओर बड़ी बाबूक मकान संग पोआरक तीन-चारिटा टाल रहैक तार जकाँ उँचाइक गोल धर बूकू। ई हूँ हुनका जमीन जायदादक सभ सँ पैघ गबाह इएह छलो कीने?

जखन-जखन कूकरक आबाज सँ रातिक सन्नाटा टकरा जाइ तऽ हमर मन अपना खोल मे लौट अबितै। बुढ़ शीशोक झुकल माथक छाँह सँ दिल के एक प्रकारक तसल्ली भेटैत छल, लगै छल जे अपने कोनो पुरखा आशीर्वाद दऽ रहल होऽ—एना माथ पर झुकि कऽ। आहि नव रास्ता पर हम पैर बढ़े रहल छी ओहि पर चलि जायक हेतु एतेक साफ इशारा पाबि कऽ हमर रीढ़ एकदम सोझ भऽ गेल। सीना तनि गेल छल बाँहि फैलाक किछु काल तक अपन छाहीं देखैत छलहुँ.........

आब दिमाग हल्लुक भऽ गेल छल पैर अपने आप आश्रमक मड़ैया दिस बढ़ि गेल। अन्दर आबि कऽ गोसारक ओहि पँचायती ओसारा पर छुनि रहलहुं, टटोलिकऽ गरांस ठिकिया देलहुं ओ अपना जगह पर ओंहिना पड़ल छली·········

आश्रम मे नुकाकऽ हम सभ एकटा गरांस रखै छलहुं। मालिक कें खुनी नीगाह सँ हम नवाकिफ नहि छलहुं। बच्चू, बम्भोल, रामखेलावन, अब्दुल आओर हम—हमरा पांचो गोटे कें पुलिसो फंसबऽ चाहैत छल, मालिको हमरा अपंग बनएबाक मनसूबा बन्हैत छलाह। चुनाव मे कांग्रेसक भारी जीत भऽ गेल छलैक। अंग्रेज हाकिमक बदला आब स्वदेशी मिनिस्टरक हुकुमत कायम होमऽ जाय रहल छलैक। सन् सैंतीस (१९३७ ई०) कें शुरुह होइते होइत कांग्रेसी जमींदारक भाई बन्धु आओर सार ससुर मूंछ पर ताव देबऽ लागल छलैक।

कांग्रेसी जमींदारी कें फायदा करतेक—स्वाभाविक ई बात हमरा रग-रग मे समा गेल। हम पुलिसो कें चिन्हैत छलिऐक आओर जमींदार लठैतो कें—जमींदारक सह पाबि कऽ पुलिसवला हमरा तरह-तरहक मुकदमा मे फंसबय चाहैत छलाह। मालिक कनी नजरि मुंशीक हीसाबो नजरि एलैह। जमानाक रफ्तार कें परखबाक अक्किल हुनका मे कहां सँ अबितनि! हुनकर खयाल छलैन जे बस रामपुर में पांचे आदमी कें काबू मे रखबाक काज छैक—नहि आबऽ काबू मे तऽ मारपीट, जेल, खून·········जैनाहोए रास्ताक कांटो हटाबी। राति दिन आठो पहर अपना दिस, अपना जनताक निगरानी दिस हमरा दिस सँ चोकसी रखैत छलैक। ई गरांस ओहि चोकसीक एकटा सबूत अछि।

दूनू स्वयंसेवक बेखबरि सूतल पड़ल रहथि, एकक नाक बजैत छलैन फों

फर्र·····फर्र···फों···फों···फ······

बाबा बांहिक सिरमा बनाऽक हमहूं आंखि बन्द कएने छलहुं। नींद आबि रहल छल कि चोरबत्तीक तेज रोशनी आंखि पर पड़ल हम धरफड़ा कैं उठि बैसलहुं। एक हाथ सँ गरांस सम्हारैत कहकि कऽ बजलहुं—कौन तोहर बाप—आवाज आएल एहन—मारि देऽ सार कें, लगा!

स्वयं सेवक के झक-झोरबाक समय नहि रहल। हम गरांस लऽ कऽ लपकि लहुं बाहर। दस हाथक दूरी पर दूटा कारी मजीठ आदमी देखय पड़लक दूनू तैयार ठाढ़ छल। "चोर-चोर" चोऽऽऽऽऽऽऽऽऽरऽरऽ ओ-ओ-ओ········· और "दौर ऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ हम एक दिस दउरलहुं तऽ दोसर ··· ऊपर मोंछ फसबऽ बला जाल फेकलक। हम ओहिना हल्ला करैत रहलहुं। हाथ पैर एकदम जाल मे फसि गेल छल गरांस बेकार छल। एकराक बाद ··· ऊपर चारिटा लाठीक भरपूर बार पड़ल। गरांस सं जाल के ··· काटि अबर देलिऐक परंच ओहि सं हमरा कोनो मददि भेटल होए ···

एतबहि मे भारिक दोसर दौरि शुरुह भऽ गेलैक। जो ··· नहि रहै ओकरा पाछू आओरो कतेको आदमी रहै जे पलानी क अन्दर घूमि ··· हमरका एक मुँह सँ निकललै—बलचनमा, माफी मांगि ··· ओहि ठाम।

दोसर आवाज अएलैक—नै नै एना नहि कर! चलिक माफी मांगब तऽ ससूर मंजूर कऽ लेत आओर पाछू निपत्ता भऽ जाएत सार!

हम कहलिऐक—हम तोहर की बिगारलियह अछि? तूहूं मेहनति मजूरी कऽ कऽ पेट पालै छह आओर हमहूं। जाल हटाबह आओर बान्हि कऽ लऽ चलऽ जहां लऽ जयबाक होऽ······

ओकरा भरिसक बाजब मना कएल गेल रहैक। डीलडौल, काफी मोटाएल

ज... [illegible] ... , ओहि मे सँ एक गोटेक हाथ अपना लग पाबि क [illegible] ओकरा कब्जा मे दाँत काटि लेलिऐक। बाप-बाप करति ओ ओतहि खसि परल तैओ ओकर कब्जा हम नहि छोरलिऐक।

जीवन अनमोल चीज छैक भैया। परंच एहन मौका पर अपन कीमति की होइ छैक। कहिओक जे ई।

ओहि काल मृत्यु के सोझा मे देखिकऽ पिरनी जँका हमर दिमाग नाचि रहल छल बेटी, घरवाली माय, कुसियार क फसिल पलानी मे सुतल भोलंटियर जिनका मुंह मे भरिसक कपड़ा ठूसि देल गेल रहैक आओर कमाएवला खाएत, एकर चलति जे कि किछु होई.........धरती ककर? जे जोतए, बाघव करए तकर। किसानक आजादी आकाश सँ उतरि कऽ नहि अएतैक। ओ परगट हएत नीचा—जोतल धरतीक भूरभूरा ढेप के फोरिकऽ......बुढ़ा शीतो एखनो तक हमर माथ चूमैत छल.........।

की एतबहि मे आश्रमक पछुआर सँ एकटा आदमी आएल ओकरा हाथ मे नेपाली खुखरी (तलबारि) छलैक।

हम बान्हल छलहुँ। डाल सँ सभ अंग ओझराएल छल। ई दाँत सँ एक गोटेक कब्जा चपने रहिऐक।

पहिलका हमरा माथ पर जोर सँ लाठी मारलक एक नहि, दोसर बेर... हम बेहोश भऽ क जमीन पर लुढ़कि गेलहुँ!